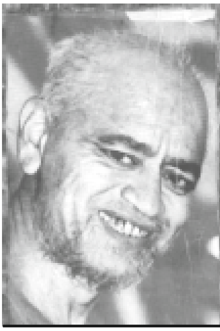

संस्कार सागर

आचार्य श्री विद्यासागर जी विशेषांक

• वर्ष : 25 • अंक : 303 • जुलाई 2024

• वीर नि.संवत 2550-51 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

- श्रद्धांजली संदेश 06
- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज को श्रद्धांजली व्यक्त करने वाले विशिष्टजन 25
- प्रवज्या प्रमुखः आचार्य श्री विद्यासागर 34
- ऐसा हटता है राग 54
- तुम्हारे रहते क्या नहीं होगा 57
- दिगम्बर सरोवर के राजहंस 58
- आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः 63
- श्रेष्ठ संघ नायक आचार्य श्री विद्यासागरजी 65
- दुःख का कारण परिग्रह 67
- वेग, उद्वेग, आवेग से बचे 68
- धरती के देवता आचार्य विद्यासागर 81
- युग दृष्टा, अपरोजय साधक आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज भारतीय संस्कृति संवाहक 83
- कहाँ जाना है, कहाँ जा रहे हो 93

बाल कहानी

- लापरवाही 96

कविता

- विरल-संत 51
- लावनी 64
- मानव शुभम जन्म 70
- गुरुदेव मेरे सिर पर 79
- विद्यासागर गुरुवर महान 89
- तार दे गुरु तार दे 94

कहानी

- आशीर्वाद 90

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 52 • संस्कार प्रवाह : 53 • संयम स्वास्थ्य योग : 62
चलो देखें यात्रा : 70 • आगम दर्शन :71 • माथा पच्ची : 72 • पुराण प्रेरणा : 73
• कैरियर गाइड : 74 • दुनिया भर की बातें : 75
• इसे भी जानियेः 79 •दिशा बोध : 80 • हमारे गौरव : 94 • हास्य तरंग-पाककला : 95
• बाल संस्कार डेस्क : 96 • संस्कार गीत व बाल कविता : 97

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 98

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के
- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

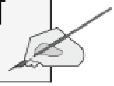

• सम्पादक महोदय, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास पर उनके पी.ए. विभवकुमार ने राज्यसभा की महिला सांसद स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट तथा वदसलूकी की जिसकी खबर सभी अखबारों और टी.वी चैनलों पर सुर्खियों में रही।

अरविंद केजरीवाल ने इस विषय चुप्पी साध रखी थी । किन्तु जब विभवकुमार को दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तार किया तो अरविंद केजरीवाल मुखर हुये और भाजपा के कार्यालय के सामने धरना देने पहुँच गये परंतु आश्चर्य तो तब हुआ कि जब निर्भया कांड के बाद महिला सुरक्षा मामले में मुखर होने वाले केजरीवाल के आवास पर महिला के साथ हुई प्रताड़ना के मामले में केजरीवाल मौन हो गये। इस रहस्य पर से परदा उठना अभी शेष है। बड़े राजनेताओं की बातों का पता लगाना कठिन ही होता है।

स्मिता जैन, ललितपुर

• सम्पादक महोदय, विगत माह के संस्कार सागर में कहानी शीला का स्वप्न पढ़ी। कहानी मर्म स्पर्शी और सत्य घटना के आधार पर लिखी गई है परंतु कहानी में कल्पना का अंश भी बहुत कुछ नजर आ रहा है यह कहानी किसी सिद्ध हस्त कथाकार के द्वारा लिखी नजर आ रही है। कहानी की कथा वस्तु में कई मोड़ हैं। और मिर्च मिसाले डालकर कहानी को रोचक बनाया गया। तम्बाकू के दुर्गुण बताकर कहानी के माध्यम से व्यसन मुक्ति का संदेश भी दिया गया है। महिला मजदूर के साथ होने वाले दुर्व्यवहार की झलक भी इस कहानी में मिल जाती है। महिला मजदूर के बेटे ने अपनी माँ को मजदूरी के पेशे से बाहर निकालने के लिये जी-तोड़ मेहनत की और वह सफल भी हुआ । श्रम करने वाले जरुर सफल होते हैं। बस चाहिये लक्ष्य, निष्ठा और लगन।

संजय जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, विशाल अग्रवाल के नाबालिग पुत्र ने 2 करोड़ की गाड़ी से 2 इंजिनियर युवा युवती की जान विगत 19 मई को ली थी। उस नाबालिग किशोर की जमानत मात्र 15 घंटे में हो गई थी। उससे अदालत ने सड़क दुर्घटना पर 300 शब्दों में निबंध लिखने को कहा। अदालत के इस फैसले से पूरा मीडिया हरकत में आया और लगा कि कुछ दाल में काला अवश्य है। जन आक्रोश भी बढ़ा परिणाम स्वरूप नाबालिग किशोर की जमानत रद्द हुई। और किशोर को रिमांड पर भेजा। इससे यह सिद्ध हुआ कि पैसे की दम पर हिट एन्ड रन के मामले में अदालतें अपनी संवेदनशीलता को भी बेच सकती हैं । धन्यवाद मीडिया को अवश्य देना होगा जिसने अपनी सशक्त पहल से अपराधियों को दोष मुक्त नहीं होने दिया। शराब परोसने वालों को भी सलाखों के पीछे खड़ा करवा दिया । नाबालिग होने का फायदा अपराधियों को न मिले इस बात का ध्यान अदालतों और जजों को अवश्य देना चाहिये।

आयुषी जैन, अहमदाबाद

• सम्पादक महोदय, रिसोर्ट में विवाह एक और सामाजिक बीमारी शीर्षक से जून माह के संस्कार सागर में लेख पढ़ा ज्वलंत समस्या पर सामायिक लेख बहुत पसंद आया। विवाह एक ऐसी संस्था है जिसमें एक विकृति दूर होती है तो दूसरी विकृति तुरंत जन्म ले लेती है विवाह में अपव्यय प्रदर्शन ने इस संस्था को इस तरह से जकड़ लिया है कि अपव्यय और झूठे प्रदर्शन से विवाह को उभार पाना ही मुश्किल लगता है आये दिन विवाह कार्यक्रम में झगड़े या दुर्घटनायें तो आम बात हो गई है विवाह में अंधविश्वासी रस्मों के कारण भी आदर्श समाज के निर्माण में बाधायें खड़ी की जा रहीं हैं । धर्म और समाज को यदि विवाह से जोड़कर रखते हुये झूठी प्रतिष्ठा का प्रश्न पीछे रख दिया जाये तो विवाह कार्यक्रम की 50% विकृतियों का अंत स्वतः हो जायेगा।

प्रियंका जैन, मुंबई

श्रद्धांजली

प्रधान मंत्री
Prime Minister

नई दिल्ली
फाल्गुन 05, शक संवत् 1945
24 फरवरी, 2024

आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज की का ब्रह्मलीन होना देश के लिये एक अपूरणीय क्षति है। इस असीम दुःख की घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके सभी अनुयायियों और शुभचिंतकों के साथ हैं।

भारत की पावन भूमि में ऐसी अनेक महान विभूतियों ने जन्म लिया, जिनका जीवन ज्ञान एवं अध्यात्म के प्रचार-प्रसार और समाज सुधार के लिये समर्पित रहा। इस महान संत परंपरा को आगे ले जाने में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का प्रमुख स्थान रहा। उनके जीवन का हर अध्याय, अद्भुत ज्ञान, असीम करुणा और मानवता के उत्थान के लिये अटूट प्रतिबद्धता से सुशोभित है।

सेवा, समर्पण और तपस्या से परिपूर्ण आचार्य जी का जीवन भगवान महावीर के आदर्शों और जैन धर्म की मूल भावना का प्रतीक रहा। वे जीवनपर्यंत गरीबी उन्मूलन के साथ-साथ समाज में स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ावा देने में जुटे रहे। वह जैन समुदाय के साथ ही अन्य विभिन्न समुदायों के भी बड़े प्रेरणास्रोत रहे। विभिन्न पंथों, परंपराओं और क्षेत्रों के लोगों को उनका सान्निध्य मिला, विशेष रूप से युवाओं में आध्यात्मिक जागृति के लिये उन्होंने अथक प्रयास किये।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे राष्ट्र की सेवा में निरंतर उनका आशीर्वाद मिलता रहा। पिछले वर्ष छत्तीसगढ़ के चंद्रगिरी जैन मंदिर में उनसे हुई भेंट में उन्होंने देश की प्रगति और विश्व मंच पर भारत को मिल रहे सम्मान को लेकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी। उनसे मेरी यह अंतिम मुलाकात मुझे सदैव याद रहेगी। आचार्य जी का जाना मेरे लिये एक मार्गदर्शक को खोने जैसा है।

मुझे विश्वास है कि आचार्य श्री विद्यासागर जी, देशवासियों के हृदय और मन मस्तिष्क में सदैव जीवित रहेंगे और उनके संदेश लोगों के जीवन को आलोकित करते रहेंगे। आचार्य जी के मूल्यों को आत्मसात करते हुए और उनके बताये रास्ते पर चलकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते देशवासियों की उन्हें यह एक विनम्र श्रद्धांजलि होगी।

आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज की के अनुयायियों और शुभचिंतकों को इस असीमित दुःख को सहन करने का धैर्य और साहस मिले, मैं यह प्रार्थना करता हूं।

ॐ शान्ति!

(नरेन्द्र मोदी)

आयरलैंड के प्रधानमंत्री का संदेश

Oifig an Tanaiste
Office of the Tanaiste

3rd April 2024

The demise of Indian national saint Acharya Shri Vidyasagar Maharaj is an ireeparable loss for the country and humanity. The world mourns with you and celebrates the extraordinary lift of this great saint of India. There are few people who have had such a profount impact on the future direction of humanity.

Acharya Shri gave priority only to the welfare of humanity till his last breath. My thoughts and prayers are with the country. I pay my respect to Acharya Vidyasagar Maharaj who attained Samadhi through 'sallekhna'.

I appreciate Sanskar Sagar to come out with a special issue in the honour of the great saint and I pay my heartfelt tribute to Acharya Shri Vidya Sagar Maharaj.

Best wishes,

Leo varadkar TD
Taoiseach

Tithe an Rialtais, Sraid Mhuirgean Uachtarach, Baile Atha Cliath2, DO2 R583
Government Buildings, Merrion Street Upper, Dublin2, DO2 R583
T+ 353 1 619 4000 E: tanaiste@tanaiste,gov.ie
www.gov.ie

नितिन गडकरी
NITIN GADKARI

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग
भारत सरकार

Minister
Road Transport and Highways
Government of India

सन्देश

संत आचार्य विद्यासागर जी महाराज का ज्ञान और दर्शन व्यक्ति को चरित्र निर्माण की राह दिखाता है। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी जीवन दर्शन से साक्षात्कार कराना। उन्होंने सत्यनिष्ठा के साथ पूरे जीवनकाल में ये सीख दी कि विचारों शब्दों और कर्मों की पवित्रता कितनी बड़ी होती है। उन्होंने हमेशा जीवन के सरल होने पर जोर दिया। आचार्य जी जैसे व्यक्तित्वों के कारण ही पूरी दुनिया में सामाजिक सौहार्द का वातावरण निर्मित हो रहा है। समाज और राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण सदैव प्रेरणादायी रहेगा।

आपका

(नितिन गडकरी)

Room No. 501, Transport Bhawan, 1, Sansad Marg New Delhi- 110 001, Tel.: 011-23710121, 23711252 (O) 23719023 (F),
E-mail: nitin.gadkari@nic.in: website-www.north.nic.in

जी. किशन रेड्डी
उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास,
संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

G.Kishan Reddy
Minister of Development of
North Eastern Region,
Culture and Tourism
Government of India

शोक संदेश

राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की समाधि होना, देश और समाज के लिये अपूरणीय क्षति है। जिसकी पूर्ति संभव नहीं है। आचार्य श्री ने अपनी अंतिम साँस तक सिर्फ मानवता के कल्याण को प्राथमिकता दी। मानवता के सच्चे उपासक आचार्य जी सृष्टि के हित और हर व्यक्ति के कल्याण के अपने संकल्प के प्रति निःस्वार्थ भाव से संकल्पित रहे। योगी, चिंतक, दार्शनिक और समाजसेवी के रूप में उनकी सभी भूमिकायें अद्वितीय रही। वज्र के समान कठोर साधक आचार्य श्री ने शिक्षा स्वास्थ्य व गरीबों के कल्याण के कार्यों से यह दिखाया कि कैसे मानवता की सेवा और सांस्कृतिक जागरण के कार्य एक साथ किये जा सकते हैं। उनके मार्गदर्शन में देश भर में खुली गौशालायें, हॉस्पिटल, शिक्षण संस्थायें लंबे समय तक मानवता की सेवा में समर्पित रहेंगी और उनकी स्मृतियां सदैव हमें उनकी याद दिलाती रहेंगी।

मैं संस्कार सागर विशेषांक से पूज्य आचार्य श्री के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

(जी.किशन रेड्डी)

Vigyan Bhavan Annexe, Maulana Azad Road, New Delhi-110011
Tel.: 011-23022400, 23022401, Fax: 011-23062754

कलराज मिश्र
राज्यपाल, राजस्थान

सत्यमेव जयते

Kalraj Mishra
Governer, Rajasthan

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि संस्कार सागर मासिक पत्रिका का जुलाई 2024 का अंक राष्ट्र संत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

भारत -भूमि- महात्माओं के आलोक और उनके मार्गदर्शन, शिक्षाओं से ही सदा संपन्न होती रही है। राष्ट्र संत आचार्य विद्यासागर महाराज का संपूर्ण जीवन शिक्षा के संस्कारों से जीवन को गढ़ने वाला रहा है। मैं यह मानता हूं उनकी विभिन्न विषयों की मर्मज्ञता और दुर्लभ ग्रंथों के अनुवाद, व्याख्या का कार्य भावी पीढ़ी को प्रेरणा देने वाला है। भारतीय संस्कृति और संस्कारों के आलोक में उनके बताए आदर्श मार्ग पर चलकर ही हम जीवन को धन्य कर सकते हैं ।

आपकी पत्रिका का यह विशेषांक आचार्य श्री के जीवन और कार्य से प्रेरणा प्रदान करने वाला होगा ऐसा विश्वास है।

मेरी विशेषांक के लिये शुभकामनाएं।

(कलराज मिश्र)

राज भवन, सिविल लाइन्स जयपुर- 302008
Raj Bhawan, Civil Lines, Jaipur 302008
दूरभाष: 0140-2228710-19, 2228611-12, 2228722

Banwari Lal Poruhit

Governor of Punjab
and
Administrator
Union Territory, Chandigarh

सत्यमेव जयते

Raj Bhavan
Chandigarh

श्रद्धांजलि संदेश

राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की समाधि होना, देश और समाज के लिये अपूरणीय क्षति है। आचार्य श्री ने अपनी अंतिम साँस तक सिर्फ मानवता के कल्याण को प्राथमिकता दी। मानवता के सच्चे उपासक आचार्य जी सृष्टि के हित और हर व्यक्ति के कल्याण के अपने संकल्प के प्रति निःस्वार्थ भाव से संकल्पित रहे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आचार्य श्री की प्रेरणा से देशभर में खुली गौशालाएं, हॉस्पिटल, शिक्षण संस्थाएं लंबे समय तक मानवता की सेवा में समर्पित रहेंगी और उनकी स्मृतियां सदैव दिलाती रहेंगी। मैं संस्कार सागर विशेषांक के माध्यम से आचार्य श्री के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

बनवारी लाल पुरोहित

(बनवारी लाल पुरोहित)

Phone No.: 0172-2740608, 2740609, 2740610, Fax No,: 0172-2741058, E-mail : admr-chd@nic.in

शिव प्रताप शुक्ल
राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश
राजभवन, शिमला

सत्यमेव जयते

Shiv Pratap Shukla
Governor
Himachal Pradesh
0177-29624152
262440
governorsecy-hp@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि मासिक पत्रिका संस्कार सागर द्वारा राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी पर विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

आचार्य विद्यासागर महाराज एक महान संत और समाज सुधारक थे, जो अपनी आसाधारण विद्वत्ता, गहन आध्यात्मिक अंतः दृष्टि, तपस्या और अनुशासित जीवन के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के लिये पहचाने जाते थे। आचार्य महाराज जी के अनगिनत भक्त हैं , जो उनकी शिक्षाओं, विचारों और कृतित्त्व को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। समाज को उनके द्वारा दिया गया अमूल्य योगदान हमेशा याद रहेगा। विशेष तौर पर आध्यात्मिक जागृति के उनके प्रयासों , गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य देखभाल शिक्षा और अन्य कार्यों के लिये उन्हें हमेशा याद रखा जाएगा।

मैं संस्कार सागर पत्रिका विशेषांक के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनायें देता हूं।

(शिव प्रताप शुक्ल)

गुलाब चन्द कटारिया
राज्यपाल, असम

राज भवन, गुवाहाटी
पिन-781 001

सत्यमेव जयते

29 फरवरी, 2024

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका संस्कार सागर के जुलाई 2024 का अंक राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

जैन धर्म के महान गुरु मुनि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एक विश्व प्रसिद्ध संत थे। करूणा सेवा व तपस्या परिपूर्ण उनका जीवन भगवान महावीर के आदर्शों का प्रतीक रहा है। उन्होंने सत्यनिष्ठा के साथ अपनी पूरी आयु तक यह सीख दी कि विचारों, शब्दों और कर्मों की पवित्रता कितनी बड़ी होती है। आचार्य श्री ने लोगों को दिशा दिखाने के साथ-साथ समाज को भी बेहतर बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने वर्तमान के साथ ही भविष्य के लिये भी एक नई राह दिखाई है।

आचार्य श्री प्रमुख गुरु के साथ-साथ एक उच्च कोटि के लेखक, चिंतक व दार्शनिक थे। वे संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, मराठी और कन्नड़ में पारंगत थे। उन्होंने हिन्दी और संस्कृत में कई ग्रंथ लिखे हैं। उनमें निरंजन शतक, भावना शतक, परीषह जय शतक, सुनीति शतक और श्रमण शतक प्रमुख हैं। आचार्य श्री ने काव्य मूकमाटी की भी रचना की है, जिसे कई संस्थानों में स्नातकोत्तर के हिन्दी पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है।

आचार्य श्री हम सबके हृदय और मन-मस्तिष्क में सदैव जीवंत रहेंगे। उनके संदेशों को जन-जन तक पहुंचाना ही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मुझे विश्वास है कि संस्कार सागर के विशेषांक में आचार्य श्री के महान व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचारों को भलीभांति रेखांकित किया जायेगा और यह अंक पाठकों के लिये एवं संग्रहणीय सिद्ध होगा।

मैं आचार्य श्री को पुनः अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये पाक्षिक पत्रिका संस्कार सागर के राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(गुलाब चन्द कटारिया)

फोनः (0361) 2540500 (ऑफिस): फैक्सः (0361) 2731832, ई-मेल rajbhavan-assam@gov.in

फागू चौहान
PHAGU CHAUHAN

सत्यमेव जयते
राज्यपाल, मेघालय
GOVERNOR OF MEGHALAYA

राजभवन
शिलांग – 793001
RAJ BHAVAN
Shillong-793001

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई हे कि संस्कार सागर पत्रिका अपना जुलाई 2024 का अंक राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने जा रहा है जो हमारे समाज को सुसंस्कृत और चेतना सम्पन्न बनाने में अपनी महती भूमिका निभायेगी।

जैन समुदाय के रत्न कहे जाने वाले आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का जन्म 10 अक्टूबर 1946 को शरद पूर्णिमा के दिन कर्नाटक के सदलगा गाँव में हुआ था। आचार्य विद्यासागर जैन धर्म के प्रथम ऐसे संत थे जिन्हें उनके गुरु द्वारा समाधि मरण से पूर्व ही आचार्य पद सौंप दिया गया था। वह संस्कृत एवं प्राकृत तथा कई आधुनिक भाषाओं , हिंदी, मराठी और कन्नड भाषाओं के विशेषज्ञ थे। उन्होंने हिंदी और संस्कृत में कई पुस्तकें भी लिखी, जिनमें से मूकमाटी महाकाव्य काफी लोकप्रिय रहा तथा उनकी सिंह नाम की कविता को कई संस्थानों ने अपने पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिया है।

देश के कई शोधकर्ताओं ने स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट डिग्री के लिये उनके कार्यों का अध्ययन किया, ऐसे मूर्धन्य विद्वान आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये संस्कार सागर के सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ।

मैं राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज विशेषांक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

(फागू चौहान)

थावरचंद गेहलोत
THAAWARCHAND GEHLOT
Governor of Karnataka

सत्यमेव जयते

No. GS 105 MSG 2024

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि संस्कार सागर मासिक पत्रिका का जुलाई-2024 का अंक राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज मानवता के सच्चे उपासक थे तथा आचार्य जी सृष्टि के हित और मानवता के प्रति निःस्वार्थ भाव से संकल्पित रहे हैं। योगी, चिंतक, दार्शनिक और समाजसेवी के रूप में उनकी भूमिकाएं अद्वितीय रही हैं।

मैं आचार्य श्री के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा इस सन्दर्भ में प्रकाशित स्मारिका की सफलता की मंगल काना करता हूँ।

साभार

आपका

2.5.24

(थावरचंद गेहलोत)

Raj Bhavan, Bengaluru - 560 001 (Karnataka) Ph. 080-2254102-108

रमेश बैस

सत्यमेव जयते

राज्यपाल, महाराष्ट्र

राज भवन
मलबार हिल
मुंबई 400 035

7 मार्च 2024

राष्ट्रसंत आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन ज्ञान, तप और आत्म-कल्याण के लिये समर्पित था। संस्कृत और प्राकृत भाषाओं के प्रकांड विद्वान विद्यासागर जी महाराज ने जीवन भर उपदेशों , लेखों और कविताओं के माध्यम से जनता को प्रबुद्ध किया और उन्हें आत्म-सुधार का मार्ग दिखाया। अपनी अनवरत यात्रा के माध्यम से उन्होंने लाखों लोगों का जीवन उन्नत किया। उनके विचार शाश्वत हैं और हमेशा लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिये मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका संस्कार सागर राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई।

मैं राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की पावन स्मृति को श्रद्धासुमन अर्पण करता हूँ तथा विशेषांक के सफलता की कामना करता हूँ।

(रमेश बैस)

मंगुभाई पटेल
MANGUBHAI PATEL

सत्यमेव जयते

राज्यपाल, मध्यप्रदेश
GOVERNOR OF MADHYA PRADESH

राज भवन
भोपाल-462050
RAJ BHAVAN
BHOPAL-462052

क्रमांक 108/राजभवन/2024
भोपाल, दिनांक 19 मार्च 2024

संदेश

हर्ष का विषय है कि अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका संस्कार सागर द्वारा आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। महान संत के जीवन पर आधारित प्रकाशन सराहनीय पहल है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र की साकार त्रिवेणी थे। करूणा, सेवा और तपस्या से परिपूर्ण मुनि श्री का जीवन कठोर तप दृढ इच्छा शक्ति और अनुशासन का श्रेष्ठ उदाहरण है। पीड़ित मानवता की सेवा, गौ सेवा और जन सरोकारों के उनके कार्य सेवाभाव के उच्च प्रतिमान है। भावी पीढ़ी को मुनि श्री के आशीर्वचन उनके जीवन के उच्च आदर्शों और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों की सीख को आत्मसात करना चाहिये। पत्रिका का यह परम दायित्व है कि आधुनिक युग के महान संत आचार्य श्री के कृतित्त्व और व्यक्तित्व को जन-जन तक पहुँचाने में प्रभावी और सार्थक भूमिका निभाए।

आशा है कि पत्रिका आचार्य विद्यासागर जी महाराज के राष्ट्र निर्माण के संकल्प, नागरिक कर्त्तव्यों की सीख परोपकार और सेवा के विचारों को संपूर्ण विश्व में पहुँचाने में सफल होगी।

मंगुभाई पटेल

(मंगुभाई पटेल)

दूरभाषः 0755-2858828, 2859830 फैक्सः 0755-2858832, ई-मेल mprajbhavan@mp.gov.in

राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर
Rajendra Vishwanath Arlekar

सत्यमेव जयते
राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

राज भवन
पटना- 800022
RAJ BHAVAN
PATNA-800022

28 मार्च 2024

संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि संस्कार सागर अन्तर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका का 03 जुलाई 2024 का अंक राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज विशेषांक के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है।

दिगंबर जैन आचार्य विद्यासागर जी महाराज एक महान संत थे तथा अपनी विद्वत्ता, कठोर तपस्या व साधना एवं आध्यात्मिक अंतदृष्टि के लिये प्रसिद्ध थे। लोक मानस के आध्यात्मिक जागरण सहित शिक्षा एवं अन्य सामाजिक कार्यों के लिये उन्हें सदैव याद किया जायेगा।

आशा है इस विशेषांक के माध्यम से आमजन आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अवगत होकर यथेष्ट रूप से प्रेरित होंगे।

पत्रिका प्रकाशन की सफलता हेतु हार्दिक मंगलकामनायें।

राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर

Phone : 0612-2786100-107, Fax : 0612-2786178
e-mail: governorbihar@nic.in

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

दिनांक: 14-03-2024
पत्र क्रमांक -106/24

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि मासिक पत्रिका संस्कार सागर इंदौर द्वारा 03 जुलाई 2024 का अंक राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज, जैन समाज के लिये ही नहीं अपितु पूरे भारत और विश्व के लिये ऐसे संत थे, जिन्होंने विश्व-कल्याण की सदैव कामना की। आचार्य विद्यासागर महाराज के देश और विश्व में शांति और सद्भाव सुदृढ़ करने के लिये किये गये मार्गदर्शी कार्य अनुकरणीय और सराहनीय हैं।

मुझे आशा है कि विशेषांक में आचार्य श्री के व्यक्तित्व और जीवन कृतित्त्व का समावेश होगा।

हार्दिक शुभकामनाएँ ।

(डॉ. मोहन यादव)

6, स्डामला डिल्स, भोपाल 462 002

सत्यमेव जयते

भूपेन्द्र पटेल
मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य

आदरणीय, ब्र. जिनेश मलैया जी

नमस्कार !

अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका संस्कार सागर में निरंतर विविध विषयों पर विशेषांकों का प्रकाशन हो रहा है। पत्रिका का 03 जुलाई 2024 का अंक राष्ट्रसंत ''आचार्य श्री विद्यासागर महाराज विशेषांक'' के रूप में प्रसिद्ध हो रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई।

समाचार के आदान प्रदान का हर एक क्षेत्र समाज का दर्पण है। यह न केवल संचार का माध्यम है बल्कि लोकतान्त्रिक और संवैधानिक मूल्यों को बल देने और समाज में जागरूकता का एक आदर्श तरीका हैं। पात्रकारित्व लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। इसे कायम रखना पत्रकार का उत्तरदायित्व है। सरकारी योजनाओं को प्रजा तक पहुंचाना और प्रजा के प्रश्नों को वाचा देने का कर्त्तव्य निभायें यह पत्रकार से अपेक्षित है।

राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी को श्रद्धांजलि के रूप में उनके व्यक्तित्व व विचारों को संस्कार सागर के माध्यम से जन जन तक पहुंचते का उपक्रम सराहनीय है। यह अंक सफलता प्राप्त करें इसी शुभेच्छा के साथ राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी को मेरी श्रद्धांजलि प्रेषित करता हूं।

आपका,

(भूपेन्द्र पटेल)

मनोहर लाल
MANOHAR LAL

सत्यमेव जयते

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़
CHIEF MINISTER HARYANA,
CHANDIGARH

Dated 01.03.2024

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष की अनुभूति हो रही है कि संस्कार सागर अंतराष्ट्रीय मासिक पत्रिका द्वारा 03 जुलाई 2024 का अंक राष्ट्रसंत आचार्य श्रीविद्यासागर महाराज विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री विद्यासागर महाराज जी ने मात्र 22 वर्ष की छोटी सी उम्र में दीक्षा ग्रहण कर ली थी। आचार्य श्री विद्यासागर हमेशा ही नागरिकों में मानवता, धर्म, प्रेम का संदेश देते रहे, लेकिन उनके कुछ उपदेश हमेशा लोगों के बीच एक अलग ही महत्त्व बनाये हुये हैं।

इस विशेषांक में उनके जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं तथा उन द्वारा किये नये धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों पर आधारित लेखों का प्रकाशन किया जायेगा, जो निश्चय नहीं जैन समाज के लोगों के साथ-साथ श्रद्धालुओं को भी श्रद्धा और भक्ति से भाव विभोर कर देगा।

मैं आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी को श्रद्धांजलि देता हूँ तथा विशेषांक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(मनोहर लाल)

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का ब्रह्मलीन होना देश और समाज के लिये एक अपूरणीय क्षति है। उनके आध्यात्मिक जीवन का हर अध्याय अद्भुत ज्ञान, असीम करूणा और मानवता के उत्थान के लिये अटूट प्रतिबद्धता से सुशोभित है। वज्र के समान कठोर साधक आचार्य श्री को आध्यात्मिक जागृति एवं मानव कल्याण में अमूल्य योगदान के लिये सदैव स्मरण किया जायेगा।

भारतवर्ष की पावन धरा ने ऐसी महान विभूतियों को जन्म दिया है, जिन्होंने मानवता को राह दिखाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संतों और समाज सुधारकों की इस महान परंपरा में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का प्रमुख स्थान है।

मैं आचार्य श्री के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

सत्यमेव जयते

CHIEF MINISTER
ARUNACHAL PRADESH

मुख्यमंत्री
अरूणाचल प्रदेश

राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की समाधि होना, देश और समाज के लिये अपूरणीय क्षति है। जिसकी पूर्ति संभव नहीं है। आचार्य श्री ने अपनी अंतिम सांस तक सिर्फ मानवता के कल्याण को प्राथमिकता दी। मानवता के सच्चे उपासक आचार्य जी सृष्टि के हित और हर व्यक्ति के कल्याण के अपने संकल्प के प्रति निःस्वार्थ भाव से संकल्पित रहे। योगी, चिंतक, दार्शनिक और समाजसेवी के रूप में उनकी सभी भूमिकाएं अद्वितीय रही। वज्र के समान कठोर साधक आचार्य श्री ने शिक्षा, स्वास्थ्य व गरीबों के कल्याण के कार्यों से यह दिखाया कि कैसे मानवता की सेवा और सांस्कृतिक जागरण के कार्य एक साथ किये जा सकते हैं। उनके मार्गदर्शन में देश भर में खुली गौशालाएं, हॉस्पिटल, शिक्षण संस्थाएं लंबे समय तक मानवता की सेवा में समर्पित रहेगी और उनकी समृतियां सदैव दिलाती रहेगी।

मैं आचार्य श्री के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

(पेमा खांडु)

गुलाब चन्द कटारिया
राज्यपाल, असम

सत्यमेव जयते

राज भवन, गुवाहाटी
पिन-781 001

No. GSAG/OFF/01/2024401
4 जून 2024

आदरणीय ब्र. जिनेश मलैया

आपकी मासिक पत्रिका संस्कार सागर की प्रति भेंट करने और आपके प्रशंसा से भरे शब्दों के लिये हार्दिक धन्यवाद। राष्ट्र संत आचार्य श्री विद्यासागर महाराज को समर्पित पत्रिका को इस गौरवशाली 303वें अंक का हिस्सा बनना मेरे लिये परम सौभाग्य और गर्व की बात है।

जैन आचार्य विद्यासागर महाराज एक महान संत और समाज सुधारक थे। वे अपनी आसाधारण विद्वता, गहन आध्यात्मिक अंतदृष्टि एवं तपस्या और अनुशासन के लिये सदैव स्मरणीय रहेंगे। उन्होंने लोगों को सदैव ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों को विकसित करने के लिये प्रोत्साहित किया। आचार्य जी के संदेश हमें सदैव प्रेरित और आलोकित करते रहेंगे।

संस्कार सागर के इस नवीनतम विशेषांक में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के जीवन, चरित्र, आदर्शों और संदेशों का समावेश है। मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक लोगों, विशेषकर युवाओं को आचार्य श्री के राष्ट्रवादी विचारों को अपने जीवन में अपनाने और राष्ट्र के विकास में योगदान देने के लिये प्रेरित करेगा।

मैं ईश्वर से आपके अच्छे स्वास्थ और सुख-समृद्धि की कामना करता हूं तथा आपके संस्थान एवं पत्रिका की सफलता के लिये शुभकमनायें देता हूं।

भवदीय

(गुलाब चन्द कटारिया)

फोनः (0361) 2540500 (ऑफिस): फैक्सः (0361) 2731832 ई-मेल rajbhavan-assam@gov.in

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज को श्रद्धांजली व्यक्त करने वाले विशिष्टजन

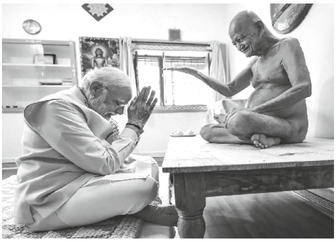

भारत की पावन भूमि में ऐसी अनेक महान विभूतियों ने जन्म लिया, जिनका जीवन ज्ञान एवं अध्यात्म के प्रचार-प्रसार और समाज सुधार के लिये समर्पित रहा। इस महान संत परंपरा को आगे ले जाने में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का प्रमुख स्थान रहा। उनके जीवन का हर अध्याय, अद्भुत ज्ञान, असीम करूणा और मानवता के उत्थान के लिये अटूट प्रतिबद्धता से सुशोभित था।

सेवा, समर्पण और तपस्या से परिपूर्ण आचार्य जी का जीवन भगवान महावीर के आदर्शों और जैन धर्म की मूल भावना का प्रतीक रहा। वह जैन समुदाय के साथ ही अन्य विभिन्न समुदायों के भी बड़े प्रेरणा स्तोत्र रहे। विभिन्न पंथों, परंपराओं और क्षेत्रों के लोगों को उनका सान्निध्य मिला, विशेष रूप से युवाओं में आध्यात्मिक जागृति के लिये उन्होंने अथक प्रयास किये।

आचार्य जी का जाना मेरे लिये एक मार्गदर्शक को खोने जैसा है।

- नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री, भारत सरकार 24 फरवरी 2024

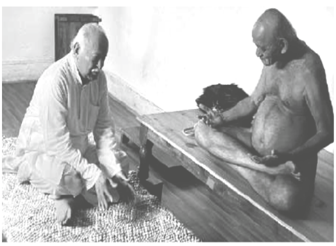

अत्यंत कठोर व्रताचरण तथा संपूर्ण वैराग्याचरण करने वाले आचार्य विद्यासागर जी हम सबके मार्गदर्शक तो थे ही, साथ ही वे राष्ट्र की बड़ी पूंजी थे। आचार्य विद्यासागर जी से पहली बार जबलपुर में भेंट और लगभग 1 घंटे चर्चा के बाद मेरे ध्यान में आया कि वे तर्क से तो बात रखते ही थे, उस तर्क के पीछे भी उनका एक सहज आत्मीयता का भाव होता था। पहली भेंट के उपरांत मैं और संध के कई वरिष्ठ अधिकारी समय-समय पर आचार्य श्री से मिलकर उनका मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे। उनके बताए मार्ग पर चलकर संघ को विभिन्न क्षेत्रों में सफलतायें और ख्याति मिली।

उनका नहीं होना मेरे लिये वैयक्तिक हानि की बात है। उनके पास आधा घंटा भी बैठता था तो अगले वर्ष भर मन स्थिर रहता था। स्व से शुरु करो उसी आधार पर उन्नति होती है। अपने देश को भारत कहो इंडिया मत कहो ऐसा उनका सदैव आग्रह होता था। देश का उत्पादन जनता के द्वारा बढ़ाओं तो उनको रोजगार मिलेगा और देश को लाभ मिलेगा, ऐसा काल सुसंगत मार्गदर्शन एवं उपदेश उनसे मिलता था। व्यक्तिगत आचरण या राष्ट्र के विषय में उनकी बातें हम सबके लिये मार्गदर्शन है। उनके जाने से मेरी व्यक्तिगत हानि हुई है, उसका तो कोई उपाय नहीं , लेकिन हम उनके बताये मार्गदर्शन पर सदैव चलें, तो हमेशा के लिये उन्नति कर सकते हैं ।

हथकरघा प्रणेता, गौशालाओं के संवर्धक, महायोगी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आजीवन प्रेम, करूणा, सरलता और समता के प्रचारक रहे। मैं उनकी स्मृति में अपनी श्रद्धांजली अर्पण करता हूँ।

- डॉ. मोहन राव भागवत

सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, 26 फरवरी 2024

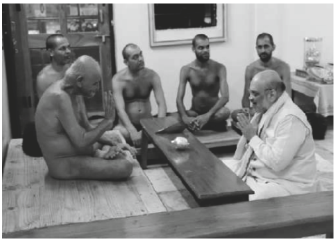

महान संत परम पूज्य 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जैसे महापुरुष का ब्रह्मलीन होना, देश और समाज के लिये अपूरणीय क्षति है। उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक सिर्फ मानवता के कल्याण को प्राथमिकता दी। मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि ऐसे युगमनीषी का मुझे सान्निध्य, स्नेह और आशीर्वाद मिलता रहा। मानवता के सच्चे उपासक आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जाना मेरे लिये एक व्यक्तिगत क्षति है। वे सृष्टि के हित और हर व्यक्ति के कल्याण के अपने संकल्प के प्रति निःस्वार्थ भाव से संकल्पित रहे। विद्यासागर जी महाराज ने एक आचार्य, योगी, चिंतक, दार्शनिक और समाजसेवी, इन सभी भूमिकाओं में समाज का मार्गदर्शन किया। वे बाहर से सहज, सरल और सौम्य थे, लेकिन अंतर्मन से वज्र के समान कठोर साधक थे। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य व गरीबों के कल्याण के कार्यों से यह दिखाया कि कैसे मानवता की सेवा और सांस्कृतिक जागरण के कार्य एक साथ किये जा सकते हैं। आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन युगों-युगों तक ध्रुवतारे के समान भावी पीढ़ियों का पथ प्रदर्शित करता रहेगा। मैं उनके सभी अनुयायियों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ।

- अमित शाह

गृहमंत्री, भारत सरकार, 18 फरवरी 2024

परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समाधिस्थ होने का समाचार सुनकर मुझे आत्मिक पीड़ा हुई है। मैं सम्पूर्ण देश के साथ उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज आध्यात्मिकता, सौम्यता और शालीनता की प्रतिमूर्ति तथा ज्ञान के प्रकाशपुंज थे। उन्होंने जनमानस को सत्य, अहिंसा, बंधुत्व एवं नैतिकता का परम संदेश दिया तथा सम्पूर्ण मानवता का मार्गदर्शन किया। वे जैन धर्म के ध्वजवाहक और मानवता के अग्रदूत थे। वे अपने प्रखर विचारों, प्रवचनों और संदेशों के माध्यम से मुखर रहे। वे विकास के साथ-साथ धर्म और संस्कृति को बनाये रखने का पक्षधर थे। धार्मिक सांस्कृतिक उत्थान और विश्व शांति के लिये किये गये उनके सभी प्रयास अनुकरणीय और पथप्रदर्शक हैं। उनकी दिव्य उपस्थिति और आभा मण्डल ने भारत भूमि की पवित्रता को और बढ़ा दिया।

यह मेरे लिये सौभाग्य का विषय है कि अनेक अवसरों पर मुझे पूज्य आचार्य श्री का सान्निध्य, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। नेमावर तीर्थ, देवास (म.प्र.) में उनसे मेरी सप्रेम भेंट मेरे जीवन का सबसे अविस्मरणीय पल था जहां उनके परम सान्निध्य में समाज सेवा हेतु मुझे मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय अस्मिता, संस्कृति और शिक्षा को बढ़ावा देने के उनके प्रेरणादायी विचारों ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

उनका समाधिस्थ होना समाज के साथ-साथ मेरे लिये भी एक व्यक्तिगत क्षति है। जीवन मूल्य, शिक्षा और समाज के प्रति अप्रतिम योगदान देश की प्रत्येक पीढ़ी को प्रेरित करता रहेगा।

- ओम बिरला

स्पीकर-लोकसभा, 25 फरवरी, 2024

जैन धर्म के महान संत आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की चंद्रगिरि तीर्थ डोंगरगढ़ में सल्लेखना पूर्वक समाधि समाज और देश के लिये एक अपूरणीय क्षति है। उनका जीवन तप, ज्ञान और प्रेम का प्रतीक है, जो जनकल्याण की ओर सदा हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

- राहुल गांधी
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, कांग्रेस, 18 फरवरी 2024

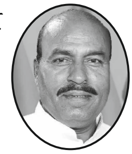

अहिंसा, प्रेम और अस्तेय की जीवंत प्रतिमूर्ति और आधुनिक युग के भगवान महावीर की संज्ञा से अभिहित महान संत आचार्य भगवान विद्यासागर जी के श्री चरणों में शत-शत नमन। ज्ञान, सत्कर्म और श्रेष्ठ आचरण के माध्यम से आपने सभ्य, सुसंस्कृत और समरस समाज के निर्माण में अद्वितीय योगदान दिया है। पीढ़ियों तक आपके सिद्धांत, विचार दर्शन और जीवन व्यवहार सबके लिये प्रेरक रहेगा।

- डॉ. वीरेन्द्र कुमार
मंत्री- भारत सरकार, 18 फरवरी 2024

जैन धर्म के मुनि संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ब्रह्मलीन होने का समाचार बेहद दुखद है। समाज, अध्यात्म, देश, धर्म के प्रति उनका कार्य आने वाली कई पीढ़ी, याद करेंगी और प्रेरणा लेकर सत्कार्यों की ओर आगे बढ़ सकेगी।

मुझे आचार्य श्री के रामटेक में दर्शन और आशीर्वाद लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैं उन्हें भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

- देवेन्द्र फडववीस
उपमुख्यमंत्री, महाराष्ट्र, 18 फरवरी 2024

समस्त जैन समाज के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व को सत्य -अहिंसा का मार्ग दिखाकर आत्मिक बोध की ओर ले जाने वाले युगदृष्टा आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के ब्रह्मलीन होने पर कोटि-कोटि वंदन ! उनकी चेतना-अनुभूति हमारे मन-हृदय में अनंत-अमर रहेगी।

- अखिलेश यादव
राष्ट्रीय अध्यक्ष, सपा, 18 फरवरी 2024

परम वंदनीय संत, आचार्य विद्यासागर महाराज के ब्रह्मलीन होने का समाचार मिला। ईश्वर उन्हें अपने श्रीचरणों में आश्रय प्रदान करें। विश्व-कल्याण के लिये आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का समर्पण अविस्मरणीय है। आचार्य श्री के चरणों में कोटि-कोटि नमन।

- विश्वभूषण हरिचंदन
राज्यपाल, छत्तीसगढ़, 18 फरवरी 2024

आचार्य विद्यासागर महाराज एक प्रख्यात आध्यात्मिक नेता रहे हैं जिनकी शिक्षाओं ने कई अनुयायियों को प्रेम, करूणा, शांति और सद्भाव के मार्ग पर आगे बढ़ाया है। उनके गहन ज्ञान, प्रवचन, लेखन और छंदों ने एक समृद्ध विरासत छोड़ी है जिसे लंबे समय तक याद किया जायेगा। उनकी उत्कृष्ट विद्वत्ता और आध्यात्मिक ज्ञान के लिये उन्हें व्यापक रूप से पहचाना जाता था। अपने पूरे जीवन में, आचार्य विद्यासागर महाराज जैन धर्म ग्रंथों और दर्शन के अध्ययन और अनुप्रयोग में गहनता से लगे रहे और उन्हें संस्कृत, प्राकृत और अन्य भाषाओं में महारत हासिल करने के लिये जाना जाता था। उन्होंने कई ज्ञानवर्धक टिप्पणियाँ, कविताएँ और आध्यात्मिक ग्रंथ लिखे।

-डॉ. सी.वी. आनंद बोस

राज्यपाल, पश्चिम बंगाल, 23 फरवरी 2024

आध्यात्मिक जागृति के लिये आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी के संदेशों को हमेशा याद किया जायेगा। उन्होंने गरीबी उन्मूलन के लिये बहुमूल्य योगदान दिया। समाज के स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र में उनके द्वारा दिये गये सूत्र प्रासांगिक हैं , मैं दिवंगत आत्मा की शांति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ।

- आनंदीबेन पटेल

राज्यपाल, उत्तरप्रदेश, 18 फरवरी 2024

विश्ववंदनीय राष्ट्र संत आचार्य विद्यासागर महामुनिराज जी के डोंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरि तीर्थ में सल्लेखना पूर्वक समाधि की सूचना मिली। ओजस्वी ज्ञान से पल्लवित आचार्य विद्यासागर जी महाराज को हमेशा देश और समाज के लिये किये गये उनके त्याग और तपस्या के लिये याद किया जायेगा। वह आध्यात्मिक चेतना के पुंज थे, उनके श्रीचरणों में मेरा कोटि-कोटि नमन।

- विष्णुदेव साई

मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ 18 फरवरी 2024

दिगंबर जैन परंपरा के अत्यधिक प्रशंसित और श्रद्धेय संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के निधन के बारे में जानकर मुझे गहरा दुख हुआ है।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने मानवता की भलाई और आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार के लिये अपना जीवन समर्पित करके दिव्यता के सार को अपनाया। अनेक भाषाओं में पारंगत, वह अपनी परोपकारी काव्यात्मक, अंतर्दृष्टि के लिये प्रसिद्ध थे।

ब्रह्मचर्य और तपस्या के जीवन के माध्यम से उन्होंने प्रेरणा के प्रकाशस्तंभ के रूप में कार्य किया और कई लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान कर उनका मार्गदर्शन किया। उनका निधन न केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में बल्कि समग्र मानवता के लिये भी एक गहरी क्षति है।

वह अपने पीछे जो असाधरण विरासत छोड़ गये हैं वह हम सभी को ज्ञानोदय करुणा और मानवता की सेवा की दिशा में प्रेरित करती रहेगी।

मैं उनके असंख्य अनुयायियों और शुभचिंतकों के प्रति अपनी गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करती हूँ।

- ममता बनर्जी

मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल, 23 फरवरी 2024

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज सिर्फ संत नहीं , वे भगवान हैं। महाराज के अंदर सारा हिमालय समाया हुआ हैं , हिमालय में तपस्वियों की जो तपस्या, आभा, ऊर्जा और शक्ति है, वह आचार्य श्री में समायी हुई है। आचार्य श्री के दर्शन कर लेना ही चारों धाम के दर्शन करने के समान है।

- उमा भारती

पूर्व मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश, 17 मार्च 2022

आचार्य श्री हम सबको छोड़कर चले गये। त्रिलोकनाथ के बाद वो ही हमारे नाथ थे। आज हम सब अनाथ हो गये। हम सब पुण्यशाली हैं, जो आचार्य श्री के युग में हम सबने जन्म लिया। मैं तो और भी अपने आपको पुण्यशाली मानता हूं कि सन् 1967 से जब आचार्य श्री ब्रह्मचर्य अवस्था में किशनगढ़ आये थे, तब से मैं उनसे जुड़ा हूं। आचार्य श्री की दीक्षा देखने का भी मुझे मौका मिला। आचार्य श्री कोई तंत्र, मंत्र, डोरा, डांडी आदि कुछ भी नहीं करते थे। पर मैं जब भी आचार्य श्री के पास जाता था, मन की जो कोई भावना होती थी वह पूरी हो जाती थी, काम के बारे में आज तक उनसे कोई भी चर्चा नहीं की। लेकिन जब नमोस्तु करता वो आशीर्वाद देते, उससे ही मेरे सारे काम हो जाते थे। आज वो हमारे बीच नहीं रहे। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि हमारे आचार्य श्री को निकटभव में मोक्ष की प्राप्ति हो और आचार्य श्री से (उनकी आत्मा से) निवेदन करता हूं कि हे आचार्य श्री हमें भी आप ऐसा आशीर्वाद दें कि हम भी मोक्षमार्ग की ओर आगे बढ़ें।

- अशोक पाटनी

आर.के.मार्बल ग्रुप किशनगढ, राजस्थान 20 फरवरी 2024

जैन पंथ के पूज्य संत, आध्यात्मिक गुरु आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज का ब्रह्मलीन होना आध्यात्मिक जगत एवं सम्पूर्ण समाज के लिये अपूर्णनीय क्षति है।

- योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश, 18 फरवरी 2024

पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज जी के महानिर्वाण से भारत की आध्यात्मिक सत्ता को अपूरणीय क्षति हुई है। पूज्य आचार्य श्री का जीवन तप, त्याग, सेवा व संघर्ष से परिपूर्ण रहा, मुझे व्यक्तिगत रूप से पूज्य महाराज जी का कई बार आशीर्वाद मिला। हम सम्पूर्ण पतंजलि परिवार की ओर से उनको भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

- बाबा रामदेव

18 फरवरी 2024

राष्ट्रीय संत आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के निधन की खबर पूरी दुनिया के स्तब्ध और अवाक करने वाली है। मेरे जीवन पर आचार्य श्री का गहरा प्रभाव था। उनका अधिकांश जीवन मध्यप्रदेश की धरती पर बीता और मुझे उनसे बहुत आशीर्वाद मिला। आचार्य श्री के सामने आते ही हृदय प्रेरणा से भर उठता था। उनका आशीर्वाद असीम शांति और अनंत ऊर्जा प्रदान करता था। उनका जीवन त्याग और प्रेम का उदाहरण है आचार्य श्री जीते जागते परमात्मा थे। उनका भौतिक शरीर हमारे बीच ना हो लेकिन गुरु के रूप में उनकी दिव्य उपस्थिति सदैव हमारे आस-पास रहेगी।

- शिवराज सिंह चौहान

पूर्व मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश 18 फरवरी 2024

पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की संल्लेखना पूर्वक समाधि लेने की खबर न सिर्फ जैन समाज के लिये बल्कि समूचे भारत और विश्व के लिये अपूरणीय क्षति है।

ब्रह्मलीन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ज्ञान, त्याग, तपस्या ओर तपोबल का सागर रहे हैं । भारत भूमि ऐसे अलौकिक संत के दर्शन, प्रेरणा, आशीष, स्पर्श और करुणा से धन्य हुई है।

मैं आचार्य श्री विद्यासागर जी को भावपूर्ण प्रणाम करता हूँ। शत् शत् नमन करता हूँ। आचार्य श्री हमेशा हमारे हृदय में, हमारी चेतनाओं में, हमारी आस्थाओं में और हमारे जीवनपथ पर शाश्वत रहेंगे।

- कमलनाथ

पूर्व मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश, 18 फरवरी 2024

श्रमण संस्कृति और साधु परम्परा के सर्वोच्च संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज ने सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण को प्राप्त किया है। उनके समाधि मरण से त्यागीगण और संपूर्ण जैन समाज को भारी कष्ट हुआ है।

आचार्य श्री समता एवं दृढ़ चारित्र के धनी थे। जैन इतिहास के संरक्षक थे। उनके सान्निध्य में अनेक जैन तीर्थों का संरक्षण, गुरुकुलों की स्थापना, अनेक पंचकल्याणक महोत्सव अपार वैभव के साथ संपन्न हुये। उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की है। जिससे जिनदर्शन का प्रचार-प्रसार देश-विदेश में हुआ है।

आचार्य श्री ने 1967 के महामस्तकाभिषेक के समय श्रवणबेलगोला में आचार्य श्री देशभूषण महाराज से ब्रह्मचर्यव्रत लेकर भगवान बाहुबली के दर्शन किये थे।

सन् 2018 के महामस्तकाभिषेक महोत्सव के समय श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में आचार्य श्री के संयम सुवर्ण महोत्सव के निमित्त एक कीर्तिस्तंभ का लोकार्पण भी किया गया था। आचार्य श्री युवा समाज की प्रेरक शक्ति और दिग्दर्शक थे।

हमारे दीक्षा गुरु प्रातः स्मरणीय कर्मयोगी श्री पूज्य स्वामी जी ने 1988 में मध्यप्रदेश के जबलपुर में पहली बार आचार्य श्री के दर्शन किये थे। दूसरी बार 2022 में महाराष्ट्र में दर्शन करके षटखंडागम के कन्नड में अनुवादित ग्रंथों को उनको समर्पण कर भक्ति व्यक्त किये थे। ऐसे महान संत चरित्र के दृढ़ पालक आचार्य श्री के चरणों में भक्तिपूर्वक श्रद्धांजली समर्पित करते हैं।

- स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक

24 फरवरी, 2024 श्रवणबेलगोला

संत के दर्शन पुण्य है, संत ही तीरथ रूप। काल पाय तीरथ फलै, तुरतहि संत अनूप।।

परमपूज्य विद्यासागर जी महाराज जो तप, त्याग, ध्यान, धारणा समाधि, समाधान के साक्षात् स्वरूप थे आज चिर समाधि में लीन हो गये। लाखों-लाख मनुष्यों के कष्टों का हरण करने वाले उन्हें अपने इष्ट से मिलाने वाले उनके अभीष्ट की पूर्ति करने वाले हे तीर्थ स्वरूप, हे तीर्थंकर परमपूज्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज आपके श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम, भावभीनी श्रद्धांजलि।

- पंडित धीरेन्द्र शास्त्री

18 फरवरी, 2024

कन्नड़ कुल रत्नभूषण परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी के समाधि देह त्याग पर भावपूर्ण विनयांजलि। आचार्य विद्यागर जी महाराज अपने तप, त्याग और करुणा के माध्यम से भगवान महावीर के मार्ग को प्रशस्त करते रहे। उनके मंगल आशीर्वाद और प्रेरणा से धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक क्षेत्रों में अनगिनत कार्य हो रहे हैं। पूज्य महाराज जी के साथ जब भी मैंने भेंट की तब-तब उनकी दिव्य प्रभा और आशीर्वाद से धन्य हुआ हूँ। श्री क्षेत्र धर्मस्थल के कार्यों के बारे में जानकारी लेकर वे हमें जिस स्नेह और प्रेम से आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन करते थे वह शब्दों में अवर्णनीय हैं। कन्नड़ की मिट्टी के इस महासंत दिव्य चेतना ने अहिंसा और जैन धर्म की पताका को पूरे विश्व में फहराया हैं। भारतवर्ष के सभी धर्मों के कोटि-कोटि भक्त हृदय में विराजमान ऐसे दिगंबर आचार्य जी के समाधिमरण पर कोटि-कोटि नमन।

- डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े

धर्माधिकारी, श्री क्षेत्र धर्मस्थल, कर्नाटक 25 फरवरी, 2024

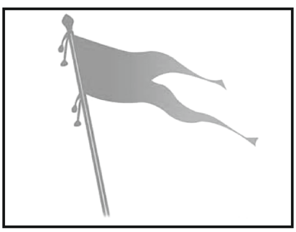

महान तीर्थंकरों की श्रेष्ठतम परंपराओ को अपने जीवन में साक्षात करने वाले जैन धर्म के महान आचार्य पूज्य श्री विद्यासागर जी महाराज का शरीर आज प्रातः डोंगरगढ़-राजनंदगांव (छत्तीसगढ़) में पूर्ण हो गया। पूज्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने 1968 में दिगंबरी दीक्षा ली थी और तब से आज तक वे निरंतर सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, की साधना करते हुये इन पंच महाव्रतों के देशव्यापी प्रचार हेतु समर्पित हो गये। लोक कल्याण की भावना से अनुप्राणित होकर पूज्य आचार्य श्री महाराज ने अपने जीवन में सैकड़ों मुनियों एवं आर्यिकाओं को दीक्षा प्रदान की और लोकोपकारी कार्यों हेतु सदैव अपनी प्रेरणा और आशीर्वाद प्रदान किया। संपूर्ण भारतवर्ष में उन्होंने अनेक स्थानों पर गौशालाएं, शिक्षा संस्थान, हथकरघा केन्द्र तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की लोकमंगलकारी योजनाओं का शुभारंभ कराया। अनेक कारागारों में वहां रहे हजारों लोगों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन करने का अभूतपूर्व कार्य उनके आशीर्वाद से ही चल रहा है। उनकी यही अभिलाषा थी कि यह देश अपनी उदात्त शिक्षाओं और जीवनादर्शों को लेकर पुनः खड़ा हो और वर्तमान समय में विश्व को नई दिशा प्रदान करे। उनका संपूर्ण जीवन इन आदर्शों के प्रति पूरी तरह समर्पित था। अंतिम श्वांस तक उन्होंने अनेक कठोर साधनाव्रत का निर्वाह किया। लाखों लोग उनके आदर्शों पर आज चल रहे हैं। उनके चले जाने का दुःख तो सभी को होना स्वाभाविक ही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उनके द्वारा दिग्दर्शित इस मार्ग पर हम सभी लोग और अधिक दृढ़ता और समर्पित भाव से निरंतर आगे बढ़ते रहें तथा उन आदर्शों को तीव्र गति प्रदान करें। हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

डॉ. मोहन राव भागवत — सरसंघचालक

दत्तात्रेय होसबाले — सरकार्यवाह 18 फरवरी 2024

हम सब जानते हैं कि जैन आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जन्म 10 अक्टूबर 1946 को विद्याधर के रूप में कर्नाटक के बेलगांव जिले के सदलगा में शरद पूर्णिमा के दिन हुआ था। विद्यासागर जी ने 30 जून 1968 में अजमेर में 22 वर्ष की आयु में आचार्य ज्ञानसागर जी से दीक्षा ली। जो आचार्य शांतिसागर जी के शिष्य थे। आचार्य विद्यासागर जी को 22 नवंबर 1972 में ज्ञानसागर जी द्वारा आचार्य पद दिया गया। केवल विद्यासागर जी के बड़े भाई गृहस्थ थे। उनके अलावा घर के सभी लोगों ने सन्यास लिया था। उनके भाई अनंतनाथ जी और उनके दूसरे भाई शांतिनाथ जी ने आचार्य विद्यासागर जी दीक्षा ग्रहण की और मुनि योगसागर जी और मुनि समयसागर जी के नाम से जाने गये। आचार्य विद्यासागर जी संस्कृत के, प्राकृत साहित्य के और विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिन्दी, मराठी, कन्नड़ में विशेषज्ञ स्तर पर ज्ञान रखते थे। उन्होंने हिन्दी और संस्कृत में विशाल मात्रा में रचनायें की। 100 से अधिक शोधार्थियों को उनके कार्य पर मास्टर्स डिग्री और डॉक्ट्रेट के लिये अध्ययन करने का भी सौभाग्य मिला। आचार्य श्री ने मूकमाटी काव्य की रचना की जो विभिन्न संस्थाओं में स्नातकोत्तर के रूप में हिन्दी के पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ायी जाती है। इसके साथ-साथ हम यह भी बताना चाहेंगे कि जैन आचार्य विद्यासागर जी ने अपने जीवन में सांसारिक सुखों से अपने आपको बहुत दूर रखा और बहुत ही कठोर जीवन उन्होंने जीया। अगर सांसारिक दृष्टि से देखा जाये तो उनका कोई बैंक खाता नहीं था। लेकिन उनके एक इशारे पर उनके भक्त अरबों की धनराशि दान कर देते थे।

आज संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर समस्त भाजपा पदाधिकारी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर सादर नमन करते हैं। भारत की महान आध्यात्मिक विरासत एवं सांस्कृतिक मूल्यों को जन-जन में सृजित करने हेतु आचार्य श्री का योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

- जे.पी नड्डा

राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, 18 फरवरी 2024

आध्यात्मिक जगत के धूमकेतु आचार्य विद्यासागर जी महाराज के देवलोक गामी होने से विहिप बेहद दुखी है। उस महान योगी को सच्ची श्रद्धांजलि उनके अमर संदेशों का अनुसरण करके ही दी जा सकती है। -ओम् शांतिः

- विश्व हिन्दू परिषद

18 फरवरी, 2024

मध्यप्रदेश शासन के अवर सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग सचिन्द्र राव ने पत्र क्रमांक एफ 8-2/20231-4, दिनांक 18 फरवरी 2024 में प्रदेश के प्रमुख सचिव, मुख्यमंत्री, समस्त अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव, अध्यक्ष-राजस्व, मंडल ग्वालियर, समस्त विभागाध्यक्ष, पुलिस महानिदेशक, समस्त संभागीय आयुक्त, कलेक्टर, मुख्य कार्यपालन अधिकारी- जिला पंचायत, रजिस्ट्रार जनरल- उच्च न्यायालय, सचिव लोक सेवा आयोग, महानिदेशक-प्रशासन अकादमी, सचिव-राज्यपाल, आयुक्त-जनसंपर्क संचालनलय व उपसचिव- मुख्य सचिव कार्यालय को भेजे गये पत्र में सूचित किया है कि जैन मुनि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के देहावसान पर राज्य शासन एतद्वारा प्रदेश में दिनांक 18 फरवरी 2024 को आधे दिन का राजकीय शोक घोषित करता है। इस दौरान राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा तथा राजकीय समारोह/कार्यक्रम आयोजित नहीं किये जायेंगे।

दिल्ली विधानसभा में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी महाराज की समाधि होने पर सभी सदस्यों की ओर से श्रद्धांजली व्यक्त की गई। दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अपने ज्ञान तथा तपस्या दोनों के लिये ही प्रसिद्ध थे। उन्होंने सभी धर्मावलम्बियों में सामंजस्य बनाये रखने का अथक प्रयास किया। मैं अपनी और पूरी विधानसभा की ओर से आचार्य श्री को श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ। तत्पश्चात विधानसभा में सभी विधायकों ने खड़े होकर 2 मिनट का मौन रखा और आचार्य श्री विद्यासागर महाराज को श्रद्धांजली व्यक्त की।

- दिल्ली विधानसभा, 20 फरवरी 2024

छत्तीसगढ़ शासन के अवर सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग ने पत्र क्रमांक एफ-3-1/2015/1/5, दिनांक 18 फरवरी 2024 में प्रदेश के समस्त विभाग, अध्यक्ष-राजस्व मंडल बिलासपुर, समस्त संभागायुक्त, विभागाध्यक्ष कलेक्टर को सूचित किया कि जैन मुनि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के देहावसान पर राज्य शासन एतदद्वारा प्रदेश में दिनांक 18 फरवरी 2024 को आधे दिवस का राजकीय शोक घोषित करता है। राजकीय शोक की अवधि में राज्य स्थित समस्त शासकीय भवनों एवं जहाँ पर नियमित रूप से राष्ट्रीय ध्वज फहराये जाते हैं, वहाँ पर राष्ट्रीय ध्वज आधे झुके रहेंगे तथा शासकीय स्तर पर कोई मनोरंजन/सांस्कृति कार्यक्रम नहीं किया जायेगा। इस पत्र की प्रति सचिव-मुख्यमंत्री, प्रमुख सचिव- छत्तीसगढ़ विधानसभा सचिवालय, सचिव-संसदीय कार्य विभाग, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी व रजिस्ट्रार-छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय को भी भेजी गई।

जैन आचार्य श्री 108 विद्यासागर महाराज के निधन पर कर्नाटक विधानसभा में शोक प्रस्ताव को विधानसभा अध्यक्ष यू आर खादर ने प्रस्तुत करते हुये कहा-यह सदन उनके निधन पर शोक व्यक्त करता हैं। जैन मुनि आचार्य विद्यासागर जी का जन्म 10 अक्टूबर 1946 को बेलगांव जिले के सदलगा में एक साधारण परिवार में हुआ था, दिगम्बर जैन परिवार में जन्मे श्री विद्यासागर जी ने 22वें वर्ष में आचार्य ज्ञानसागर मुनि से दीक्षा ली। 1972 में आचार्य ज्ञानसागर मुनि से उन्हें आचार्य पद की उपाधि प्राप्त हुई। प्राकृत और संस्कृत भाषाओं के साथ ही वे अन्य अनेक भाषाओं के साथ ही वे अन्य अनेक भाषाओं के विज्ञ थे। उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की जिनमें निरंजन शतक, श्रमण शतक, भावना शतक, महत्वपूर्ण हैं। कन्नड़, हिन्दी और मराठी सहित आठ भाषाओं के वे विद्वान थे। हिन्दी में रचित उनकी पुस्तक मूकमाटी काफी लोकप्रिय हुई। मुनि आचार्य विद्यासागर जी ने अनेकों मुनि दीक्षायें दीं और अनेक लोगों को ब्रह्मचर्य की शिक्षा दी। देश में विशाल गौशालाओं का निर्माण भी उन्होंने करवाया था। यही नहीं, गरीब बच्चों की निशुल्क शिक्षा के लिये उन्होंने व्यवस्था करवाई थी।

मुनि आचार्य श्री विद्यासागर जैन धर्म में समर्पित साधकों के लिये आदर्श बन गये थे। कवि, योगि और एक चिंतन तथा दार्शनिक रूप आचार्य विद्यासागर जी ने छत्तीसगढ़ राज्य में डूंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरि तीर्थ में 18 फरवरी, 2024 को इहलोक को त्याग दिया।

शोक प्रस्ताव पर श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुये राज्य के राजस्व मंत्री एम. कृष्ण बैरेगौडा ओर सदन में विपक्षी नेता आ. अशोक ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

- कर्नाटक विधानसभा, 19 फरवरी 2024

प्रवज्या प्रमुखः आचार्य श्री विद्यासागर

✻ ब्र. जिनेश मलैया प्रधान संपादक संस्कार सागर इन्दौर ✻

दीक्षा की परिभाषा को सार्थक करने वाले आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज इस युग के ऐसे संत रहे है जिन्होंने हजारों बाल ब्रह्मचारी, योग्य, विलक्षण प्रतिभा के धनी, बहुत से युवा त्यागियों क़ा समूह जैन समाज के लिए दिया। श्रमण संस्कृति के आधुनिक इतिहास में इतनी बड़ी संख्या में दीक्षित संयमी जन समूह प्रस्तुत करने वाले मेरे संज्ञान में कोई दूसरे आचार्य नहीं हैं। दीक्षा देने वाले अनेक आचार्य मिल सकते हैं किन्तु आचार्यश्री विद्यासागर जी के पास दीक्षार्थियों की बहुत बड़ी पंक्ति निरंतर लगी रहती थी किन्तु आचार्यश्री उनकी अनेक रूप से परीक्षा लेने के बाद भी उनसे एक ही बात कहते थे, भावना रखो और साधना करो, उनके मापदंड में खरे उतरने के बाद ही वे योग्य अंतरंग साधना करने वालों को ही दीक्षा देने की सोचते थे। आचार्यश्री ने भावनाओं के दबाव में आकर किसी को भी, कभी कोई दीक्षा नहीं दी। वे प्रायःअपने प्रवचनों में कहा करते हैं कि मैं किसी को भी नियम दीक्षा नहीं देता हूँ अपितु दीक्षार्थी अपनी योग्यता, साधना और इच्छा शक्ति तथा स्थिर अडिग संकल्प बल पर दीक्षा लेता है।

दीक्षा का अर्थ बहुत गहरा है, शिवराम वामन आप्टे ने अपने संस्कृत हिन्दी शब्दकोश में दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए कहा है कि 'धर्म संस्कार के लिए समर्पण, पवित्रीकरण का नाम दीक्षा है।' प्रव्रज्या शब्द दीक्षा के अर्थ में ग्रहण किया जाता है। बोध पाहुड़ की गाथाओं में दीक्षा का स्वरूप इस प्रकार बतलाया है -

गिहगंथमोहमुक्का वावीसपरीसहा जियकसाया।
पावारंभ विमुक्का पव्वज्जा एरिसा भणिया ।।45।।

जो निवास स्थान और परिग्रह के मोह से रहित है, बाईस परीषहों को जीतने वाला है, कषाय से रहित है तथा पाप के आरम्भ से अथवा पापपूर्ण खेती आदि के आरम्भ से मुक्त है
ऐसी दीक्षा कही गई है।

सत्तूमित्ते व समा पसंसणिंदा अलद्धिलद्धिसमा।
तणकणए समभावा पव्वज्जा एरिसा भणिया ।।47।।

जो शत्रु और मित्र में सम है, प्रशंसा, निन्दा, अलाभ और लाभ में सम है, तथा तृण और सुवर्ण में समभाव रखते हैं, वे दीक्षा के पात्र हैं।

जहजायरुवसरिसा अवलंबियभुअ णिराउहा संता।
परकियणिलयणिवासा पव्वज्जा एरिसा भणिया ।।51।।

जो तत्काल उत्पन्न हुए बालक के समान नग्न रूप से सहित है, जिसमें भुजाएँ नीचे की ओर लटकी रहती हैं, जो शस्त्र से रहित है, और प्रासुक प्रदेशों पर गमन करते हैं, जो शान्त है तथा जिसमें दूसरे के द्वारा बनाये हुए उपाश्रय में निवास किया जाता है , उसे जिनदीक्षा (देना) कही गई है।

उवसमखमदमजुत्ता सरीरसक्कारवज्जिया रुक्खा ।
मयरायदोसरहिया पव्वज्जा एरिसा भणिया ।।52।।

जो उपशम, क्षमा और दम से सहित है, शरीर के संस्कार से रहित है, रुक्ष है, और मद राग, द्वेष अथवा दोषों से रहित है, वह जिनदीक्षा कही गई है ।।52।।

प्रव्रज्या/दीक्षा का लक्षण सुनिश्चित किया गया है गृह और परिगृह तथा उनके ममत्व से जो रहित है 22 परिषह तथा कषायों को जिसने जीता है पापारंभ से जो रहित है उसे प्रव्रज्या कहा है जिसमें शत्रु-मित्र में, प्रशंसा-निंदा, लाभ-अलाभ, तृण कंचन मे समभाव हो उसे दीक्षा/ प्रव्रज्या कहा है यथाजात रूपधर लम्बायमान भुजा, निरायुध, शांत, दूसरों के द्वारा बनाई वसतिका में वास, शरीर संस्कार रहित तथा तेलादि के मर्दन से रहित, रुक्ष शरीर सहित ऐसी प्रव्रज्या कही गयी है। इस दीक्षा के स्वरूप को सार्थक करते हुए आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज ने 131 मुनि, 172 आर्यिका, 61 एलक, 141 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका इस प्रकार कुल 508 साधकों को दीक्षा दी है।

दीक्षा के पूर्व दीक्षार्थियों के आवश्यक कार्यों को आचार्यश्री कुन्दकुन्द देव ने **प्रवचन सार के चारित्र अधिकार** में इस प्रकार कहा है -

आपिच्छ बंधुवग्गं विमोचिदो गुरुकलत्तपुतेहिं ।
आसिज्ज णाणदंसणचरित्ततववीरियायारं ।।2।।

जो जीव मुनि होना चाहता है, वह पहले ही अपने कुटुम्ब के लोगों से पूछकर अपने को छुड़ावे। छुड़ाने की रीति इस तरह से है - भो इस जन के शरीर के तुम भाई बंधुओ, इस जन का (मेरा) आत्मा तुम्हारा नहीं हैं, ऐसा तुम निश्चयकर समझो। इसलिये तुमसे पूछता हूँ, कि यह मेरे आत्मा में ज्ञान-ज्योति प्रगट हुई है, इस कारण अपना आत्मस्वरूप ही अनादि भाई बंधु को प्राप्त होता है। अहो इस जन के शरीर के तुम माता-पिताओ, इस जन का आत्मा तुमने उत्पन्न नहीं किया, यह तुम निश्चय से समझो, इसलिये तुम इस मेरे आत्मा के विषय में ममता भाव छोड़ो। यह आत्मा ज्ञान-ज्योतिकर प्रगट हुआ है, सो अपना आत्मस्वरूप ही माता पिता को प्राप्त होता है। हे इस जनके शरीर का मन हरने वाली स्त्री, तू इस जनके आत्मा को नहीं रमण कराती, (प्रसन्न करती) यह निश्चय से जाना, इस कारण इस आत्मा से ममत्व भाव छोड़ दे। यह आत्मा ज्ञान-ज्योतिकर प्रगट हुआ है, इसलिये अपनी अनुभूति रूप स्त्री के साथ रमणस्वभावी है। हे जन के शरीर का पुत्र, तू इस जन के आत्मा से नहीं उत्पन्न हुआ, यह निश्चय से समझ। इस कारण इसमें ममता भाव छोड़। यह आत्मा ज्ञान-ज्योतिकर प्रगट हुआ है, इसलिये अपने आत्मा का यह आत्मा ही अनादि पुत्र है, और वह उसको प्राप्त होता है। इस प्रकार माता, पिता, स्त्री, पुत्रादि कुटुम्ब से अपना पीछा छुड़ावे। अथवा जो कोई जीव मुनि होना चाहता है, वह तो सब तरह

कुटुम्ब से विरक्त ही है, उसको कुटुम्ब से पूछने का कुछ कार्य ही नहीं रहता, परन्तु यदि कुटुम्ब से विरक्त होवे, और जब कुछ कहना पड़े, तब वैराग्य के कारण कुटुम्ब के समझाने को इस तरह के वचन निकलते हैं। यहाँ पर ऐसा नहीं समझना, कि यदि विरक्त होवे, तो कुटुम्ब को राजी करके ही होवे। कुटुम्ब यदि किसी तरह राजी न होवे, तब कुटुम्ब के भरोसे रहने से विरक्त कभी हो ही नहीं सकता। इस कारण कुटुम्ब के पूछने का नियम नहीं है। यदि कभी किसी जीव को मुनि-दशा धारण के समय कुछ कहना ही होवे, तो पूर्वोक्त प्रकार उपदेशरुप वचन निकलते हैं । उस तरह के वैराग्य रूप वचनों को सुनकर जो निकट-संसारी जीव कुटुम्ब में हों, वे भी विरक्त हो सकते हैं तथा इसके बाद सम्यग्दृष्टि जीव अपने स्वरूप को देखता है, जानता है, अनुभव करता है, अन्य समस्त ही व्यवहार भावों से अपने को भिन्न मानता है, और परभावरूप सभी शुभाशुभ क्रियाओं को हेयरूप जानता है, अंगीकार नहीं करता। लेकिन वही सम्यग्दृष्टि जीव पूर्व बंधे हुए कर्मों के उदय से अनेक प्रकार के विभाव (विकार) भावों स्वरूप परिणमता है, तो भी उन भावों से विरक्त है ; वह यह जानता है, कि जब तक इस अशुद्ध परिणति की स्थिति है, तब तक यह अवश्य होती है, इस कारण आकुलतारूप भावों को भी नहीं प्राप्त होता। यह सम्यग्दृष्टि जीव तो सकल द्रव्य भाव रूप विभावभावों का तभी त्याग कर चुका, जब इसके स्व पर विवेक रूप भेदविज्ञान प्रगट हुआ था, और तभी टंकोत्कीर्ण निजभाव भी अंगीकार किये। इसलिये सम्यग्दृष्टि को न तो कुछ त्यागने को रहा है, और न कुछ स्वीकार करने को ही है। परन्तु वही सम्यग्दृष्टि जीव चारित्रमोह के उदय से शुभ भावों रूप परिणमन करता है, उस परिणमन की अपेक्षा त्यागता है, और अंगीकार करता है। यही कथन दिखलाते हैं - प्रथम ही गुणस्थानों की परिपाटी से क्रम से अशुभ परिणति की हानि होती है, उसके बाद धीरे-धीरे शुभ परिणति भी छूटती जाती है। इस कारण पहले तो वह गृहवास कुटुम्ब का त्यागी होता है। पीछे शुभ राग के उदय से व्यवहार रत्नत्रयरूप पंचाचारों को अंगीकार करता है। यद्यपि ज्ञानभाव से समस्त ही शुभाशुभ क्रियाओं का त्यागी हैं, परन्तु शुभ राग के उदय से ही पंचाचारों का ग्रहण करता है । उसकी रीति बतलाते हैं- हे काल, विनय, उपधान, बहुमान, अनिह्नव, अर्थ, व्यंजन, तदुभयरूप आठ प्रकार ज्ञानाचार मैं तुझको जानता हूँ कि तू शुद्धात्म स्वरूप का निश्चय से स्वभाव नहीं है, तो भी मैं तब तक अंगीकार करता हूँ जब तक कि तेरे प्रसाद से शुद्ध आत्मा को प्राप्त न हो जाऊँ। अहो निःशंकितत्व, निःकांक्षितत्व, निर्विचिकित्सत्व, निर्मूढदृष्टित्व, उपबृंहण, स्थितिकरण, वात्सल्य, प्रभावनास्वरूप, दर्शनाचार; तू शुद्धातम का स्वरूप नहीं है, ऐसा मैं निश्चय से जानता हूँ, तो भी तुझको तब तक स्वीकार करता हूँ, जब तक तेरे प्रसाद से शुद्ध आत्मा को प्राप्त न हो जाऊँ। अहो मोक्ष मार्ग की प्रवृत्ति के कारण पंच महाव्रत, तीन गुप्ति पांच समिति रूप तेरह प्रकार चारित्राचार; मैं जानता हूँ कि निश्चय से तू शुद्धात्मा का स्वरूप नहीं है, तथापि तब तक अंगीकार करता हूँ, जब तक कि तेरे प्रसाद से शुद्धात्मा को प्राप्त न होऊँ। अहो अनशन, अवमौदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्तशासन, कायक्लेश, प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान, व्युत्सर्गस्वरूप बारह प्रकार तपाचार; मैं निश्चय से जानता हूँ कि तू शुद्धात्मा का स्वभाव नही हैं, परन्तु तो भी

तुझको तब तक स्वीकार करता हूँ, जब तक तेरे प्रसाद से शुद्धस्वरुप को प्राप्त न हो जाऊँ। अहो समस्त आचार की प्रवृत्ति के बढ़ाने में स्वशक्ति के प्रगट करने वाले वीर्याचार; मैं निश्चय से जानता हूँ कि तू शुद्धात्मा का स्वरूप नहीं है, परन्तु तो भी तुझको तब तक अंगीकार करता हूँ, जब तक कि तेरे प्रसाद (कृपा) से शुद्ध स्वरूप को प्राप्त न हो जाऊँ। इस प्रकार ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्यरूप पाँच प्रकार आचार को अंगीकार करता है ॥2॥

दीक्षा के योग्य कौन- उत्तरपुराण ग्रन्थ में आचार्य जिनसेन ने श्लोक 39, पर्व 58 में प्रव्रज्या दीक्षा की योग्यता गिनाते हुए कहा है कि कुल,गोत्र, शुद्ध होना चाहिए, चारित्र उत्तम होना चाहिए, सुमेधा हो, मुख सुन्दर हो, वही दीक्षा की पात्रता रखता है। योगसार प्राभृत में आचार्य अमितगति ने दीक्षा की योग्यता स्पष्ट करते हुए कहा है, कि जो मनुष्य शांत हो, तप के लिए समर्थ हो, शरीर से सुंदर अवयव वाला हो, वही दीक्षा ले सकता है। आचार्य जयसेन जी प्रवचनसार में टीका मे एक क्षेपक गाथा के माध्यम से कहा है

वण्णेसु तीसु एक्को कल्लाणेगो तवोसहो वयसा।
सुमहो कुछा रहिदो लिंगग्गहणे हवदि जोग्गो॥ 3/15, प्रवचनसार)

1. तीन वर्ण में से एक वर्ण का हो, 2. निरोग हो, 3. तप में समर्थ हो, 4. अति बालत्व व वृद्धत्व से रहित हो योग्य आयु का हो, 5. दुराचार आदि लोक अपवाद से रहित हो। परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी इन सभी योग्यताओं को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम 8 मार्च 1980 को मुनि दीक्षा द्रोणगिरि के पावन तीर्थ पर मुनिश्री समय सागरजी को दी। तदुपरान्त सागर शहर के मोराजी के विशाल प्रांगण में मुनि नियम सागरजी एवं मुनि योगसागरजी को 15 अप्रैल 1980 में दीक्षा दी। बस यह क्रम आगे बढ़ता ही गया अंतिम दीक्षा लेने का सौभाग्य बालक विद्याधर के बड़े भाई महावीर भैया सदलगा को प्राप्त हुआ। उनकी दीक्षा शिरपुर में 21 दिसम्बर 2022 को हुई जिनका नाम मुनि श्री उत्कृष्टसागर जी महाराज रखा गया। इस प्रकार आचार्यश्री ने 16 बार में 131 युवा, बाल ब्रह्मचारी, प्रतिभा सम्पन्न, स्वाध्यायी, अडिग प्रतिभा के धारी साधकों को दीक्षा यथाजात निर्ग्रन्थ रूप में दी।

सात राज्यों के कुल मुनिराजों की संख्या

राज्य मध्यप्रदेश के 17 जिले से 91 मुनिराज -

1. सागर जिले के 27 मुनिराज - मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज(सागर), गुप्तिसागरजी महाराज(गढ़ाकोटा), मुनिश्री सुधासागरजी महाराज(ईशुरवारा), मुनिश्री समतासागरजी महाराज(नन्हीं देवरी), मुनिश्री स्वभावसागरजी महाराज(नन्हीं देवरी), मुनिश्री मार्दवसागरजी महाराज(पठा), मुनिश्री अजितसागरजी महाराज(गढ़ाकोटा), मुनिश्री सुमतिसागरजी महाराज(दलपतपुर), मुनिश्री पद्मसागरजी महाराज(सागर), मुनिश्री कुन्थुसागरजी महाराज(पटना बुजुर्ग), मुनिश्री अरहसागरजी महाराज (मालथौन), मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज (पीपरा), मुनिश्री शैलसागरजी महाराज (टड़ा), मुनिश्री अचलसागरजी

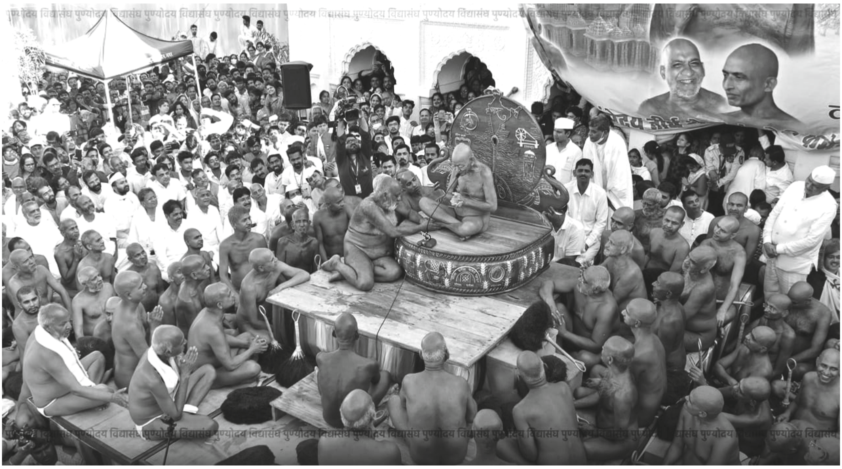

महाराज(सागर), मुनिश्री अतुलसागरजी महाराज(मण्डी बामौरा), मुनिश्री आनंदसागरजी महाराज(बण्डा), मुनिश्री निःस्वार्थसागरजी महाराज(सागर), मुनिश्री निरोगसागरजी महाराज(बण्डा), मुनिश्री निरामयसागरजी महाराज(बण्डा), मुनिश्री निराकुलसागरजी महाराज(खुरई), मुनिश्री निरुपमसागरजी महाराज(बीना), मुनिश्री निर्भीकसागरजी महाराज(रहली), मुनिश्री श्रमणसागरजी महाराज(सीहोरा), मुनिश्री संस्कारसागरजी महाराज(महाराजपुर), मुनिश्री ओंकारसागरजी महाराज(महाराजपुर), मुनिश्री निश्चिंतसागरजी महाराज, मुनिश्री निर्माणसागरजी महाराज।

2. जबलपुर जिले के 17 मुनिराज - मुनिश्री संयमसागरजी महाराज(कटंगी), मुनिश्री सरलसागरजी महाराज(नीमखेड़ा), मुनिश्री पवित्रसागरजी महाराज(जबलपुर), मुनिश्री प्रबुद्धसागरजी महाराज(जबलपुर), मुनिश्री प्रसादसागरजी महाराज(सीहोरा), मुनिश्री अभयसागरजी महाराज(पाटन), मुनिश्री प्रभातसागरजी महाराज(दर्शनी), मुनिश्री चन्द्रसागरजी महाराज(जबलपुर), मुनिश्री संभवसागरजी महाराज(पनागर), मुनिश्री निस्पक्षसागरजी महाराज(पनागर), मुनिश्री निस्पृहसागरजी महाराज(पनागर), मुनिश्री निस्पंदसागरजी महाराज(कटंगी), मुनिश्री निष्कामसागरजी महाराज(रांझी),

मुनिश्री निरीहसागरजी महाराज(रांझी), मुनिश्री निसर्गसागरजी महाराज(जबलपुर), मुनिश्री निस्पृहसागरजी महाराज(पनागर), मुनि श्री निर्मान्तसागरजी महाराज।

3. दमोह जिले के 6 मुनिराज - मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज(पथरिया), मुनिश्री निर्दोषसागरजी महाराज(तारादेही), मुनिश्री निर्लोभसागरजी महाराज(तारादेही), मुनिश्री निर्मोहसागरजी महाराज(दमोह), मुनिश्री नीरागसागरजी महाराज(पथरिया), मुनिश्री निरालससागर जी महाराज।

4. शहडोल जिले के 5 मुनिराज – मुनिश्री पुष्पदन्तसागरजी महाराज(बुढार), मुनिश्री महासागरजी महाराज(बुढार), मुनिश्री अनुभवसागरजी महाराज(बुढार), मुनिश्री विनम्रसागरजी महाराज(बुढार), मुनिश्री अगम्यसागरजी महाराज(बुढार)।

5. अशोकनगर जिले के 5 मुनिराज – मुनिश्री सुखसागरजी महाराज(मुंगावली), मुनिश्री विशदसागरजी महाराज(मुंगावली), मुनिश्री सौम्यसागरजी महाराज(मुंगावली), मुनिश्री निश्चलसागरजी महाराज(अशोकनगर), मुनिश्री निकलंकसागरजी महाराज(शाढौरा)।

6. विदिशा जिले के 5 मुनिराज – मुनिश्री वैराग्यसागरजी महाराज(सिरोंज), मुनिश्री निर्णयसागरजी महाराज(सिरोंज), मुनिश्री क्षीरसागरजी महाराज(गंजबासौदा), मुनिश्री शीतलसागरजी महाराज(विदिशा), मुनिश्री समरस सागरजी महाराज(गंजबासौदा)।

7. रायसेन जिले के 4 मुनिराज – मुनिश्री प्रवचनसागरजी महाराज(बेगमगंज), मुनिश्री पुराणसागरजी महाराज(बरेली), मुनिश्री धवलसागरजी महाराज(बेगमगंज), मुनिश्री निर्मदसागरजी महाराज(बेगमगंज)।

8. खरगोन जिले के 4 मुनिराज – मुनिश्री प्रशस्तसागरजी महाराज(सनावद), मुनिश्री प्रयोगसागरजी महाराज(सनावद), मुनिश्री प्रबोधसागरजी महाराज(सनावद), मुनिश्री मल्लिसागरजी महाराज (बड़वाह)

9. गुना जिले के 4 मुनिराज – मुनिश्री पार्श्वसागरजी महाराज(छीपोन), मुनिश्री निष्कंपसागरजी महाराज(गुना), मुनिश्री निस्सीमसागरजी महाराज (आरोन), मुनिश्री निर्लेपसागरजी महाराज।

10. देवास जिले के 5 मुनिराज – मुनिश्री विराटसागरजी महाराज(हाटपीपल्या), मुनिश्री विशालसागरजी महाराज(हाटपीपल्या), मुनिश्री दुर्लभसागरजी महाराज(अजनास), मुनिश्री निराकारसागरजी महाराज, मुनिश्री निशंकसागरजी महाराज।

11. नरसिंहपुर जिले के 2 मुनिराज – मुनिश्री प्रशान्तसागरजी महाराज (गोटेगाँव), मुनिश्री निराश्रवसागरजी महाराज।

12. छिन्दवाड़ा जिले के 1 मुनिराज – मुनिश्री निर्वेगसागरजी महाराज(छिंदवाड़ा)

13. टीकमगढ़ जिले के 1 मुनिराज – मुनिश्री निरापदसागरजी महाराज(टीकमगढ़)

14. सिवनी के जिले 1 मुनिराज – मुनिश्री नीरजसागरजी महाराज (छपारा)

15. इन्दौर जिले के 2 मुनिराज – धीरसागसागरजी महाराज (इन्दौर), मुनिश्री निरंजनसागर जी महाराज (इंदौर)।

16. हरदा जिले के 1 मुनिराज – मुनिश्री आगमसागरजी महाराज (हरदा)

17. बुढार जिले के 1 मुनिराज– मुनिश्री निर्ग्रन्थसागरजी महाराज।

कर्नाटक प्रांत के 10 – मुनिश्री समयसागरजी महाराज(सदलगा), मुनिश्री योगसागरजी

महाराज(सदलगा), मुनिश्री नियमसागरजी महाराज(सदलगा), मुनिश्री चेतनसागरजी महाराज(सदलगा), मुनिश्री चिन्मयसागरजी महाराज(जुगूल), मुनिश्री पुण्यसागरजी महाराज(येलवट्टी), मुनिश्री पायसागरजी महाराज(हडससी), मुनिश्रीऋषभसागरजी महाराज(नेल्लेकार), मुनिश्री चन्द्रप्रभसागरजी महाराज(तेज), मुनिश्री उत्कृष्टसागरजी महाराज (सदलगा)।

महाराष्ट्र प्रांत के 15 – मुनिश्री समाधिसागरजी महाराज(कुसुम्बा), मुनिश्री उत्तमसागरजी महाराज(अब्दुलघाट), मुनिश्री पावनसागरजी महाराज(कानड़वाड़ी), मुनिश्री अपूर्वसागरजी महाराज(समडोली), मुनिश्री विनीतसागरजी महाराज(महातपुर),
मुनिश्री अक्षयसागरजी महाराज(शिरोल), मुनिश्री सुपार्श्वसागरजी महाराज(समडोली), मुनिश्री नमिसागरजी महाराज(बस्तवाड़ा), मुनिश्री नेमिसागरजी महाराज(सिरगुप्पी), मुनिश्री वीरसागरजी महाराज(नागपुर), मुनिश्री पुनीतसागरजी महाराज(औरंगाबाद), मुनिश्री वैराग्यसागरजी महाराज(कोल्हापुर), मुनिश्री अविचलसागरजी महाराज (कोल्हापुर), मुनिश्री सहजसागरजी महाराज(कुंभोज), मुनिश्री निस्संगसागरजी महाराज(नागपुर) ।

गुजरात प्रांत के 3– मुनिश्री ओमसागरजी महाराज(मोरवी), मुनिश्री उपशमसागरजी महाराज(महुआ), मुनिश्री प्रशमसागरजी महाराज(महुआ)।

उत्तप्रदेश प्रांत के 9 – मुनिश्री प्रणम्यसागरजी महाराज(सिरसागंज), मुनिश्री अभिनंदनसागरजी महाराज(सिरसागंज), मुनिश्री श्रेयांससागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री पूज्यसागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री विमलसागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री अनन्तसागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री धर्मसागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री शान्ति सागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री भावसागरजी महाराज(ललितपुर)।

राजस्थान प्रांत के 2 – मुनिश्री शीतलसागरजी महाराज(पांचवां), मुनिश्री संधानसागरजी महाराज(जयपुर)।

झारखण्ड प्रांत के 1 – मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज (हजारीबाग)।

कुल 131 मुनिराज का प्रदेश वार विवरण इस प्रकार है।

आर्यिका दीक्षा का उद्घाटन– जिन बहिनों ने 1976-78 के बीच आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया था उनकी दीक्षा 10 फरवरी 1987 तक नहीं हो पायी थी। उनमें आर्यिका दीक्षा का प्रारंभ आर्यिका गुरुमति के साथ हुआ। आर्यिका दीक्षा 1987, 10 फरवरी को दी। कतार में लगी दीक्षार्थी बहिनों का समूह वर्षों तक प्रतीक्षा करता रहा। पूज्यश्री उनसे मात्र यही कहते रहे कि भावना रखो, साधना करो। दीक्षा देने का कार्य विधिपूर्वक 13 बार किया। सर्वाधिक दीक्षार्थी बहिनें 13 फरवरी 2006 में दिखी 58 बहिनों ने एक साथ आर्यिका दीक्षा कुण्डलपुर में ली। कुण्डलपुर में अंतिम दीक्षा लेने का
सौभाग्य श्रीमती प्रभा सिंघई को प्राप्त हुआ जिनका नाम आर्यिका भक्तिमती माताजी रखा गया।

कुल मिलाकर 13 दीक्षा समारोहों में 172 आर्यिका दीक्षाएं सम्पन्न हुई । सुशिक्षित, प्रतिभावान, बाल ब्रह्मचारी बहिनें संयममार्ग पर आगे बढ़ गई जो आज गुरु की आज्ञा व निर्देशन में रहते हुए संघ व्यवस्था के कारण गुरु से दूर रहकर समाज में खूब प्रभावना साधना कर रही है। जो उत्कृष्ट स्वाध्याय से आगम के गूढ़ विषय समय-समय पर समाज को परोसती रहती हैं।

सात राज्यों के कुल आर्यिकाओं की संख्या

राज्य मध्यप्रदेश के 17 जिले से 146 आर्यिकायें-

1. सागर जिले की 57 - आर्यिकाश्री गुरुमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री दृढ़मति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री मृदुमति माताजी(रहली), आर्यिकाश्री ऋजुमति माताजी (सागर), आर्यिकाश्री गुणमति माताजी(शाहगढ़), आर्यिकाश्री जिनमति माताजी(शाहगढ़), आर्यिकाश्री निर्णयमति माताजी(महाराजपुर), आर्यिकाश्री विलक्षणामति माताजी(टड़ा), आर्यिकाश्री धारणामति माताजी(शाहगढ़), आर्यिकाश्री प्रभावनामति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री भावनामति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री आदर्शमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री आलोकमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री अनुभवमति माताजी (पिण्डरुआ), आर्यिकाश्री निकलंकमति माताजी(खिमलासा), आर्यिकाश्री पुराणमति माताजी(सनाई बोरिया), आर्यिकाश्री अधिगममति माताजी(अनंतपुरा), आर्यिकाश्री अनुगममति माताजी(बीना), आर्यिकाश्री सूत्रमति माताजी(बण्डा, आर्यिकाश्री सविनयमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री संयममति माताजी(नन्हीं देवरी), आर्यिकाश्री समयमति माताजी(बीना), आर्यिकाश्री शीतलमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री विशुद्धमति माताजी(केवलारी), आर्यिकाश्री साकारमति माताजी(जैतपुर), आर्यिकाश्री शांतमति माताजी(मंडीबामौरा), आर्यिकाश्री सुशांतमति माताजी(मंडीबामौरा), आर्यिकाश्री सदयमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री उपशांतिमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री अमूल्यमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री उन्नतमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री आलोल्यमति माताजी(टड़ा), आर्यिकाश्री अनमोलमति माताजी(टड़ा), आर्यिकाश्री अचलमति माताजी(कंदवा), आर्यिकाश्री अवगममति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री स्वस्थमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री वात्सल्यमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री कर्त्तव्यमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री ध्येयमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री पृथ्वीमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री पुनीतमति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री विनीतमति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री मेरूमति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री आप्तमति माताजी (बरा), आर्यिकाश्री ध्यानमति माताजी(टड़ा), आर्यिकाश्री अवायमति माताजी (जरुआखेड़ा), आर्यिकाश्री पारमति माताजी(बहेरिया), आर्यिकाश्री आगतमति माताजी(गढ़ाकोटा), आर्यिकाश्री श्रुतमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री स्वभावमति माताजी(नन्हीं देवरी), आर्यिकाश्री विनयमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री समितिमति माताजी(शाहपुर),

आर्यिकाश्री परममति माताजी(कर्रापुर), आर्यिकाश्री चारित्रमति माताजी(जैसीनगर), आर्यिकाश्री श्रद्धामति माताजी(जैसीनगर), आर्यिकाश्री उत्कर्षमति माताजी(जैतपुर), आर्यिकाश्री भक्तिमति माताजी (खुरई)।

2. जबलपुर जिले की 27 - आर्यिकाश्री तपोमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री पावनमति माताजी(पाटन), आर्यिकाश्री शुभ्रमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री निर्मलमति माताजी(कटंगी), आर्यिकाश्री अंतरमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री अविचलमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री अक्षयमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री अपूर्वमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री अतिशयमति माताजी(कटंगी), आर्यिकाश्री अकलंकमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री आगममति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री कैवल्यमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री निर्वेगमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री शांतिमति माताजी(पनागर), आर्यिकाश्री सतर्कमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री सुशीलमति माताजी(चरगँवा), आर्यिकाश्री शैलमति माताजी(बरेला), आर्यिकाश्री सुसिद्धमति माताजी(शहपुरा), आर्यिकाश्री सौम्यमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री आराध्यमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री गन्तव्यमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री निकटमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री निर्वाणमति माताजी(चरगँवा),

आर्यिकाश्री मार्दवमति माताजी(चरगँवा), आर्यिकाश्री मंगलमति माताजी(चरगँवा), आर्यिकाश्री अदूरमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री मननमति माताजी(रांझी)।

3. दमोह जिले की 15 - आर्यिकाश्री सत्यमति माताजी(हिनौती), आर्यिकाश्री प्रशान्तमति माताजी(पटेरा), आर्यिकाश्री अनुत्तरमति माताजी(पिपरिया), आर्यिकाश्री विपुलमति माताजी(तेंदूखेड़ा), आर्यिका सहजमति माताजी(पथरिया), आर्यिकाश्री सकलमति माताजी(हिनौती), आर्यिकाश्री ओंकारमति माताजी(पिपरिया), आर्यिकाश्री अचिन्त्यमति माताजी(वनगाँव), आर्यिकाश्री आज्ञामति माताजी(अभाना), आर्यिकाश्री असीममति माताजी(पथरिया), आर्यिकाश्री गौतममति माताजी(पथरिया), आर्यिकाश्री अगाधमति माताजी(पिपरिया), आर्यिकाश्री धवलमति माताजी(पथरिया), आर्यिकाश्री अमितमति माताजी(दमोह), आर्यिकाश्री चेतनमति माताजी (सांगा)।

4. अशोकनगर जिले की 10 - आर्यिकाश्री वैराग्यमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री अनुग्रहमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री अनर्घमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री आनंदमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री मुदितमति माताजी(शाढौरा), आर्यिकाश्री अमंदमति माताजी(मुंगावली), आर्यिकाश्री समुन्नतमति माताजी(खजुरिया), आर्यिका शास्त्रमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री सुधारमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री उचितमति माताजी(अशोकनगर)।

5. गुना जिले की 9 - आर्यिकाश्री मधुरमति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री प्रसन्नमति

माताजी(गुना), आर्यिकाश्री प्रशममति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री सरलमति माताजी (गुना), आर्यिकाश्री शीलमति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री तथ्यमति माताजी(गुना), आर्यिकापथ्यमति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री संस्कारमति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री संयतमति माताजी कुंभराज(कुंभराज)।

6. विदिशा जिले की 4 - आर्यिकाश्री सुनयमति माताजी(विदिशा), आर्यिकाश्री सिद्धमति माताजी(विदिशा), आर्यिकाश्री सूक्ष्ममति माताजी(सिरोंज), आर्यिकाश्री तथामति माताजी(विदिशा)।

7. नरसिंहपुर जिले की 6 - आर्यिकाश्री अमूर्तमति माताजी(नरसिंहपुर), आर्यिकाश्री अखण्डमति माताजी(गोटेगाँव), आर्यिकाश्री अभेदमति माताजी(गोटेगाँव), आर्यिकाश्री संवेगमति माताजी(गोटेगाँव), आर्यिकाश्री शाश्वतमति माताजी(नरसिंहपुर), आर्यिकाश्री अविकारमति माताजी(तेन्दूखेड़ा)।

8. मंडला जिले की 5 - आर्यिकाश्री कुशलमति माताजी(पिंडरई), आर्यिकाश्री शुक्लमति माताजी(पिंडरई), आर्यिकाश्री चिंतनमति माताजी(पिंडरई), आर्यिकाश्री सिद्धांतमति माताजी(पिंडरई), आर्यिकाश्री उदारमति माताजी(पिंडरई)।

9. सतना जिले की 4 - आर्यिका श्री अनंतमति माताजी(सतना), आर्यिकाश्री विजितमति माताजी(सतना), आर्यिकाश्री चैत्यमति माताजी(सतना), आर्यिकाश्री निसर्गमति माताजी(नागौद)।

10. टीकमगढ़ जिले की 2 - आर्यिकाश्री अनुनयमति माताजी(लार), आर्यिकाश्री विशदमति माताजी(टीकमगढ़)।

11. रायसेन जिले की 1 - आर्यिकाश्री एकत्वमति माताजी (नई गाडिया)

12. झाबुआ जिले की 1 - आर्यिकाश्री विमलमति माताजी (झाबुआ)

13. कटनी जिले की 1 - आर्यिकाश्री सत्यार्थमति माताजी(कटनी)

14. छतरपुर जिले की 1 - आर्यिकाश्री शोधमतिमति माताजी (छतरपुर)

15. शिवपुरी जिले की 1 - आर्यिकाश्री विनतमति माताजी (शिवपुरी)

16. अनुपपूर जिले की 1 - आर्यिकाश्री अनुपममति माताजी (अनूपपुर)

17. छिंदवाड़ा जिले की-1 - आर्यिकाश्री संतुष्टमति माताजी (छिंदवाड़ा)

कर्नाटक प्रांत की 3 - आर्यिकाश्री निष्काममति माताजी(जुगूल), आर्यिकाश्री विरतमति माताजी (जुगूल)।

महाराष्ट्र प्रांत की 6 - आर्यिकाश्री निर्वाणमति माताजी (सुकली), आर्यिकाश्री उद्योतमति माताजी(काटोल), आर्यिकाश्री संवरमति माताजी(नागपुर), आर्यिकाश्री निर्मदमति माताजी(नागपुर), आर्यिकाश्री परमार्थमति माताजी (दिग्रस), आर्यिकाश्री विदेहमति

माताजी(नागपुर)।

दिल्ली प्रांत की 2 – आर्यिकाश्री अकम्पमति माताजी(दिल्ली), आर्यिकाश्री आत्ममति माताजी (दिल्ली)।

उत्तप्रदेश प्रांत की 5 – आर्यिकाश्री स्वाध्यायमति माताजी(मैनपुरी), आर्यिकाश्री नम्रमति माताजी(ललितपुर), आर्यिकाश्री विनम्रमति माताजी(ललितपुर), आर्यिकाश्री अतुलमति माताजी(ललितपुर), अर्यिकाश्री लक्ष्यमति माताजी (ललितपुर)।

राजस्थान प्रांत की 3 – आर्यिकाश्री पूर्णमति माताजी(डूंगरपुर), आर्यिकाश्री श्वेतमति माताजी(बागीदौरा), आर्यिका जागृतमति माताजी(कुचामन)।

छत्तीसगढ़ प्रांत की 6 – आर्यिकाश्री उज्जवलमति माताजी(दुर्ग), आर्यिकाश्री साधुमति माताजी(रायपुर), आर्यिकाश्री साधनामति माताजी(रायपुर), आर्यिकाश्री दुर्लभमति माताजी(दुर्ग), आर्यिकाश्री सारमति माताजी(डोंगरगाँव), आर्यिक ध्रुवमति माताजी(कासांवेल)

तमिलनाडु प्रांत की 2 – आर्यिकाश्री उपशममति माताजी(चेय्यार), आर्यिकाश्री संगतमति माताजी (बलाथि)

कुल172 आर्यिकाओं का प्रदेश वार विवरण इस प्रकार है।

आचार्यश्री ने मुनि आर्यिका दीक्षा देने के पहले सबसे पहले 1977 में 10 जुलाई, रविवार एक **एलक दीक्षा** ऐलक दर्शनसागर जी को दी। उन्होंने मुनि दीक्षा की प्रार्थना की परन्तु आचार्यश्री ने एलक दर्शनसागरजी को मुनि दीक्षा नहीं दी । परिणाम यह निकला कि उन्होंने आचार्य विमलसागर जी से मुनि दीक्षा ली। आचार्यश्री ने दीक्षा देने का क्रम जारी रखा और 24 अवसर पर एलक दीक्षा देकर 60 ऐलक साधकों को मोक्षमार्ग पर लगाया। अंतिम एलक दीक्षा लेने का सौभाग्य एलक श्री धैर्यसागर महाराज जी को कुण्डलपुर महोत्सव के समय 01 मार्च 2022 को मिला। प्रदेशवार विवरण इस प्रकार है **मध्यप्रदेश 41 एलक दीक्षायें दी जिसमें सागर जिले के सर्वाधिक 1 से 18-18 एलक, जबलपुर जिले 19-26-8, नरसिंहपुर जिले के 27-28-2, दमोह जिले के 2- 29-30, मंडला जिले के 2- 31-32, खरगोन जिले के 3- 33-35, छतरपुर जिले के 1- 36, सिवनी जिले के 1- 37, छिंदवाडा जिले के 1-38, विदिशा जिले के 1-39, रायसेन जिले के 1-40 अशोकनगर जिले के 1-41**

01. एलक श्री क्षमासागरजी- सागर (म.प्र.), 02. एलक श्री परमसागरजी (मुनि सुधासागरजी)- ईशुरवारा सागर (म.प्र.), 03. एलक श्री निःशंकसागरजी- बंडा सागर (म.प्र.), 04. एलक श्री समतासागरजी-नन्ही देवरी सागर (म.प्र.), 05. एलक श्री दयासागरजी- बंडा सागर (म.प्र.), 06. एलक श्री सम्यक्तवसागर जी- बंडा सागर (म.प्र.),

07. एलक श्री मार्दवसागरजी- पठा सागर (म.प्र.), 08. एलक श्री निश्चयसागरजी- जैसीनगर सागर (म.प्र.), 09. एलक श्री निर्भयसागरजी- धवौली सागर (म.प्र.), 10. एलक श्री सिद्धांतसागर जी- गढ़ाकोटा सागर (म.प्र.), 11. एलक श्री सम्पूर्णसागरजी- टड़ा सागर (म.प्र.),12. एलक श्री प्रभावसागरजी- शाहगढ़ सागर (म.प्र.), 13. एलक श्री प्रज्ञासागरजी (मुनि श्री अजितसागर जी)- गढ़ाकोटा सागर (म.प्र.),14.एलक श्री गुप्तिसागरजी- गढ़ाकोटा सागर (म.प्र.),15. एलक श्री स्वभावसागरजी-नन्ही देवरी सागर (म.प्र.), 16. एलक श्री पुराणसागरजी- टड़ा सागर (म.प्र.), 17.एलक श्री विवेकानन्दसागरजी- देवरी सागर (म.प्र.), 18. एलक श्री निजानंद सागर- देवरी सागर (म.प्र.), 19. एलक श्री संयमसागरजी- कटंगी जबलपुर (म.प्र.), 20. एलक भावसागरजी (मुनि सरलसागर)- नीमखेड़ा जबलपुर (म.प्र.), 21. एलक श्री अभयसागरजी- पाटन जबलपुर (म.प्र.), 22. एलक श्री चन्द्रसागरजी महाराज जबलपुर (म.प्र.) 23. एलक श्री मंगलसागरजी- जबलपुर (म.प्र.), 24.एलक श्री प्रबुद्धसागरजी- जबलपुर (म.प्र.), 25.एलक श्री प्रभातसागरजी- दर्शनी सिहोरा जबलपुर (म.प्र.), 26. एलक श्री धैर्यसागरजी- जबलपुर (म.प्र.), 27. एलक श्री करुणासागरजी- सगौरिया नरसिंहपुर (म.प्र.), 28. एलक श्री प्रशांतसागरजी- गोटेगांव नरसिंहपुर (म.प्र.), 29. एलक श्री आर्जवसागरजी- फुटेराकला दमोह (म.प्र.), 30. एलक श्री उदारसागरजी- बांसा दमोह (म.प्र.), 31. एलक श्री वात्सल्य सागरजी- पिडरई मण्डला (म.प्र.), 32. एलक श्री पूर्णसागरजी- मण्डला (म.प्र.), 33. एलक श्री प्रशस्तसागरजी- सनावद खरगोन (म.प्र.), 34. एलक श्री प्रयोगसागरजी- सनावद खरगोन (म.प्र.), 35. एलक श्री प्रबोधसागरजी- सनावद खरगोन (म.प्र.), 36. एलक श्री विनयसागरजी- वेनीगंज छतरपुर (म.प्र.), 37. एलक श्री नम्रसागरजी- घनौरा सिवनी (म.प्र.), 38. एलक श्री निर्वेगसागरजी- छिंदवाड़ा (म.प्र.), 39. एलकश्री निर्णयसागरजी- मुरारिया सिरोंज विदिशा (म.प्र.), 40.एलक श्री प्रवचनसागरजी- बेगमगंज रायसेन (म.प्र.), 41. एलक श्री आनंदसागरजी- तारई अशोकनगर (म.प्र.)

उत्तरप्रदेश राज्य के 2 - 42-43

42. एलक श्री रयणसागरजी- ललितपुर (उ.प्र.), 43. एलक श्री प्रणम्य सागरजी- मोगांव मेनपुरी (उ.प्र.)

छत्तीसगढ़ राज्य के -2- 44-45

44. एलक श्री प्रशमसागरजी- दुर्ग छत्तीसगढ़, 45.एलक श्री ध्यानसागरजी-भिलाई दुर्ग छत्तीसगढ़

झारखंड राज्य के -4- 46

46. एलक श्री प्रमाणसागरजी- हजारीबाग झारखंड

राजस्थान राज्य के - 1 - 47

47. एलक श्री संवेगसागरजी- पांचवा नागौर (राजस्थान)

महाराष्ट्र राज्य के- 6 - 48 - 53

48. एलक श्री शीलसागरजी- गोंदिया महाराष्ट्र, 49. एलक श्री समाधिसागरजी- धूलिया महाराष्ट्र, 50.एलक श्री अपूर्वसागरजी- समडोली सागली (महाराष्ट्र), 51. एलक श्री अक्षयसागर जी- शिरोल कोल्हापुर (महाराष्ट्र). 52.एलक श्री विनीतसागरजी- महातपुर सोलापुर (महाराष्ट्र) 53. एलक श्री उपशमसागरजी- आलाम शिरोल कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

कर्नाटक राज्य के - 8 - 54 - 61

54. एलक श्री दर्शनसागर जी-तेरटाल बीजापुर कर्नाटक, 55. एलक श्री योगसागर जी- सदलगा बेलगांव कर्नाटक, 56. एलक श्री नियमसागरजी- सदलगा बेलगांव कर्नाटक, 57. एलक श्री समयसागरजी- सदलगा बेलगांव कर्नाटक, 58.एलक श्री सुबोधसागरजी (मुनि चेतनसागर)- सदलगा बेलगांव कर्नाटक, 59.एलक श्री पुण्यसागरजी- शेलवट्टी कर्नाटक, 60.एलक श्री पायसागरजी- हड़ससोग्राम शिवमोग्गा कर्नाटक, 61.एलक श्री शैलसागर जी (मुनि श्री वृषभसागरजी)- नेल्लेकाऊ मंगलूर कर्नाटक।

आचार्यश्री के पावन कर कमलों से **क्षुल्लक दीक्षा** का क्रम 12 दिसम्बर 1975 से हुआ। पवित्र तीर्थ सोनागिरि पर पूज्यश्री ने चार साधक क्षुल्लक योगसागर, क्षुल्लक नियमसागर, क्षुल्लक समयसागर, क्षुल्लक प्रवचनसागर ने मोक्षमार्ग पर अपना प्रथम चरणपात किया था। तथा अंतिम दीक्षा लेने का सौभाग्य क्षुल्लक आह्लादसागर जी को मिला जिनकी दीक्षा 06 अगस्त 2023 को डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़ में हुई। यह क्रम आगे बढ़ता गया और 21 चरणों में गुरुजी ने 141 बाल ब्रह्मचारी साधकों को क्षुल्लक दीक्षा प्रदेशवार विवरण इस प्रकार हैं। **मध्यप्रदेश-100 शिष्यों में सागर जिले के -30 (1-30) जबलपुर जिले के -22 (31-52) दमोह जिले के -12 (53-64), रायसेन जिल के -5 (65-69), नरसिंहपुर जिले के -4 (70-73), विदिशा जिले के -4 (74-77), अशोकनगर जिले के -4 (78-81), खरगोन जिले के -3 (82-84) देवास जिले के -2 (85-86), मंडला जिले के -2 (87-88), गुना जिले के -2 (89-90), टीकमगढ़ जिले के -1 (91), छतरपुर जिले के -1 (92), सिवनी जिले के -1 (93), शिवपुरी जिले के -1 (94), छिंदवाड़ा जिले के -1 (95), शहडोल जिले के -1 (96), इंदौर जिले के -1 (97), सतना जिले के -1 (98), ग्वालियर जिले के -1 (99), भोपाल जिले के -1 (100), महाराष्ट्र के -1 0(101-110), उत्तरप्रदेश के -8 (111-118), कर्नाटक के -8 (119-126), राजस्थान के -5 (127-131), बिहार के -3 (132-134), छत्तीसगढ़ के -2 (135-136), पंजाब के -2 (137-138), हरियाणा के -**

1 (139), पश्चिमबंगाल के -1 (140), झारखंड के -1 (141)।

01.क्षुल्लक श्री क्षमासागर जी-सागर (म.प्र.), 02. क्षुल्लक श्री परमसागर जी (मुनिश्री सुधा सागरजी)- ईशरवारा सागर (म.प्र.), 03. क्षुल्लक श्री सम्यक्त्वसागर जी-बंडा सागर (म.प्र.), 04. क्षुल्लक श्री सुगुप्तिसागर जी-बंडावेलई जिला सागर (म.प्र.), 05. क्षुल्लक श्री निश्चयसागर जी-जैसी सागर (म.प्र.), 06. क्षुल्लक श्री निर्भयसागर जी-धवोली सागर (म.प्र.), 07. क्षुल्लक श्री सिद्धांतसागर जी- गढ़ाकोटा सागर (म.प्र.), 08. क्षुल्लक श्री सम्पूर्णसागर जी- टड़ा सागर (म.प्र.), 09. क्षुल्लक श्री धर्मसागर जी - सागर (म.प्र.), 10. क्षुल्लक श्री प्रभावसागर जी-शाहगढ़ सागर (म.प्र),11. क्षुल्लक श्री मौनसागरजी- मंडीबामौरा जिला सागर (म.प्र.), 12. क्षुल्लक श्री अटलसागरजी- जैसीनगर सागर (म.प्र.),13. क्षुल्लक श्री वर्धनसागरजी- सागर (म.प्र.), 14. क्षुल्लक श्री सुगमसागरजी- शाहपुर, गणेशगंज जिला सागर (म.प्र.),15. क्षुल्लकश्री शुक्लसागरजी-जैसीनगर जिला सागर (म.प्र.), 16. क्षुल्लक श्री श्वेतसागरजी- गुहारी परसोरिया जिला सागर (म.प्र.),17.क्षुल्लक श्री भाग्यसागरजी-सहजपुर जिला सागर (म.प्र.), 18.क्षुल्लक श्री औचित्यसागरजी- सिहोरा जिला सागर (म.प्र.), 19. क्षुल्लक श्री गहनसागरजी-सागर (म.प्र.), 20. क्षुल्लक श्री विरलसागरजी- सागर (म.प्र.), 21. क्षुल्लक श्री जागृतसागरजी- सागर (म.प्र.), 22. क्षुल्लक श्री स्वरूपसागरजी- शाहगढ सागर (म.प्र.), 23. क्षुल्लक श्री निर्धूमसागरजी-खुरई जिला सागर (म.प्र.), 24. क्षुल्लक श्री परमसागरजी-खमकुआ जिला सागर (म.प्र.), 25. क्षुल्लक श्री मार्दवसागर जी-पठा सागर (म.प्र.), 26. क्षुल्लक श्री मगनसागरजी- खिमलासा सागर (म.प्र.), 27. क्षुल्लक श्री उचितसागरजी- सुरखी जिला सागर (म.प्र.), 28. क्षुल्लक श्री प्रज्ञासागर जी (मुनिश्री अजित सागरजी)- गढ़ाकोटा सागर (म.प्र.), 29. क्षुल्लक श्री पुराणसागर जी-टड़ा सागर (म.प्र.), 30. क्षुल्लक श्री चैत्यसागरजी- महाराजपुर जिला सागर (म.प्र), 31. क्षुल्लक श्री संयमसागर जी-कटंगी जबलपुर (म.प्र.), 32. क्षुल्लक श्री भावसागर जी (मुनिश्री सरल सागरजी)-नीमखेड़ा जबलपुर (म.प्र.), 33. क्षुल्लक श्री मंगलसागर जी-जबलपुर (म.प्र.), 34. क्षुल्लक श्री प्रसन्नसागर जी-जबलपुर (म.प्र.), 35. क्षुल्लक श्री पवित्रसागर जी-जबलपुर (म.प्र.), 36. क्षुल्लक श्री गम्भीरसागर जी-जबलपुर (म.प्र.), 37.क्षुल्लक श्री प्रसादसागर जी- सिहोरा जबलपुर (म.प्र.), 38.क्षुल्लक श्री प्रभातसागर जी- दर्शनी सिहोरा जबलपुर (म.प्र.), 39.क्षुल्लक श्री परितसागर जी (मुनिश्री संभव सागरजी)- पनागर जबलपुर (म.प्र.), 40. क्षुल्लकश्री तत्वसागरजी- जबलपुर (म.प्र.), 41. क्षुल्लक श्री तत्वार्थसागरजी- जबलपुर (म.प्र.), 42. क्षुल्लक श्री तात्पर्यसागरजी-बोलखेड़ा जिला जबलपुर (म.प्र.), 43. क्षुल्लकश्री सुधर्मसागरजी-जबलपुर (म.प्र.), 44.क्षुल्लक धैर्यसागर जी-जबलपुर (म.प्र.),

45.क्षुल्लक श्री चंद्रसागर जी-जबलपुर (म.प्र.), 46.क्षुल्लक श्री संगतसागरजी- जबलपुर (म.प्र.), 47. क्षुल्लक श्री औचित्यसागरजी- जबलपुर (म.प्र.), 48. क्षुल्लक श्री समकित सागर-शहपुरा भिटोनी जिला जबलपुर (म.प्र.), 49. क्षुल्लक श्री विरतसागरजी- जबलपुर (म.प्र.), 50. क्षुल्लक श्री भास्वतसागरजी-जबलपुर (म.प्र.), 51. क्षुल्लक श्री उद्यमसागरजी- कटंगी जबलपुर (म.प्र.), 52.क्षुल्लक श्री प्रबुद्धसागर जी-जबलपुर (म.प्र.), 53.क्षुल्लक श्री सौम्यसागर जी-झलौन तेन्दूखेड़ा दमोह (म.प्र.), 54. क्षुल्लक श्री निसर्गसागर जी-वनगांव जिला दमोह (म.प्र.), 55.क्षुल्लक श्री उदारसागर जी-बासा तारखेड़ा दमोह (म.प्र.), 56.क्षुल्लक श्री अनुग्रहसागरजी-पिपरिया साहनी बादकपुर जिला दमोह (म.प्र.), 57. क्षुल्लक श्री विनयसागरजी- बांदकपुर जिला दमोह (म.प्र.), 58. क्षुल्लक श्री अमापसागरजी-दमोह (म.प्र.), 59. क्षुल्लक श्री आगतसागरजी-दमोह (म.प्र.), 60. क्षुल्लक श्री स्वास्तिकसागरजी-दमोह (म.प्र.), 61. क्षुल्लक श्री वरिष्ठसागरजी- पथरिया दमोह (म.प्र.), 62. क्षुल्लक श्री समन्वयसागरजी-तारादेही दमोह (म.प्र.), 63. क्षुल्लक श्री चारित्रसागर जी-दमोह (म.प्र.), 64.क्षुल्लक श्री आर्जवसागर जी-फुटेराकला दमोह (म.प्र.), 65. क्षुल्लक श्री उपकार सागरजी-सोडरपुर जिला रायसेन (म.प्र.), 66. क्षुल्लक श्री साम्यसागरजी-सिलवानी जिला रायसेन (म.प्र.), 67. क्षुल्लक श्री वरदान सागरजी-नई गड़िया बेगमगंज जिला रायसेन (म.प्र.), 68. क्षुल्लक श्री भारतसागरजी-सिलवानी रायसेन (म.प्र.), 69. क्षुल्लक श्री प्रवचनसागर जी- बेगमगंज रायसेन (म.प्र.), 70. क्षुल्लक श्री संयोगसागरजी- तेन्दूखेड़ा सगौनी जिला नरसिंहपुर(म.प्र.), 71.क्षुल्लक श्री प्रशांतसागर जी- गोटेगांव नरसिंहपुर (म.प्र.), 72. क्षुल्लक श्री चिद्रूपसागरजी-गोटेगांव नरसिंहपुर (म.प्र.), 73. क्षुल्लकश्री आरोग्यसागरजी- तेन्दूखेड़ा जिला नरसिंहपुर (म.प्र.), 74. क्षुल्लक श्री कैवल्यसागरजी-विदिशा (म.प्र.), 75. क्षुल्लक श्री गरिष्ठसागरजी-विदिशा (म.प्र.), 76. क्षुल्लक श्री सविनयसागरजी-गंजबासौदा विदिशा (म.प्र.), 77.क्षुल्लक श्री निर्णयसागर जी-मुरारिया सिरोंज विदिशा (म.प्र.), 78. क्षुल्लक श्री प्रशमसागरजी- शाढ़ौरा जिला अशोकनगर (म.प्र.), 79. क्षुल्लक श्री मननसागरजी- मुंगावली अशोकनगर (म.प्र.), 80. क्षुल्लक श्री आनंदसागर जी-तराई अशोकनगर (म.प्र.), 81. क्षुल्लक श्री शमदमसागरजी-अशोकनगर (म.प्र.), 82. क्षुल्लक श्री प्रशस्तसागर जी-सनावद खरगोन (म.प्र.), 83.क्षुल्लक श्री प्रयोगसागर जी-सनावद खरगोन (म.प्र.), 84. क्षुल्लक श्री प्रबोधसागर जी-सनावद खरगोन (म.प्र.), 85. क्षुल्लक श्री स्वाध्यायसागर जी- खातेगांव जिला देवास (म.प्र.), 86. क्षुल्लक श्री समादरसागरजी- खातेगांव देवास (म.प्र.), 87. क्षुल्लक श्री वात्सल्यसागर जी-पिंडरई मण्डला (म.प्र.), 88. क्षुल्लक श्री पूर्णसागरजी - मण्डला (म.प्र.), 89. क्षुल्लक श्री मंथनसागरजी- गुना (म.प्र.), 90. क्षुल्लक श्री

विचारसागरजी- गुना (म.प्र.), 91.क्षुल्लक श्री नयसागर जी-बड़ागांव धासन जिला टीकमगढ़ (म.प्र.), 92. क्षुल्लक श्री विनयसागर जी-बेनीगंज छतरपुर (म.प्र.), 93. क्षुल्लक श्री नम्रसागर जी-धनौरा सिवनी (म.प्र.), 94. क्षुल्लक श्री पुनीतसागर जी-खनियाधाना जिला शिवपुरी (म.प्र.), 95. क्षुल्लक श्री निर्वेगसागर जी-छिंदवाड़ा (म.प्र.), 96. क्षुल्लक श्री अपारसागरजी-शहडोल (म.प्र.), 97. क्षुल्लक श्री सुदृढ़सागरजी- इंदौर (म.प्र.), 98. क्षुल्लक श्री समुचितसागरजी- सतना (म.प्र.), 99. क्षुल्लक श्री अनुनयसागरजी-ग्वालियर (म.प्र.), 100. क्षुल्लक श्री हीरकसागरजी- भोपाल (म.प्र.)।

महाराष्ट्र- 10

101. क्षुल्लक श्री शीलसागर जी- गोंदिया महाराष्ट्र, 102. क्षुल्लक श्री उत्तमसागर जी-शिरोल जिला कोल्हापुर महाराष्ट, 103. क्षुल्लक श्री अपूर्वसागर जी- समडोली सांगली महाराष्ट्र, 104. क्षुल्लक श्री अक्षयसागर जी- शिरोल कोल्हापुर महाराष्ट्र, 105. क्षुल्लक श्री विनीतसागर जी-महातपुर सोलापुर महाराष्ट्र, 106. क्षुल्लक श्री सुभगसागरजी-वर्धा (महाराष्ट्र), 107. क्षुल्लक श्री अपारसागरजी-पुसंद (महाराष्ट्र), 108. क्षुल्लक श्री अह्लादसागरजी -बारामती महाराष्ट्र, 109. क्षुल्लकश्री अगम्य सागरजी- पारोला जलगांव महाराष्ट्र, 110. क्षुल्लक श्री सुयोग्यसागरजी- वरूड जिला अमरावती महाराष्ट्र।

उत्तरप्रदेश के -8

111. क्षुल्लक श्री रयणसागर जी-ललितपुर (उ.प्र.), 112. क्षुल्लक श्री प्रणम्यसागर जी-मोगांव मेनपुरी (उ.प्र.), 113. क्षुल्लक श्री सुधारसागरजी-ललितपुर (उ.प्र), 114. क्षुल्लक श्री तन्मयसागरजी- ललितपुर (उ.प्र.), 115. क्षुल्लक श्री अथाहसागरजी- फिरोजाबाद (उ.प्र.), 116. क्षुल्लक श्री गौरवसागरजी- सुल्तानपुर (उ.प्र.), 117. क्षुल्लक श्री विदेहसागरजी- बड़ौत (उ.प्र.), 118. क्षुल्लक श्री धर्मसागरजी- चिलकाना सहारनपुर (उ.प्र.)।

कर्नाटक-8

119. क्षुल्लक श्री प्रवचनसागर जी- सदलगा बेलगांव कर्नाटक, 120. क्षुल्लक श्री नियमसागर जी- सदलगा बेलगांव कर्नाटक, 121. क्षुल्लक श्री योगसागर जी-सदलगा बेलगांव कर्नाटक, 122. क्षुल्लक श्री समयसागर जी-सदलगा बेलगांव कर्नाटक, 123. क्षुल्लक श्री सुबोधसागर जी (मुनि चेतनसागरजी)- सदलगा बेलगांव कर्नाटक, 124. क्षुल्लक श्री दर्शनसागर जी-तेरदाल बीजापुर कर्नाटक, 125. क्षुल्लक श्री पुण्यसागर जी- येलवट्टी कर्नाटक, 126. क्षुल्लक श्री पाय सागर जी- हडससोग्राम सिसमोगा कर्नाटक।

राजस्थान-5

127. क्षुल्लक श्री संवेगसागर जी-पाचवां नागौर राजस्थान, 128. क्षुल्लक श्री प्रशांतसागरजी-खांदू कॉलोनी बांसवाड़ा राजस्थान, 129 . क्षुल्लक श्री वैराग्यसागरजी-

संखोन जिला जयपुर (राजस्थान), 130. क्षुल्लक श्री परीतसागरजी- बागीदौरा राजस्थान, 131. क्षुल्लक श्री स्वागतसागरजी-बागीदौरा बासवाडा राजस्थान।

बिहार-3

132. क्षुल्लक श्री निकटसागरजी- गया बिहार, 133. क्षुल्लक श्री वरदत्तसागरजी-टेकारी गया बिहार, 134. क्षुल्लक श्री आदरसागरजी-गया बिहार।

छत्तीसगढ़-2

135. क्षुल्लक श्री प्रशमसागर जी-दुर्ग छत्तीसगढ़, 136. क्षुल्लक श्री ध्यानसागर जी-भिलाई दुर्ग छत्तीसगढ़।

पंजाब-2

137. क्षुल्लक श्री सिद्धान्तसागर जी-पानीपत पंजाब, 138. क्षुल्लक श्री उत्साहसागरजी-फिरोजपुर पंजाब।

हरियाणा-1, पश्चिम बंगाल-1, झारखंड-1

139. क्षुल्लक श्री चिंतनसागर- रेवाड़ी हरियाणा, 140. क्षुल्लक श्री उपयोगसागरजी- कोलकाता पश्चिम बंगाल, 141.क्षुल्लक श्री प्रमाणसागर जी-हजारीबाग झारखंड दी तथा तीन क्षुल्लिका दीक्षाएं तीन चरणों में दी जिसमें मध्यप्रदेश की 2 क्षुल्लिकायें क्षुल्लिका संयमश्री सागर, क्षुल्लिका आत्मश्री जी सतना, तथा क्षुल्लिका समाधिश्री जी संतरामपुर राजस्थान को दीक्षायें प्रदान की।

आचार्यश्री द्वारा कभी भी अधिक समय तक प्रसारित किये बिना, लघु कालिक सूचना के साथ दीक्षा सम्पन्न हो जाती है। 2014 में 16 अक्टूबर को चार दीक्षाएं, हुई उनका अतिशय यह है कि जिनके यहाँ आचार्य श्री का आहार हुआ तथा आचार्यश्री आहार से लौटते समय ब्र. डॉ. ऋषिजी ने आचार्यश्री से दीक्षा का निवेदन किया तो 12 बजे तय हुई। तुरंत ऋषि भैय्या ने अपने पद और संस्था से इस्तीफा दिया। दीक्षा की तैय्यारी हो गई। कुछ ही घंटों में अप्रत्याशित सी घटना लग रही थी और कुछ ही घंटों में दीक्षा विधि सम्पन्न हो गई। ब्र. ऋषि भैय्या मुनि शीतलसागर बन गये। ऐसी ही दीक्षा देने की प्रक्रिया सबको लगभग विस्मय में डालती रहती है।

प्रखर साधना में तपा कर, हर प्रकार से कसौटी पर खरे उतरने के बाद ही दीक्षा देने वाले पूज्य आचार्य विद्यासागर जी दीक्षित शिष्य स्वाध्याय साधना-प्रभावना और संस्कार बड़े ही मनोयोग से लगे हुए हैं। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज चलते-फिरते विश्वविद्यालय है। उनका एवं उनसे दीक्षित शिष्यों का समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया तथा समाज सुधार, तीर्थोद्धार, दयोदय, स्वरोजगार जैसी योजनाओं को सफल बनाने में आचार्यश्री विद्यासागर जी के शिष्य अग्रणी हुए। विश्व कीर्तिमानों में सर्वाधिक दीक्षा प्रदाता आचार्य विद्यासागर जी संयम-स्वर्ण महोत्सव चिंतनीय-वंदनीय -अभिनन्दनीय है।

कविता

विरल-संत

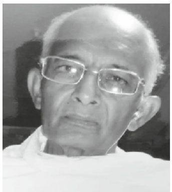

ब्र. सुदेश जैन
(कार्यकारी संपादक- संस्कार सागर)

युग ने देखा इक विरल संत •
करते निज-पर विधि-गरल अंत •
करूणा का सागर लहराया
आनन में जिसके पल-प्रतिपल
भयभीत जगत् के मानव क्या
पशु भी होते थे अभय वंत
युग ने देखा वह विरल संत •
वह दृष्टि उठा कर जब देखे
अपराधी हृदय पलट जाते
उन्मार्ग त्याग, सत्पथ पाकर
दुर्जन हो जाते दयावंत
युग ने देखा वह विरल संत •
सामुख्य जिसे भी मिल पाता
दर्शन करते वह झुक जाता
मानी का होता मान गलन
क्रोधी पा जाते शान्ति मंत्र
युग ने देखा वह विरल संत •
उन संत कवि की कलम तले
पावन सरितायें वह निकली
अरु बोल उठे हैं मूक-मधुर
माटी हो उठती जीव वंत
युग ने देखा वह विरल संत •
जीवों के हितकारी प्रवचन
उनकी संयत काया देती
मुस्कान मधुर औषधि जैसी
जीवों के दुख का करति अंत
युग ने देखा वह विरल •
निश्चय-व्यवहार सुकिरिया में
आगम दिखता था चरिया में
वाणी से झरता मुक्ति मंत्र
ज्ञानामृत स्रावी दिव्य संत
युग ने देखा वह विरल संत •
युग-युग से प्यासे भटके हम
चहुँदिश फैला था मिथ्यातम्
मरूथल के युग-प्यासे मृग ने
पा लिया जलधि लेता तरंग
युग ने देखा वह विरल संत •
वे विद्या के सागर मुनिवर
युग-युग उपमा देंगे जिनकी
वे परम तपस्वी, सरल संत
रत्नत्रय जिनमें दीप्ति वंत
युग ने देखा वह विरल संत •
वे विद्यासागर कृपा वंत
ऋषि-मुनियों में थे श्रेष्ठ संत
थे सूरि-सूर्य सम प्रभा वंत
जग का करते थे तमस अंत
युग ने देखा वह विरल संत •
बढ़ गये त्वरित मुक्ति पथ पर
तज जगत् मोह तन, मन, पद का
वे विद्यासागर 'शुद्ध क्षपक'
होने को द्रुत ही मुक्ति कंत
है प्रणत जगत् सह ये 'सुदेश'
तव चरणों में श्रद्धानवंत
युग ने देखा इक विरल संत •

(विरल= अद्वितीय, गरल अंत= कर्मों का विष, सूरि= आचार्य)

भक्ति तरंग
विषय भोग में क्यों जनम गवाये

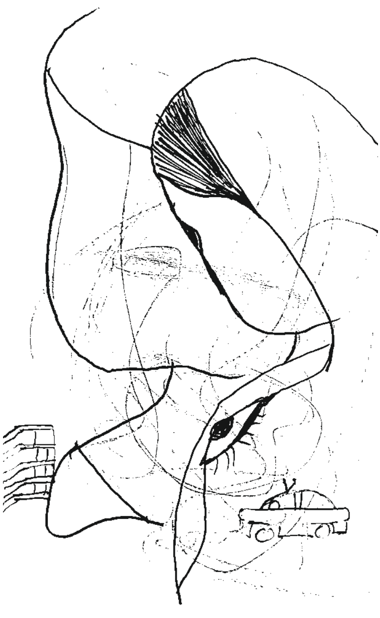

(राग-काफी कनड़ी, ताल-पसतो)
अब अघ करत लजाय रे भाई ।। टेक ।।
श्रावक घर उत्तम कुल आयो,
भैंटे श्री जिनराय ।। अब।।
धन वनिता आभुषन परिगह,
त्याग करौ दुखदाय ।
जो अपना तू तजि न सकै,
पर सेयां नरकन, जाय ।। अब. ।।1।।
विषय काज क्यों जनम गुमावें,
नरभव कब मिलि जाय ।
हस्ती चढ़ि ईंधन ढोवे,
बुधजन, कौन वसाय ।। अब. ।।2।।

अरे आत्मन् ! अब तो पाप कर्म करते तुमको लज्जा आनी चाहिये । तुम्हें संयोगवश यह उत्तम श्रावक कुल मिला है जिससे श्री जिनवर के स्वरुप की तुम्हें जानकारी हुई है, उनका परिचय मिला है।

हे आत्मन् ! धन, स्त्री, आभूषण ये सब परिग्रह हैं। ये सब दुःखदायी हैं, इनका त्याग करो। तुम अपने स्वभाव को जानो, स्वीकार करो। जो तुम्हारा है उसे कभी छोड़ा नहीं जा सकता। किन्तु पर तुम्हारा नहीं है, उसको मान्यता देने पर नरक में जाना पड़ता है, अत्यंत दुःख मिलते हैं।

अरे, तू इंद्रिय-विषयों में रत होकर जीवन में बहुमूल्य क्षणों को गंवा रहा है, बिता रहा है। देख फिर नरभव न जाने कब प्राप्त होगा ? बुधजन कहते हैं कि हाथी को पाकर उस पर सवारी करने का सौभाग्य मिलने पर कोई उसका उपयोग जलाने की लकड़ी, ईंधन को ढोने के लिये करें, उसकी तो फिर उसके दुर्भाग्य को क्या कहा जाये ? फिर उसके दुर्भाग्य का क्या ठिकाना ? अर्थात् तब उसका भवितव्य अस्पष्ट ही है। ऐसी स्थिति में अच्छे भले परिणामों की आशा कैसे। की जा सकती है।

संस्कार प्रवाह

युग दृष्टा विद्यासागर

जिनकी ज्ञान चारित्र साधना को देखकर उन्हें सहज ही लोग संत शिरोमणि कह बैठते थे, जिनकी साहित्य देश के अनेक विद्वान सर्जना से प्रभावित उन्हें महाकवि कहते नहीं थकते, जिनके अमृत वचन सुनकर प्रखर वक्ता और अध्यात्म चिन्तक की उपाधि से उन्हें रजत भावना ने विभूषित किया। जिनकी स्वरोजगार की सोच से युवा वर्ग ने उन्हें अपना मसीहा माना।

संस्कार युक्त शिक्षा नीति के प्रेरणा स्रोत आचार्य विद्यासागर जी महाराज शिक्षा विशेषज्ञ के उच्च आसन पर स्वयं ही सहसा विराजमान हो गये, तीर्थ रक्षक दिगम्बर जैन संस्कृति संवाहक, गौवंश उद्धारक, करूणा निधान ,वैराग्य मूर्ति, ज्ञान, ध्यान, तप के महान साधक हजारों दीक्षा धारी शिष्यों के गुरु आचार्य विद्यासागर जी का 57वाँ संयम महोत्सव का महान अवसर आज हम सबको उनकी अनुपस्थिति में पहली बार प्राप्त हुआ है।

शोक संतप्त भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आचार्य श्री विद्यासागर जी के चिरवियोग को अपनी व्यक्तिगत क्षति बताते हैं तो वहीं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक मोहन भागवत जी ने आचार्य श्री के वियोग को राष्ट्र मार्गदर्शक का अभाव होना बताया, गृहमंत्री अमित शाह ने पूज्य श्री के वियोग को अपूरणीय क्षति घोषित किया, म.प्र. और छ.ग. ने 18 फरवरी को राज्यकीय शोक घोषित किया।

विश्व के सभी धर्मनेता, राजनेता, राष्ट्रवादी चिंतक साहित्यकारों के विचारों का संकलन संस्कार सागर पत्रिका का विशेषांक अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हुआ। संकलन त्रुटि और कमी होना संभव है परंतु संस्कार सागर के अकिंचन्य प्रयास को सुधि श्रावकगण सस्नेह भाव ग्रहण करेंगे। ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है और आशा करते है कि हमारे उत्साह को बढ़ाने की आपकी भावना वात्सल्य के साथ हमारी संस्कार धारा को प्रवाहित करती रहेगी।

संस्मरणः आचार्य श्री विद्यासागर जी

ऐसे हटता है राग

✻ डॉ. अनिल कुमार जैन, बापूनगर जयपुर ✻

सन् 1979 की बात है। उन दिनों मैं सरकारी कार्य में नहीं आया था, अतः अपने मूल निवास स्थान आगरा में ही था। होली का दिन था उससे पूर्व संध्या को ही मैं कहीं बाहर से आया था। तभी मुझे ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज पिछले कुछ दिनों से आगरा में ही थे तथा दो दिन पूर्व ही वे आगरा के निकट आगरा-मथुरा रोड़ पर स्थित सिकंदरा चले गये। आचार्य श्री के बारे में पहले से ही काफी कुछ सुन रखा था कि वे बहुत ज्ञानी हैं, चारित्र में पक्के हैं, बिना किसी विज्ञापन के विहार करते हैं आदि आदि।

उसी समय का मुझे उनका एक प्रसंग याद आया। एक बार आगरा के छीपीटोला क्षेत्र में आचार्य श्री ससंघ ठहरे हुये थे। एक दिन वहाँ के बड़े मंदिर में आचार्य श्री बैठे हुये थे। आम दिनों की तरह मंदिर में दर्शनार्थी सामान्य रूप से आते जाते रहे। एक-दो व्यक्ति को छोड़ सभी दर्शन करके चले जाते। अचानक आचार्य श्री का हाथ अपने सिर पर गया तथा उन्होंने अपने केशलोंच प्रारंभ कर दिये। वहाँ बैठे लोग आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने आचार्य श्री से निवेदन किया कि अपने यदि कुछ पहले कहा होता तो केशलोंच के इस समारोह को बड़े पांडाल में भव्य समारोह के रूप में आयोजित किया जा सकता था। बड़े-बड़े पोस्टर छपवाये जा सकते थे, तथा काफी लोग इकट्ठे होते। लेकिन आचार्य श्री अपने कार्यक्रम में व्यस्त रहे। फिर उपस्थित लोगों ने अनुरोध किया कि आप कुछ क्षण तो रूक जायें जिससे आसपास खबर कर दें। उपस्थित लोग लोग हड़बड़ाहट में उठे तथा इधर-उधर समाज के लोगों को खबर करते रहे कि आज आचार्य श्री का केशलोंच हो रहा है। यह खबर शीघ्र ही समाज में फैल गई। कुछ ही देर में लोग इकट्ठे भी हो गये। लेकिन जब तक लोगों को खबर लगती तथा वे आचार्य श्री के पास आते, तब तक तो आचार्य श्री केशलोच पूरे कर चुके थे। उन्होंने अपना आशय उपस्थित जन-समूह को बता दिया कि यह तो मुनि का एक नियमित कार्य है, इसमें कैसा प्रचार, कैसा विज्ञापन। तदुपरान्त एकत्रित जन-समूह चाहता था कि महाराज श्री के केश यमुना नदी में प्रवाहित किये जायें। इसके लिये, बालों को ले जाने के लिये बोली लगाई जाये। लेकिन इस कार्य में आचार्य श्री ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। वे अपना कार्य करके अलग हट गये। यहाँ आचार्य श्री यह स्पष्ट कर गये कि परम्परागत मुनि धर्म में केशलोंच की यही विधि है। इस कार्य के लिये प्रचार-प्रसार साधु के लिये उचित नहीं हैं।

इस घटना के कुछ दिनों बाद की ही बात है। छीपीटोलावासियों को यह तो महसूस हो रहा था कि आचार्य श्री ससंघ अब अधिक दिन छीपीटोला नहीं रहेंगे। क्योंकि उन्हें शहर/नगर में रहना पसंद नहीं है। आचार्य श्री ने कही ऐसे स्थान पर, विहार करने का निश्चय किया जहाँ भीड़भाड़ न हो। एक दिन सुबह अचानक आचार्य श्री ससंघ (उस समय उनके संघ में शायद मुनि कोई नहीं था, लगभग दस-बारह ब्रह्मचारी तथा एक या दो क्षुल्लक थे) विहार कर गये।

समाज के लोग सोचने लगे कि शायद अभी तक शौच से नहीं लौटे होंगे। आचार्य शौच के लिये नदी पर ही जाते थे। लेकिन बहुत समय तक नहीं लौटे तो लोगों में खलबली मची। कुछ समय बाद पता चला कि वे यमुना पार स्थित भगवान नेमिनाथ मन्दिर (नेमिनाथ उद्यान) में विराजमान हैं। श्रद्धालु वहाँ भी पहुँचना प्रारंभ हो गये। श्रद्धालुओं का आचार्य श्री से फिर वहीं निवेदन/विनती की कि आपने कुछ पहले तो बताया होता। एक भव्य शोभायात्रा निकाली जा सकती थी, कुछ बेण्डबाजे भी साथ में होते। आप तो बिना कुछ बताये ही विहार कर जाते हैं। आचार्य श्री का फिर वही मौन संदेश कि इस प्रकार के विहार की क्रिया एक नियमित चर्या है, जिससे न तो किसी बैण्डबाजे की जरूरत है और न किसी शोभायात्रा की। सामान्य परिस्थितियों में साधु अमुक स्थान को लक्ष्य करके विहार नहीं करते, यही आर्ष मार्ग है।

श्रद्धालुओं ने पुनः निवेदन किया कि जो कुछ हुआ वह तो हो चुका। आगे से आचार्य श्री अपने कार्यक्रम पूर्व-निर्धारित कर दें कि कहाँ जाना है। लेकिन अचानक एक दिन फिर वही हुआ जिसका श्रद्धालुओं को डर था। आचार्य श्री अचानक कहीं विहार कर गये, बिना बताये। फिर उनकी खोज शुरु हो गई। सामान्यतः मुनिजन राजमार्गों के निकट नगरों/गाँवों में ठहर जाते हैं। लेकिन आचार्य श्री तो राजमार्ग से हटकर छोटे से गाँव में जा पहुँचे। आचार्य श्री की कुशलता के समाचार पा लेने के बाद जैन समाज को शान्ति मिली।

ये सब घटनायें दिमाग में एक साथ दौड़ गईं। तुरंत ही मन में इच्छा हुई कि आचार्य श्री के दर्शन अवश्य किये जायें। सिकन्दरा हमारे घर से सिर्फ सात-आठ किलोमीटर ही तो है। अतः मन में तय किया कि वहाँ जाकर दर्शन करूँ। इसी उद्देश्य से मैं अपने बड़े भाई समान श्री वीरेन्द्रकुमार जी जैन के पास पहुँचा तथा अपनी इच्छा जाहिर की। भाई साहब बहुत ही धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति हैं तथा बड़े मुनि भक्त भी हैं। उन्होंने मुझे बताया कि वे तो सिकन्दरा से चले गये तथा आज शाम उन्हें मथुरा के निकट स्थित जम्बूस्वामी के निर्वाण क्षेत्र चौरासी में होना चाहिये। उन्होंने मेरा आशय जानकर कहा कि कोई बात नहीं, हम चौरासी चलकर आचार्य श्री के दर्शन करेंगे। मैंने उनसे कहा कि होली का दिन है, यह सब कैसे संभव हो जायेगा। उन्होंने उत्साह बढ़ाते हुये कहा कि होली से कोई दिक्कत नहीं है, तथा साथ चलने का कार्यक्रम भी बना लिया।

अगले दिन हम निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मथुरा-चौरासी पहुँचे। उधर पता चला कि आचार्य श्री तो कल शाम को ही गोवर्धन (मथुरा के निकट गाँव, श्रीकृष्ण की लीलास्थली) चले गये। हमने आपस में विचार किया कि जब उनके दर्शन करने को आगरा से 60. किमी. चलकर आ ही गये हैं तो 14-15 कि.मी. और सही। अतः हम फिर बस द्वारा गोवर्धन के लिये चल दिये हालांकि हम आगरा से प्रातः छह साढ़े छह बजे निकल दिये थे तब भी बस बदलने करने के कारण गोवर्धन पहुँचते-पहुँचते ग्यारह बज चुके थे। हम शीघ्र ही बस से उतर कर जैन मंदिर की और दौड़ पड़े। लेकिन वहाँ पर भी वहीं निराशा हाथ लगी। उधर पता चला कि आचार्य श्री तो अभी-अभी आहार करके कहीं विहार कर गये। चूँकि गोवर्धन में जैन बस्ती न के बराबर है, अतः वहाँ पर निश्चित पता न चल सका कि वे किस ओर विहार कर गये हैं।

इस प्रकार की आचार्य श्री की प्रवृत्ति देखकर मन उनके दर्शन को और अधिक व्याकुलित हो चला। हम शीघ्र ही गोवर्धन के तिराये पर आये। वहाँ कुछ गाँव वालों से पता चला कि वे वहाँ से छह-सात किमी. तक ही पहुँच पाये होंगे। अति उत्साहित होकर तुरंत हमने एक ताँगा (घोड़ागाड़ी) किया तथा उस दिशा की ओर चल पड़े जिधर थोड़ी दूरी पर कुछ ब्रह्मचारी वेश में लोग दिखाई दिये। हमें कुछ संतोष हुआ कि अब हम मंजिल तक पहुँचने वाले ही हैं। थोड़ा आगे चलकर ताँगा रूकवा दिया तथा पैदल चलने लगे। हमने जो दृश्य देखा ऐसा आज तक कभी देखने का सुअवसर नहीं मिला।

हमने देखा कि सड़क के दाहिनी ओर खेत में कुछ अन्दर एक पेड़ के नीचे एक साधु ध्यान-मुद्रा में विराजमान है, थोड़ा आगे एक अन्य पेड़ के नीचे एक अन्य ब्रह्मचारी हैं। इस प्रकार सड़क के दोनों ओर आचार्य श्री के संघ के सभी शिष्य-साधु/त्यागी/ब्रह्मचारी किसी न किसी पेड़ के नीचे ध्यानमुद्रा में बैठे हैं। सबों को नमस्कार करते हुये हम आगे बढ़े। तभी सड़क के बायीं ओर कुछ अंदर पेड़ के नीचे आचार्य श्री को ध्यान मुद्रा में देखा। यह सबों के सामायिक का समय था। हम सभी आचार्य श्री को नमस्कार कर उन्हीं के निकट बैठ गये। आचार्य श्री हमारे आगमन से अनभिज्ञ थे। वे ध्यान में ही रहे आये। इन युवा आचार्य श्री को एक टक होकर हम निहारते रहे और मन ही मन प्रसन्न होते रहे कि आखिर हमने उनके दर्शन कर ही लिये। उनकी ध्यान मुद्रा देखकर हमको शास्त्रों में वर्णित मुनि की दशा की बात याद आती है। शास्त्रों में वर्णित मुनि की साधना/तपस्या/ध्यान स्थिति को हम अपनी आँखों से देखकर स्वयं को धन्य मान रहे थे। खेतों-जंगलों में मुनि संघ विराजमान है जहाँ एकान्त के सिवाय कुछ नहीं है। ऐसे स्थान पर मुनि एकाग्रचित होकर ध्यान लगा रहे हैं। जिस प्रकार का दृश्य हमने देखा उसे मैं वर्णित करने में अपने आपको सक्षम महसूस नहीं कर पा रहा हूँ, लेकिन जो कुछ देखा, वह आज भी ज्यों का त्यों आँखों में समाया हुआ है।

हम आचार्य श्री को टकटकी बाँधकर निहारते रहे। कुछ समय बाद आचार्य श्री का ध्यान/सामायिक समाप्त हुआ। उन्होंने हम लोगों की ओर एक निगाह उठाकर देखा। हमने उन्हें बताया कि हम किस प्रकार वहाँ पहुँच पाये। आचार्य श्री चुप रहे आये। उसी समय एक अन्य व्यक्ति भी उनके दर्शनार्थ उसी प्रकार पहुँचे थे जिस प्रकार हम पहुँचे थे। उन्होंने आचार्य श्री निवेदन किया कि आप हमें कुछ तो दिशा-निर्देश ज्ञान दें। मुझे अभी अक्षरशः तो याद नहीं है। आचार्य श्री बहुत धीमे स्वर में बोले- शांति से जीवन यापन करें, विद्वेष हटायें, राग को कम करें आदि। आचार्य श्री फिर चुप हो गये। तभी वे सज्जन बोले कि महाराज! राग कैसे हटायें। आचार्य श्री ने हल्की मुस्कान ली और हाथ में पीछी लेकर खड़े हो गये। पीछी से अपने शरीर को हल्का पौंछते हुये (जीव राशि यदि कोई हो तो उसे हटाते हुये) बोले ऐसे हटता है राग और वे इतना मात्र बोले के साथ ही चल पड़े। उनके पीछे पीछे संघ के अन्य साधु/ब्रह्मचारी भी चल पड़े। हम सब उन्हें टकटकी बाँधकर जाते हुये देखते रहे। जब वे आँखों से ओझल होने लगे हम वापस हो लिये।

संस्मरण

तुम्हारे रहते क्या नहीं होगा

✻ सौरभ कुशल जैन (इंदौर) ✻

सन् 1992 वर्ष के प्रारंभ में जनवरी के अंतिम महिने की घटना है परम पूज्य आचार्य श्री वर्णी गुरुकुल जबलपुर की छत पर बैठे थे। उनके पार्श्वभाग में पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी विराजमान थे। ब्र. विनोद जी ने आकर मुझे (पू. ऐलक सिद्धांतसागर) आकर कहा कि आपको आचार्य श्री बुला रहे हैं मैं सोचने लगा कि अचानक आचार्य श्री का बुलाना समझ से परे लगा। क्या बात हो गई होगी, क्यों बुलाया ऐसी कौन सी बात हो गई इत्यादि प्रश्न मेरे मन में कोधने लगे। बहुत आशंका से भरकर मैं सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते ऊपर गुरुकुल की छत पर पहुंचा और आचार्य श्री जी को विनय पूर्वक नमोस्तु किया कुछ देर तक आचार्य श्री के चरणों में दृष्टि करकर बैठा रहा। आचार्य श्री ने मेरी तरफ (पू. ऐलक सिद्धांतसागर) अपना मुख करते हुये कहा ऐलक जी मेरे पास बिहार प्रांत से एक युवक आता है वह कहता है आचार्य श्री जैनों की एक ऐसी संस्था आप खुलवायें जिस संस्था के माध्यम से आई.ए.एस., आई.पी.एस, आई.एफ.एस जैसे सिविल परीक्षाओं की तैयारी करने का जैन युवाओं को शिक्षण प्रशिक्षण दिया जा सके जिससे शासन प्रशासन की बनने वाली नीतियों में अहिंसा, शाकाहार, करूणा और न्यायशीलता एवं भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण का निर्माण हो सके तथा राष्ट्रवादिता पुनः स्थापित हो सके।

ऐ.जी. सुनो मैंने इसके लिये सोचा है जबलपुर में एक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किया जाये। जिससे कि इन सब उद्देश्यों की पूर्ती हो सके। मैं आचार्य श्री जी की बात ध्यान से सुनता रहा फिर मैंने मुनि श्री क्षमासागर जी की तरफ निहारा और उनकी भाव भंगिमा को परखा फिर मैंने सोचा आचार्य श्री का सपना और सोच बहुत बड़ा है यह कार्य रूप कैसे हो पायेगा इसी के साथ मुझे थोड़ी हंसी भी आ गई मुझे देखकर आचार्य श्री बोले क्यों तुम हस क्यों रहे हो ? मैं थोड़ी देर चुप रहा हँसी रोक नहीं पाया। आचार्य श्री ने पुनः कहा बोलो न कुछ हँस क्यों रहे हो ? मैंने कहा आचार्य श्री आपके महत्वाकांक्षी सपनों के बारे में सोच-सोच कर हँस रहा हूँ तब आचार्य श्री ने कहा क्या तुम्हारे रहते मेरा यह स्वप्न पूरा नहीं होगा इसका जबाब मेरे पास नहीं था मात्र हाथ जोड़कर के यह कहना शेष था कि गुरुदेव आपकी हर भावनाओं को तन-मन-वचन से पूरा करूंगा।

दिगम्बर सरोवर के राजहंस

परम पूज्य समाधिस्थ आचार्य विद्यासागर महाराज जी अभिवंदना

❊ प्रो. डॉ. भागचंद्र जैन (भागेन्दु)❊

परम पूज्य संत शिरोमणि समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज दिगम्बर जैन श्रमण परम्परा के आदर्श हैं।

वे सम्पूर्ण राष्ट्र के श्रद्धास्पद महनीय संत थे। उनका दिनांक 18 फरवरी 2024 ई. को प्रातः 2.30 बजे छत्तीसगढ़ प्रदेश के डोंगरगढ़ में चंद्रगिरि में सम्यक् समाधिमरण हुआ।

वे सम्पूर्ण विश्व के संतों में संत शिरोमणि के रूप में विख्यात और सिरमौर थे। आचार्य विद्यासागर महाराज में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अंग्रेजी, कन्नड़, मराठी आदि विभिन्न भाषाओं के बोलने और लिखने की अद्भुत क्षमता थी। आचार्य विद्यासागर जी महाराज सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, और सम्यक् चारित्र की **त्रिवेणी** थे। वह सभी के प्रेरणा स्रोत थे।

आचार्य श्री सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा के प्रेरक थे। उनका विश्वास था कि - **शिक्षा वही है जो स्किल डेवलपमेन्ट इनोवेसन पर ध्यान आकर्षित करें।** आचार्य श्री ने कैदियों की भलाई के लिये भी विभिन्न कार्य किये।

आचार्य विद्यासागर जी महाराज राष्ट्रवादी महानुभावों के हृदय और मन-मस्तिष्क में सदैव जीवित रहेंगे। उनके द्वारा निदर्शित मार्ग पर चलकर सम्पूर्ण राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

भारतीय संस्कृति और प्रशस्त आदर्शों के मूर्तरूप, योग प्रवर्तक, अध्यात्म सरोवर के राजहंस, साधना के सुमेरू, भारतीय अध्यात्म के पुरोधा, संत शिरोमणि महाकवि परम पूज्य आचार्य रत्न विद्यासागर महाराज का समाधिमरण भारतीय संस्कृति की अपूरणीय क्षति है। उनका आचार्य पद परम पूज्य **निर्यापकाचार्य श्री समयसागर मुनि महाराज** को चतुर्विध संघ की महनीय उपस्थिति में दिनांक 16 अप्रैल, मंगलवार 2024 ई. को **सिद्ध क्षेत्र कुंडलपुर में** भव्य समारोह पूर्वक समर्पित किया गया।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के समाधिमरण से राष्ट्र में जो रिक्तता हुई है, निकट भविष्य में उसका पूर्ण होना दुष्कर कार्य है।

ऐसे परम पूज्य आचार्य श्री के गुणानुवाद से परिपूर्ण प्राञ्जल भाषा एवं प्रसाद तथा मधुर-गुणों से परिपूर्ण परिष्कृत संस्कृत में रचित **विद्याष्टकम्** शीर्षक हमारी यह श्रद्धाभक्ति प्रशस्त काव्याजंलि सविनय प्रस्तुत है।

यह काव्यांजलि संस्कृत के प्रसिद्ध शिखरणी छन्द में रचित है।

पाठक **महावीराष्टकम्** स्तोत्र की शैली में इसका पाठ करें परम पूज्य आचार्य श्री का गुणानुवाद कर सकते हैं।

इसे सर्व-बोधगम्य बनाने हेतु राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किया है।

विद्याष्टकम्

(शिखरिणीवृत्तम्)

सुविद्यावारीशो गणधरसमो ज्ञानचतुरः
विधाता शिष्याणां शुभगुणवतां शास्त्रकुशल : ।
पुराणानां ज्ञाता नयपथचरो नीतिनिपुणः,
प्रकुर्यात्कल्याणं भवभयहरो मे गुरुवरः ।।1।।

अर्थ- आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज श्रेष्ठ विद्याओं के समुद्र हैं, गणधर के समान ज्ञान-विज्ञान की विविध शाखाओं में दक्ष हैं, अच्छे गुणकारी शिष्य समुदाय के विधाता हैं , समस्त शास्त्रों में कुशल हैं, प्राच्य विद्याओं के मनीषी हैं, जैन-दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धांत-अनेकांतवाद के अनुयायी हैं और नीति-निपुण हैं, संसार-जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के भय को दूर करने वाले ऐसे परम श्रेष्ठ गुरुवर आचार्य प्रवर विद्यासागर जी मुनिराज हमारा कल्याण करें।

मुमुक्षुर्ब्रह्मज्ञः सरलहृदयः शान्तकरणः
स्वशिष्याणां शास्ता शुभगुणधरः सिद्धगणकः ।
सुयोगी धर्मज्ञः सरलसरलः कर्मकुशलः
प्रकुर्यात्कल्याणं भवभयहरो मे गुरुवरः ।।2।।

अर्थ- जो परम श्रेष्ठ पद मोक्ष के अभिलाषी है, आत्म-तत्व के मर्मज्ञ हैं , जिनका हृदय अत्यंत सरल है, जो परम संयमी (जिनकी इंद्रियाँ शांत) हैं, अपने शिष्यों (संघ) के जो अनुशासक , नियंत्रक, प्राचार्य हैं, प्रशस्त गुणों के धारक हैं, उत्कृष्ट साधक तपस्वियों में अग्रगण्य हैं, मन-वचन-काय पर समान रूप से नियंत्रक, सुयोगी हैं, धर्म के मर्मज्ञ हैं, अतिशय सरल हैं, आचार्य पद के दायित्वों के संपादन में अत्यधिक कुशल हैं, संसार-जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के भय को दूर करने वाले ऐसे परम श्रेष्ठ गुरुवर आचार्य विद्यासागर मुनि महाराज हमारा कल्याण करें।

अहिंसासत्यार्थी शमदमपरो ज्ञानपथिकः
मलप्पा-श्रीमत्योरजनि जनुषा गौरवकरः ।
प्रविद्यो विख्यातः सुरगुरुसमः वीत-वसनः
प्रकुर्यात्कल्याणं भवभयहरो मे गुरुवरः ।।3।।

अर्थ- जो अहिंसा और सत्य की उपासना में अहर्निश निरत हैं तथा विकारों के शमनकर्त्ता और इंद्रिय-विजेता है, निरंतर ज्ञान के मार्ग पर संचरशील हैं । जिनके (गृहस्थ अवस्था के पिता एवं माता होने का गौरव) क्रमशः श्री मल्लप्पा जी (समाधिस्थ मुनि श्री

मल्लिसागर जी महाराज) एवं (श्रीमती) श्रीमती जी (समाधिस्थ आर्यिका समयमती जी माताजी) को प्राप्त हैं , जो विशेषज्ञ मनीषी हैं, विख्यात हैं, बृहस्पति के समान ज्ञानवान हैं, दिगंबर मुद्राधारी हैं, संसार-जन्म वृद्धावस्था और मृत्यु के भय को दूर करने वाले ऐसे परम श्रेष्ठ गुरुवर आचार्य विद्यासागर जी मुनि महाराज हमारा कल्याण करें।

सदलगा -ग्रामे जो जनिमवाप्नोच्छारदि-तिथौ
धरो विद्यायाः यो प्रथितयशोऽभूदनुपमः ।
ततो लब्धा ज्ञानम् उपनय- विधानस्य विधिना
प्रकुर्यात्कल्याणं भवभयहरो मे गुरुवरः ।।4।।

अर्थ- शरद पूर्णिमा के शुभ दिन सदलगा ग्राम (कर्नाटक) में जिनका जन्म हुआ और जो (बाल्यावस्था में) विद्याधर के नाम से संसार के प्रसिद्ध हुये, जिन्होंने विद्या-आरंभ के प्रसिद्ध उपनयन संस्कार की निर्धारित प्रविधि से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की, संसार-जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के भय को दूर करने वाले ऐसे परम श्रेष्ठ गुरुवर आचार्य विद्यासागर मुनि महाराज हमारा कल्याण करें ।

इतो लब्धाऽऽचार्य ऋषिवर-वरं देश-भणितम् ।
व्रतं ब्रह्माख्यं योऽलभत परमं ह्यात्म-रसिकः ।
ततोऽनुज्ञां प्राप्य गतवानसौ ज्ञानजलधि
प्रकुर्यात्कल्याणं भवभयहरो मे गुरुवरः ।।5।।

अर्थ- आत्म रसिक विद्याधर जी ने आचार्य रत्न देशभूषण महाराज से ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया और उत्कट ज्ञान-पिपासा के कारण आचार्य-रत्न देशभूषण महाराज की अनुमतिपूर्वक आचार्य ज्ञानसागर महाराज के पास पहुँचकर प्रकृष्ट ज्ञान प्राप्त किया। संसार-जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के भय को दूर करने वाले ऐसे परम श्रेष्ठ गुरुवर आचार्य विद्यासागर जी मुनि महाराज हमारा कल्याण करें ।

यशस्वी तेजस्वी सरसिजसमो रागरहितः
यथाभानुर्नित्यं तपति सततं ह्युष्णकिरणः ।
तथैवायं पूज्यस्तपति भवने शुद्धचरणः
प्रकुर्यात्कल्याणं भवभयहरो मे गुरुवरः ।।6।।

अर्थ- जो यशस्वी, तेजस्वी और कमल के समान निःस्पृह हैं। जैसे गर्भ किरणों वाला सूर्य निरंतर तपता हैं, उसी प्रकार ये पूज्य आचार्य श्री अपने शुद्ध (आगम-सम्मत) आचरण से संपूर्ण संसार में तपस्यारत हैं। संसार-जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के भय को दूर करने वाले ऐ परम श्रेष्ठ गुरुवर आचार्य विद्यासागर जी मुनि महाराज हमारा कल्याण करें।

प्रकृत्या सौम्यो यो हिमकरसमः शान्तिचपकः
सुधीर्वाग्मी शिष्टः शुभगुणधनः शुद्धकरणः ।
महापीठासीनो बहुगुणनिधिर्लोभरहितः
प्रकुर्यात्कल्याणं भवभयहरे मे गुरुवरः ।।7।।

अर्थ- जो जन्मजात सौम्य हैं , चंद्रमा की किरणों की भांति शीतल हैं, शांति-सुधा-रस के पान करने वाले हैं, उत्कृष्ट कोटि के विद्वान, वक्ता, शिष्ट प्रशस्त गुणों के धारक एवं निर्दोष चर्यावाले हैं दिगम्बर जैन-आचार्य के महनीय आसन पर विराजमान हैं , विविध प्रकार के गुणों की निधियाँ जिनके पास हैं, और किसी भी प्रकार का लोभ जिन्हें स्पर्श भी नहीं कर सका है, संसार-जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु के भय को दूर करने वाले ऐसे परम श्रेष्ठ गुरुवर आचार्य विद्यासागर मुनि महाराज हमारा कल्याण करें।

सुविद्यो वागीशो निजगुरुकृतिक्रान्तप्रवणः
मुनीशैः संवन्द्यौ विदित-महिमा मंगलकार ।
चिरञ्जीव्यादेषो भवभयभृताम् मौलिशिखरः
प्रकुर्यात्कल्याणं भवभयहरो में गुरुवरः ।।8।।

अर्थ- जो आचार्य विद्यासागर जी महाराज प्रशस्त विद्याओं में वृहस्पति हैं, जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट साधनाचर्या और कृतित्व से अपने परम पूज्य गुरुवर आचार्य ज्ञानसागर मुनि महाराज के कृतित्त्व को और अधिक उजागर किया है , जो मुनिराजों के द्वारा निरंतर वंदनीय हैं, स्व के साथ-साथ विश्व का कल्याण करने वाले हैं, जिनकी महिमा का गान सर्वत्र हो रहा है और संसार से भयभीत मानवों में मुकुट, शिखर की भाँति सुशोभित हैं, ऐसे आचार्य प्रवर श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज हमारा कल्याण करें।

(अनुष्टुव् वृत्तम्)

विद्यासागर आचार्यः प्रथितो भुवनत्रये ।
ससंघाय नमस्तस्मै, नमस्तस्मै नमो नमः ।।9।।

अर्थ- आचार्य विद्यासागर जी महाराज महान् प्रसिद्ध मुनि हैं। उन्हें उनके संपूर्ण संघ के साथ सादर नमन है, त्रि-बार नमोऽतु।

विद्यासिन्धष्टकमिदं भवत्या भागेन्दुना कृतम् ।
महापुण्यप्रदं लोकैः प्रपठन् याति सदा सुखम् ।।

अर्थ- यह विद्यासागरष्टक शीर्षक स्तवन अतिशय भक्तिपूर्वक डॉ. भागचंद्र भागेन्दु जैन के द्वारा रचा गया है। यह भव्य स्तवन महान् पुण्यप्रदाता है, इसके पठन-पाठन से धर्म और सुख सुलभ होते हैं ।

संयम स्वास्थ्य योग

खाँसी

कैसे पायें निजात खाँसी से

खाँसी स्वयं कोई रोग नहीं है। यह अन्य रोगों का लक्षण मात्र है। खाँसी अगर बनी रहे तो अन्य रोग पैदा कर देती है। खाँसी के कारण दुर्बलता के अलावा गले, साँस को नलिया, फेफडे व दिल की बीमारियाँ होती है।

टी.वी. और दमा में भी खासी प्रमुख है। खाँसी दो प्रकार की होती है।

1. सुखी खाँसी 2. कफ

कारण- जुकाम खासी होने का प्रमुख कारण है।

उपाय- नींबू- श्वास खाँसी में नींबू में काली मिर्च, नमक भरकर चूसने से लाभ होता है।

नारंगी- खाँसी में गर्मी में ठण्डे पानी के साथ तथा ठण्डी में गरम पानी के साथ नारंगी का रस पीने से लाभ होता है।

दालचीनी- दालचीनी चुसते रहने से खाँसी नहीं चलती।

मिश्री- खाँसी बार-बार चलती हो तो मिश्री का टूकडा मुंह में रखे।

पानी- रात को गरम पानी पीकर सोने से खाँसी कम चलती है।

तुलसी- ऐसी खाँसी हो जिससे छाती में दर्द हो, जीर्ण ज्वर हो तो तुलसी के पत्तों के रस में मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है।

आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः

❊ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ❊

जैन धर्म में पांच परमेष्ठियों का विशेष महत्व है। पांचों परमेष्ठियों में आचार्य तीसरे नंबर के परमेष्ठी हैं। जो पंचाचार का स्वयं पालन करते हैं और शिष्यों से करवाते हैं, संघ के नायक होते हैं और शिष्यों को दीक्षा एवं प्रायश्चित देते हैं वे आचार्य परमेष्ठी कहलाते हैं। आचार्य परमेष्ठी के 36 मूलगुण होते हैं। 12 तप, 10 धर्म, 5 आचार, 6 आवश्यक एवं 3 गुप्ति। साधुओं को दीक्षा-शिक्षा दायक उनके दोष निवारक तथा अन्य अनेक गुण विशिष्ट संघ नायक साधु को आचार्य कहते हैं। वीतराग होने के कारण पंचपरमेष्ठी में उनका स्थान हैं।

आयारं पंचविहं चरदि चरावेदि जो णिरदिचारं। उवदिसदि य आयारं एसो आयारवं णाम॥

जो मुनि पाँच प्रकार के आचार निरतिचार स्वयं पालता है और इन पाँच आचारों में दूसरों को भी प्रवृत्त करता है तथा आचार का शिष्यों को भी उपदेश देता है उसे आचार्य कहते हैं।

जैन परंपरा में आचार्य और पट्टाचार्य का विशेष महत्व है ऐसे ही महत्वपूर्ण पद पर 18 फरवरी को डोंगरगढ़ में संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज का समाधिमरण होने के बाद उनका आचार्य पद उनके प्रथम शिष्य परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि समयसागर जी महाराज को 16 अप्रैल 2024 को सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में विधि विधान के साथ सौंपा जा रहा है। यह भी संयोग है कि मुनि समयसागर महाराज आचार्य श्री के गृहस्थ जीवन के छोटे भाई हैं। मुनि श्री समयसागर जी महाराज छह भाई-बहनों में छठे नंबर पर के हैं। वर्तमान में वे 65 साल के हैं। आचार्य श्री का भी जन्म स्थल कर्नाटक का सदलगा है। मुनि श्री का जन्म 27 अक्टूबर 1958 को हुआ था। मुनि श्री ने ब्रह्मचर्य व्रत 2 मई 1975 को लिया था। 18 दिसंबर 1975 को उनकी क्षुल्लक दीक्षा हुई थी। 31 अक्टूबर 1978 को एलक दीक्षा नैनागिरि छतरपुर और मुनि दीक्षा 8 मार्च 1980 को जैन सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि छतरपुर में हुई थी।

आचार्य श्री जैसी छवि और ज्येष्ठ निर्यापक श्रमण व प्रथम शिष्य का गौरव प्राप्त करने वाले निर्यापक मुनि श्री समयसागर जी महाराज में झलकती है। उनकी आचार्य पद प्रतिष्ठा का समाचार सुनकर उनकी आगवानी करने पहुँचे सभी हजारों श्रद्धालुओं ने इतिहास बना दिया, यह आगवानी अब तक के सबसे बड़े और लंबे जुलुस के इतिहास को लिखने में कायम हुई है। मुनि दीक्षा के 44 वर्ष बाद मुनि समयसागर जी महाराज आचार्य पद संभालने जा रहे हैं। कुंडलपुर में 16 अप्रैल को आचार्य पद महोत्सव होगा। इसके लिये समयसागर जी महाराज मंगलवार को दमोह के कुंडलपुर पहुंचे।

दमोह के कुंडलपुर में 16 अप्रैल को आयोजित होने जा रहे आचार्य पद महोत्सव में शामिल होने के लिये मुनि संघ कुंडलपुर पहुंच गये हैं। 480 किमी. का विहार करते हुये आचार्य पद संभालने मुनि श्री समयसागर जी महाराज भी मंगलवार 9 अप्रैल को दोपहर कुंडलपुर पहुंच गये। सैकड़ों बसें, हजारों चार पहिया वाहन इस आगवानी में हिस्सा लेने पहुंचे

हुये थे। मुनि संघ का जगह-जगह रंगोली सजाकर भक्तों द्वारा एवं कुंडलपुर क्षेत्र कमेटी, कुंडलपुर महोत्सव समिति द्वारा पाद प्रक्षालन किया गया। कुंडलपुर की पावन धरा पर पहुंचते ही कुंडलपुर में पूर्व से विराजमान निर्यापक संघ, मुनि संघों एवं आर्यिका संघों ने निर्यापक मुनि समयसागर जी महाराज की भव्य आगवानी की भव्य मंगल मिलन हुआ। सभी निर्यापक मुनि श्री योगयागर जी, मुनि श्री नियमसागर जी, मुनि श्री सुधासागर जी, मुनि समतासागर जी, मुनि श्री प्रसादसागर जी, मुनि श्री अभयसागरजी, मुनि श्री संभवसागरजी, मुनि श्री वीरसागर जी, मुनि श्री प्रमाणसागर जी, मुनि श्री प्रणम्यसागरजी सहित सभी पूज्य मुनिराज, आर्यिका माता सहित सभी शिष्यों का भव्य मंगल मिलन का दृश्य अद्वितीय था। बड़ी संख्या में ब्रह्मचारी भैया एवं दीदी भी आगवानी में शमिल थीं। जानकारी के मुताबिक इस महोत्सव के लिये कुंडलपुर में 40000 वर्ग फीट का त्रिस्तरीय मंच होगा 12 फीट ऊंचा होगा, आचार्य श्री का आसन। कुंडलपुर परिसर 2,50,000 वर्ग फीट में लगभग 70,000 लोगों को बैठने का इंतजाम किया गया है और यहां पर 7 एकड़ जगह में पंडाल लगाया गया है। निश्चित ही कुण्डलपुर में 16 अप्रैल को आचार्य पदारोहण का यह महोत्सव अपने आप में एक ऐतिहासिक क्षण होंगे। पूज्य मुनि श्री समयसागर जी में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रतिकृति नजर आती है। अब आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः को वे गौरवान्वित करने जा रहे हैं। उनके पावन चरणों में कोटिशः नमोस्तु।

कविता

लावनी

सिद्धांतसागर जी महाराज

हे युग दृष्टा ! महायती ! पद वन्दन
हे विद्यासागर कोटि कोटि अभिनन्दन
हे मोह तिमिर के नव प्रभात
हे युग प्रर्वतक ! योगीराज
हे सरस्वती के वरद पुत्र पद वन्दन।
हे दिगम्बरत्व के स्वाभिमान
हे वीतराग गुरुवर महान
हे सौम्य मुर्ति जीवन प्राण पद वन्दन
हे पथ प्रदर्शक कर्णधार
हे पतितों के उद्धारक सुधाधार
हे करूणा केतन निर्विकार पद वन्दन।
हे दिव्य ज्योति चैतन्य पुंज आराधन
हे महामहिम गुरु पूज्यपाद अतिपावन
हे राष्ट्र सन्त हे महाप्राण पद वन्दन।

श्रेष्ठ संघ नायक आचार्य श्री विद्यासागर जी

❊ पं. सुरेश जैन मारौरा, इन्दौर ❊

पंचम युग के ऋषिराज संत शिरोमणि महाकाव्य मूकमाटी के रचयिता एवं अध्यात्म सरोवर के राजहंस **आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज श्रमण साधना के शिखर पुरुष है,** उनकी ध्यान साधनायें समयसार के मर्म को जीती हैं। आप इस युग के ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ संघनायक हैं।

विश्व को भारत ने ही गुरु शिष्य परम्परा से अवगत कराया है। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी दक्षिण की परम्परा में दीक्षित वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, बाल ब्रह्मचारी आचार्य श्री ज्ञानसागर जी से दीक्षित संत शिरोमणि श्री विद्यासागर जी के शिष्य समुदाय में 400 के आस-पास पिच्छीधारी शिष्य जिसमें सर्वाधिक मध्यप्रदेश के सागर जिले से हैं। 1000 के आस-पास ब्रह्मचारी भैया-बहनें, प्रतिभा बहनों के साथ-साथ हजारों श्रावक जिन्होंने अणुव्रत धारणकर सप्तव्यसन का त्याग कर प्रतिमाएँ ग्रहण की है। अहिंसा धर्म का यह कार्य अबाध रूप से वृद्धिंगत हो रहा है। आचार्य श्री की साधना, तपस्या अद्वितीय है। मूलाचार के अनुसार 3-4 घंटे की अल्प निद्रा, भीषण गर्मी-सर्दी में ना कोई कपड़ा कम्बल, चटाई, रजाई, पंखा, कूलर, हीटर, ए.सी. का उपयोग नहीं करते। रात्रि में (मलमूत्र की बाधा के कारण) अधिक चलना न पड़े इसलिये सीमित आहार लेते है। आहार में नमक, शक्कर, गुड, साग-सब्जी, फल सूखे मेवे आदि का त्याग है। उसी लकड़ी के तखत पर सुबह से शाम हो जाती है।

आचार्य श्री में कुन्दकुन्द देव के समयसागर बट्टकेर देव के मूलाचार व समंतभद्र की हुंकार की त्रिवेणी के साक्षात् दर्शन होते हैं। कर्नाटक में जन्में बालक विद्याधर ने 1968 से आज तक 56 वर्षों के स्वर्णिम, सुदीर्घ, संयम, पर्याय में अपनी वाणी व त्याग तपस्या से लाखों का, अनंतों जीवधारी प्राणियों को आदर्श मार्ग पर लगाकर अभयदान दिया है। सूर्य जैसे प्रखर तेजस्वी और चांद से भी अधिक सौम्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अध्यात्म जगत के इतिहास पृष्ठों के एक ऐसे दुर्लभ व्यक्तित्व है। जिनकी गाथा भारतीय चेतना का अभिनव उन्मेष है। आचार्यों की वर्णमाला से आलौकित एक महालेख है, जैनागम की समर्थ परम्परा के समर्थतम संवाहकों में से एक जिनकी चेतना में अध्यात्मसार, प्रशिक्षण है, जो इस देह में रहकर विदेह की साधना की कला की ज्ञाता ही नहीं मर्मज्ञ के रूप में आर्विभूत है।

आचार्य महाराज धीर-वीर-गंभीर तो हैं ही सत्य की भी तासीर है। समता की मंदाकिनी में गोते लगाते सरलता व सभ्यता के असीमित बिम्ब विरतीर्ण करते हैं, उनका तेजोमय जीवन समता की हर पर सीमा को समाहित करता है और सहनशीलता की सारी नदियों को अपने सघनशील जीवन के गंभीर रत्नाकर में समाहित कर लेता है। आचार्य श्री ने श्रमण संस्कृति के प्रशस्त इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया है। श्रमण संत के स्थिर योग को हमेशा रेखांकित करते है। श्रावकजन उनके आभावलय को देखकर असीम शांति, अद्भुत सुख और अलौकिक तृप्ति की अनुभूति करते हैं।

श्रमण साधना के अविराम पथिक आचार्य श्री ने सल्लेखना की सहज साधना कला सिखाई है। सिर्फ साधु-समुदाय को नहीं श्रावक-श्राविकाओं को भी अनासक्त निष्पृहः भाव से आत्मा

परिणामों को शुभत्व के साथ जोड़ते हुये आत्मा के स्वरूप का चिन्तन-मनन करते हुये निर्विकार भाव से संसार से विदा लेने की कला सिखाई है। 80 के आस-पास मोक्ष मार्गियों की (जिसमें 50 श्रावक एवं 30 अपने शिष्य श्रमण) सल्लेखना महोत्सव के माध्यम से समाधि कराई। जैन जगत् के मूर्धन्य विद्वान प्रो. डॉ. दरबारीलाल कोठिया, डॉ. पन्नालाल साहित्याचार्य, पं. जगमोहनलाल शास्त्री सहित अनेकों श्रावक-श्राविकाओं की सल्लेखना सामान्यजनों को साधना के दृश्य से परिचित कराकर अंतिम सांसों के सदुपयोग से आत्मा की शुभता की प्राप्ति हेतु प्रेरणा दे रही है।

आचार्य श्री अनेक ग्रामों, नगरों, महानगरों की पदयात्रा विहार करते हुये राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बंगाल आदि प्रान्तों में लगभग 50,000 किलोमीटर से अधिक उबड़-खाबड़, ककरीले, पथरीले मार्ग के श्रावकों को अपनी अमृतमयी वाणी से संबोधित कर कल्याणपथ पर लगाया है। पदयात्राएँ करते हुये अनेक मांगलिक संस्थाओं, विद्या केन्द्रों के लिये प्रेरणा व प्रोत्साहन का संचार किया है। **वर्ष 1968 से 2024 तक 56 वर्षायोग** जिनमें 1968 से 1972 तक पांच आचार्य श्री ज्ञानसागर जी के साथ राजस्थान प्रांत में 1973 से 1975 तक तीन आचार्य अवस्था में क्षुल्लक जी के साथ (2 राजस्थान, 1 उत्तरप्रदेश) 1976 से 2024 तक आचार्य अवस्था में ससंघ (म.प्र. 37, बिहार 1, महाराष्ट्र 5, गुजरात में 1, छत्तीसगढ़ में 4)

पंचकल्याणक महोत्सव- वर्ष 1976 बुन्देलखण्ड प्रथम आगमन पर 1977 में सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में प्रथम पंचकल्याणक का आह्वान करते हुये मध्यप्रदेश में 50, महाराष्ट्र 3, छत्तीसगढ़ में 4, गुजरात 1, राजस्था में 1 लगभग 60 पंचकल्याणक सम्पन्न कराते हुये मध्यप्रदेश व अन्य प्रान्तों में 350 से अधिक पाठशालाएँ जिनमें 25,000 विद्यार्थियों को धार्मिक ज्ञान पाने हेतु आशीष प्राप्त है।

साहित्य- हिन्दी में 50 से अधिक काव्य, शतक-संग्रह एवं मूकमाटी महाकाव्य के साथ-साथ 10 संस्कृत रचनायें 50 से अधिक प्रवचन साहित्य जैनाचार्यों के 22 ग्रंथों का पद्यानुवाद 500 से अधिक कवितावली के साथ-साथ अंग्रेजी, प्राकृत, संस्कृत, बंगला, कन्नड, अपभ्रंश भाषा में सृजन कर उल्लेखनीय कार्य किया है।

कालजयी दिगम्बर साधक के रूप में आचार्य श्री ने सुशिक्षित शिष्यों का एक वृहद समयसार रचा है। जिनके ज्ञान और श्रमणत्व की साधना ने प्रेरणा के प्रेरक बिम्ब विस्तीर्ण किये हैं। पूज्य गुरुवर ने 89 मुनि, 56 ऐलक, 64 क्षुल्लक 172 आर्यिका एवं 3 क्षुल्लिकाओं का एक नया संयमी संसार सृजित किया है। प्रतिभा बहनों के लिये भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया है। आचार्य महाराज की साध्ना और प्रभावना स्तुत्य है। इस युग में ऐसे संतों के दर्शन अलभ्य- लाभ है। भविष्य में इस युग को विद्यासागर युग से जाना जावेगा। आप जीवन पर्यन्त इसी तरह की धर्म प्रभावना, इसी तरह धर्म ध्वजा फहराते रहें ओर हम जैसे व्यक्तियों को छाया देते रहें। आचार्य श्री का बाह्य व्यक्तित्व उतना भी मनोरम है जितना अंतरंग तपस्या में वे वज्र से कठोर हैं, पर उनके मुक्तहास्य और सौम्य मुखमुद्रा से कुसुम की कोमलता झलकती है। आचार्य कुन्दकुन्द और समंतभद्र की परम्परा को आगे ले जाने वाले आचार्य है। शहरों से दूर तीर्थो में, एकांत स्थलों में वर्षायोग करते हैं। दीक्षार्थी शिष्यों को पूर्व घोषणा के बिना ही दीक्षा के लिये तैयार करते हैं। इसी भावना के साथ, कामना के साथ आचार्य श्री के चरणों में कोटिशः नमन विनम्र विनयांजलि प्रेषित करता हूँ।

दुःख का कारण परिग्रह

क्या तेरा है क्या मेरा है दुनिया तो रैन बसेरा है।

❋ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ❋

संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ससंघ चंद्रगिरि डोंगरगढ़ में विराजमान थे। प्रवचन में आचार्य श्री ने बताया कि एक दुकान है जिसमें बहुत से कर्मचारी कार्य करते हैं और उनका एक सेठ भी है। सभी कर्मचारी समय से आते जाते, समय से काम करते, समय से खाते और समय से सोते हैं। सभी सुकून से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। परन्तु सेठ जी को सोने के लिये नींद की गोली खानी पड़ती है। ना दिन को चैन है ना रात को आराम है शरीर भी त्राश खा रहा है। ऐसे में एक व्यक्ति उनको कहता है कि तुम अपना कारोबार अपने किसी विश्वसनीय मुनीम को दे दो जिससे तुम्हें कुछ आराम मिल जायेगा तो वह सेठ कहता है कि ऐसे में तो परेशानी और बढ़ जायेगी लोग कहने लगेंगे कि सेठ ने दुकान उसके नाम कर दी और सारा करोबार अब उसका हो गया है। मेरे नाम से ही तो दुकान पूरे शहर में बजती है फिर मेरा क्या होगा लोग तो उसी का नाम लेने लग जायेंगे। यदि आपको खून की कमी हो रही हो तो हमारे पास उसे बढ़ाने का उपाये है। आचार्य कुंदकुंद स्वामी ने शास्त्रों के माध्यम से बताया है कि हम खाली हाथ आये थे और खाली हाथ ही जायेंगे, अधिक परिग्रह दुःख का कारण होता है और उसमें मूर्छा होना आपको दुखी बनाये रखता है। यदि आप अपना सब कुछ धन, दौलत, मकान, दुकान, गाड़ियाँ आदि अपने नाम से हटाकर लिखित में दूसरे के नाम कर दोगे तो निश्चित ही आपका खून बढ़ने लगेगा और नींद भी अच्छी आने लगेगी। हम किसी भी द्रव्य आदि को अपना मान लेते हैं और उसी में अपना अधिकार समझते हैं यही दुःख का कारण है। यदि हम उसे अपना ना माने तो अपने आप आपको शांति की अनुभूति होगी। यह शरीर, धन, दौलत, मकान, दुकान, गाड़ियाँ आदि सब नश्वर हैं और हमारी जो चैतन्य आत्मा है वह अनश्वर है जो कभी मिटने वाली नहीं है और जो इस बात को समझ कर तदनुरूप जीवन यापन करता है वह हमेशा आनंद का अनुभव करता है। पसीना दो प्रकार का होता है एक गर्म और एक ठंडा। तब आप परिश्रम करते हो तो आपको गर्म पसीना आता है जो शरीर को स्वस्थ्य बनता है और जब मृत्यु का भय होता है तो शरीर ठंडा पड़ने लगता है और जब ठंडा पसीना आता है। यदि आप शरीर में मोह रखोगे इसे अपना मानोगे तो आपको हमेशा इसे खोने का भय रहेगा और यदि आप इस शरीर को नश्वर और चैतन्य आत्मा (जीव) को मैं हूँ मानोगे तो आप हमेशा अभय रहोगे और फिर आपको मृत्यु से भी डर नहीं लगेगा और आप उसे ही जीतकर मृत्युंजय हो जाओगे।

वेग, उद्वेग, आवेग से बचे

सम्वेग और निर्वेग से अपना जीवन यापन करें।

✻ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ✻

संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ससंघ चंद्रगिरी डोंगरगढ़ में विराजमान थे। प्रवचन में आचार्य श्री ने कहा कि तीर्थंकर जितने भी होते हैं वे सारे के सारे अनपढ़ होते हैं। उनकी पढ़ाई कहीं भी नहीं होती और आगे भी ऐसा ही रिकार्ड रहेगा। आप लोग पढ़े लिखे हो, जिसको कुछ समझ नहीं आता उसके लिये विद्यालय हैं। वे अनपढ़ भी अच्छे-अच्छे उलझन, समस्याओं का भी समाधान दे देते हैं। ये युग एक प्रकार से वैज्ञानिक युग माना जाता है इसी मापदंड से किसी की पहचान निर्धारित किया जाता है। स्वर्ग में भी सुनने को नहीं मिलता कि कोई देव पाठशाला या विद्यालय जाता हो वहाँ यह सुनने को जरूर मिलता है कि वो गुरु कहलाते हैं जिसे बृहस्पति कहते हैं। उन्होंने स्वर्ग में विद्यालय की स्थापना नहीं की। इतना अवश्य है कि उनको विशेष क्षयोपशम रहता होगा इसलिये उनको बृहस्पति कहकर पुकारते हैं और कहीं-कहीं पर कवि लोग काव्यों में बृहस्पति का नाम याद करते हैं। हे भगवान आपके गुणानुवाद करने में अक्षमता हो गयी। याने वह बृहस्पति भी चाहे तो वह भगवान का गुणानुवाद पूर्ण नहीं कर सकता। ऐसा आपका व्यक्तित्व है फिर भी आप पढ़े लिखे नहीं हो। हां समझ नहीं आता ऐसा नहीं, समझते नहीं इसलिये विद्यालय खोलकर उनको समझाया जाता है। समझाने के बाद भी यदि उनको समझ नहीं आता है तो वह हम तुम आदि में समावेश हो जाते हैं।

आप अपने आपको पढ़े लिखे मत समझो। एक हाइको लिखा था कि - किसी वेग में, अनपढ़ या पढ़े, दोनों समान है। अनपढ़ को भी हम उसी श्रेणी में रख सकते हैं। पढ़े लिखे होने के बाद भी माता पिता की कोई बात सुनते नहीं है क्योंकि वे वेग में है, बहुत वेग में है। माता-पिता सोचते हैं कुछ कहो नहीं , नहीं तो कहीं चला न जाये। इतने वेग में जैसे कुछ गाड़ी कुछ स्टेशन में रूकती नहीं है और स्टेशन से गाड़ी बहुत वेग से निकल जाती है क्योंकि वहाँ सिग्नल की सेटिंग ऐसी होती है। वेग, उद्वेग, आवेग के विपरीत वह अनपढ़ है और जिसके पास सम्वेग और निर्वेग है वह सम्वेग और निर्वेग के माध्यम से दूसरों को शांत कर सकता है किन्तु उद्वेग के माध्यम से शांत को भी अशांत किया जा सकता है। आप कौन सा कार्य कर रहे हो बताओ ? ध्यान रखो जब माथा तपता है गरम होता है तो उसको सम्वेग वाला व्यक्ति ही शांत बिठा सकता है। भगवान के समवशरण में सिंह और गईया साथ में बैठते हैं। गईया को देखकर सिंह खाने का भाव नहीं करता हे तो गईया भी सिंह को देखती है कि हम दोनों समान हैं। जहाँ राजा और प्रजा दोनों एक हो जाते हैं उसका नाम समवशरण है। हमें कुछ करना नहीं ज्यादा कुछ पढ़ाई करना नहीं, वेग को देखते रहो। ड्राईवर गाड़ी को चलाता है स्वयं तो बैठा रहता है। वेग को सम्हाल के गाड़ी चलाता है क्योंकि सैकड़ों, हजारों लोग उस पर भरोसा, विश्वास करके गाडी में बैठे हैं तो वह भी जागृत होकर गाड़ी चलाता है। हमें जागृति की आवश्यकता है पढ़ लिखकर के बैठने की नहीं काम करने की आवश्यकता है। शांत रहने की

आवश्यकता है। जगत का यह स्वभाव है कि वह ज्ञान हमारे पास स्वभाव के रूप में है न ही उसमें वैराग्य उठ रहा है। विद्यालयों के माध्यम से उसमें आवेग, उद्वेग आदि की क्षमता आ जाती है किन्तु आत्मा का स्वभाव क्या है इसके बारे में एक सेकंड भी खर्च नहीं करते आप लोग और हमारे पास आकर कहते हो कि महाराज शांति दे दो, शांति से बैठ जाओ तो शांति मिल जायेगी। आज सीटिंग का इतना महत्व नहीं है जितना कि भागम- भाग का है। उसको हम समझा भी नहीं सकते जो शांत बैठता है उसको तात्कालिक उसका अनुभव होने लग जाता है। वैराग्य में कभी खदबद-खदबद नहीं होता, आवेग में वो कभी शांत बैठ ही नहीं सकता, उछलता रहता है। आज की विद्या उछाल सिखाती है। उछाल होना तो चाहिये लेकिन एक पढ़ा लिखा होने के बाद भी आवेग में आ जाता है और जो अनपढ़ है वह सम्वेग की तरफ आ जाता है और मिथ्यात्व को मिटाते हुये सम्यक् दर्शन को और घना-घना बनाता जाता है, आस्था को और मजबूत बनाते चला जाता है।

तीर्थंकर और उनकी संतान विद्यालय नहीं जाती है यदि जाती भी है तो उन्हें क्षत्रियता आदि का पाठ दिया जाता है। यदि व्यक्ति अशांत होकर के शांत को भी अशांत बना रहा है तो उसके लिये क्षत्रियता काम करती है। तलवार इसलिये रखी है कि तुम्हारी उछल कूद शांत हो जाये। आज छुप-छुप कर छापा मारा जाता है। रेड है वो वाइट नहीं है, जितना रेड रखे हो उसे निकाल दो नहीं तो रेड हो जाओगे। पहले नियम दिलवाते थे कि व्यापारी मौलिक-मौलिक जो वस्तु है उसे राज कोष में देगा। जब व्यापारी बाहर से व्यापार करके आता था तो सारी कमाई राजा को दिखाता था और जो विशेष वस्तु होती थी उसे राजा को दे देता था। राजा जो हीरा मोती पहनता था वह अलग होते थे और जो राजकोष में होता था वह अलग रहता था और उसकी चाबी राजा के पास नहीं होती थी। राजा पढ़ा लिखा नहीं भी होता था तो उसे कभी न्यायालय में जाने कि आवश्यकता नहीं होती थी। वह क्षत्रियता को नहीं छोड़ता था। बनिया लोग क्षत्रियता को नहीं जानते। सीधे धन न मिले तो तौलने में डंडी मारते हो।

सम्यकदर्शन की प्राप्ति के लिये सम्वेग, निर्वेग की आवश्यकता है, शांत बैठने कि आवश्यकता है जिससे विशुद्धि लब्धि प्राप्त हो जाती है और विशुद्ध लब्धि के बिना सम्यक् दर्शन की भूमिका बनती नहीं है इसलिये चुप बैठो। चुप बैठने से ही कौन किसका अधिकारी, भोक्ता है पता चलता है। बच्चे को भोजन धीरे-धीरे कराओ। दांत का काम आंत को मत दो नहीं तो दांत गिर जायेंगे। यदि पढ़ा लिखा भी आवेग में आ रहा है तो उसकी संगति अच्छी नहीं है। आर्य के साथ संगति रखो। आवेग वाले के साथ संगति मत रखो उससे भला होने वाला नहीं है। आज संगति अच्छी मिलती नहीं है इसलिये युवा पीढ़ी आवेग में रहती है और माता पिता शांत बैठे हैं। स्वर्गों में भी विशुद्धि ऐसे ऊपर-ऊपर बनी रहती है इसलिये उनको पाठशाला की कोई आवश्यकता नहीं होती। पढ़े लिखे होने के बाद भी इधर-उधर कि बात करते हैं और आवेग में आ जाते हैं। इसलिये जो व्रती बने हैं वह शांति के साथ रहे तो उसका चरित्र ज्यों का त्यों बना रहता है। जो शांत बैठा है उसे सम्यग्दर्शन प्राप्त हो सकता है और जो वेग में है उसे सम्यग्दर्शन प्राप्त नहीं हो सकता। गुरुजी कहते थे कि बहुत पढ़ना नहीं, बहुत पढ़ो इसका अर्थ मैं यह समझता हूँ द्वादशांग बार-बार है किन्तु द्वादशांग को बहुत बार पढ़ो तो णमोकार मंत्र भी पर्याप्त है। इसलिये आप लोग वेग, उद्वेग, आवेग से बचें और सम्वेग और निर्वेग से अपना जीवन यापन करें।

चलो देखें यात्रा

सोनीजी की नसिया और अजमेर शहर

राजस्थान का प्रसिद्ध ऐतिहासिक शहर आज प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटक स्थल है। पुष्कर ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह तथा सोनी जी की जैन नसिया के दर्शन-भ्रमण हेतु वर्ष भर यात्री अजमेर आते हैं। ढ़ाई दिन का झोपड़ा भी जैन मंदिर था जिसको नष्ट कर मस्जिद बनाई गयी हैं।

अजमेर से प्रमुख दूरियाँः आगरा- 363, अहमदाबाद- 526, भोपाल- 543, बीकानेर-233, दिल्ली 389, जयपुर 131, अजमेर में 32 जिनालय हैं।

धर्मशालाः दिगम्बर जैन बीसपंथी अजमेरी आम्नाय पंचायत छोटे घड़े की नसिया जी धर्मशाला दौलताबाद के सामने सम्पर्कः 0145-2262951

सोनी जी की नसियाः जैनियों के लिये सोनी जी की नसिया एवं सोनी जी का निजी मंदिर दर्शनीय है। इस सिद्धकूट में भगवान आदिनाथ की प्रतिमा है। मंदिर का स्वर्ण मंडित कलश एवं मान स्तंभ दूर-दूर से दिखता है।

आवासः सोनी जी की नसिया के पास छोटे घड़े की नसिया, फव्वारे चौक में धर्मशाला है।

पर्यटन स्थलः दरगाह मदरगेट से बाजार पार दरगाह आती है। जो मुसलमानों का देश में पवित्रतम स्थल है। यहाँ उर्स के समय बेशकीमती चादरें चढ़ाई जाती हैं। सूफी संत ख्वाजा को श्रद्धा के लिये लाखों यात्री देश विदेश से यहाँ आते हैं।

समीपवर्ती स्थलः पुष्कर हिन्दुओं के पवित्रस्थल में ब्रह्म मंदिर के अलावा सैकड़ों मंदिर हैं।

कविता

मानव शुभम जन्म

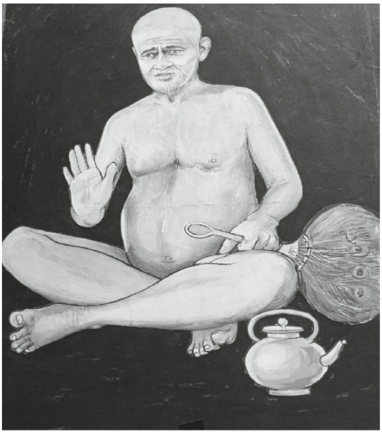

मानव शुभ जन्म मिलो दाव न गमावरे।
गुरु शरण आवरे गुरुवर गुण गावरे॥
क्रोध काम माया की गतियों में भटक गये।
भोगों की चमक दमक गलियारे अटक गये॥
ग्रीष्म की तपन पड़ी गुरु छांव आवरे॥
सीदी सी संतों की अमृत सी धार बहे।
डूब चलो चंचल मन वचनों की धार बहे॥
ज्ञान की जा गंगा है खूब तो नहाव रे॥
विद्या के सागरे में ज्ञान की तरंगें हैं।
अंतर में डूबने की हर पल उमंगें हैं॥
सद्गुरु के चरणों में लिफ्ट लिपट जावरे॥

आगम दर्शन

षट्खंडागम ग्रंथ का सांख्यकीय विवेचन

षट्खंडागम ग्रंथ सूत्रात्मक ग्रंथ है प्रस्तुत ग्रंथ रचयिता आचार्य भूतबली एवं आचार्य पुष्पदंत जी हैं इस ग्रंथ की रचना 2100 वर्ष पूर्व गुजरात के अंकलेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ पर हुई थी यह तीर्थ गुजरात प्रांत भड़ूच जिले में है। इस ग्रंथ के प्रारंभिक पाँच खंडों में 64-64 सूत्र हैं महाबंध खंड की रचना के सूत्र पृथक से गणनीय हैं। जीव स्थान प्रथम खंड के सूत्र संख्या निम्न प्रकार है।

क्र.	प्ररूपण	सूत्र संख्या	विषय
01	सत् प्ररूपणा	177	गुणस्थान मार्गणा की दृष्टि स्वरुप संख्यादि
02	संख्या प्ररूपणा	192	जीवों की संख्या का वर्णन
03	क्षेत्र प्ररूपणा	92	गुणस्थान मार्गणानुसार क्षेत्र जीवों का क्षेत्र वर्णन
04	स्पर्शन प्ररूपणा	185	मरण समुद्धातानुसार स्पर्श
05	काल प्ररूपणा	342	गुणस्थान मार्गणानुसार काल
06	अंतर प्ररूपणा	397	जीवों का गुण मार्ग अनुसार अंतर वर्णन
07	भाव प्ररूपणा	93	गुणस्थान एवं मार्गणानुसार भावों का वर्णन
08	अल्प बहुत्व प्ररूपणा	382	जीवों की हीनाधिकता का वर्णन
09	जीव स्थान चूलिकायें	515	
10	प्रकृति समुत्कीर्तन चूलिका	46	कर्म का विस्तार पूर्वक वर्णन
11	स्थान समुत्कीर्तन चूलिका	117	एक साथ बंधने वाली कर्म प्रकृति का वर्णन
12	प्रथम महादंडक चूलिका	2	प्रथम सम्यक्त्व ग्रहण करने वाले के 73 कर्म प्रकृति का बन्ध विवेचन
13	द्वितीय महादंडक चूलिका	2	प्रथम सम्यक्त्व ग्रहण कर्त्ता देव नारकी का वर्णन
14	तृतीय महादंडक चूलिका	2	सातवें नरक में सम्यक्तवाभिमुख जीव के कर्म बंध का वर्णन
15	उत्कृष्ट स्थिति चूलिका	44	कर्म प्रकृति के उत्कृष्ट स्थिति का वर्णन
16	जघन्य स्थिति चूलिका	43	जघन्य स्थिति का वर्णन
17	सक्यक्त्वोत्पत्ति चूलिका	16	सम्यक्त्व के अधिकारी का वर्णन
18	गति अगति चूलिका	243	जीवों के गति अगति का वर्णन

इस तरह से षट्खंडागम महान ग्रंथ के अंतर्गत आने वाले जीवस्थान खंड में 2375 सूत्रों के माध्यम से जैनेन्द्र सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया है। यद्यपि हम षट्खंडागम नहीं पढ़ सकते हैं हमारे पूर्व महान आचार्यों ने हमें जिन भारती का अमूल्य अवदान दिया है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जून 2024

चल चल मेरे हाथी

प्रथम-

ये दिन कितने अच्छे है
हम सब भोले बच्चे हैं
नये नये हम खेल रचायें
मंदिर में भी धूम मचायें
खेल खेलने आओ साथी
चल चल मेरे हाथी

कमल चौधरी, राहतगढ़

द्वितीय-

ये दिन भूलेंगे हम कैसे
बचपन के दिन सोने जैसे
फोटो खीचों मेरे साथी
चल चल मेरे हाथी

श्रीमती अनीता जैन, इंदौर

तृतीय-

स्वर्ग से सुन्दर सपनों से प्यारा
बचपन का यह जीवन न्यारा
उछल कूंद करते दिन रात
चल चल मेरे हाथी

श्रीमती इन्द्रा जैन, देवास

वर्ग पहेली क्र. 295
मई 2024 के विजेता

प्रथम : आयुषी जैन, गंजबासौदा
द्वितीय : पूनम जैन, इंदौर
तृतीय : कमलेश जैन, बनारस

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द् अ द्ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द्द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

दैव शक्ति पुरुषार्थ से अधिक

अहो प्रमदहेतवोऽपि सुखयान्ति नो दुःखितान् ।

उस समय जगत् में समस्त जीवों के साथ-साथ चन्द्रमा की किरणों के स्पर्श से कुमुदिनि विकास को प्राप्त हुई और अपनी प्रिया से वियुक्त विरह से दैदीप्यमान चक्रवाकों के साथ-साथ कमलिनी विकास को प्राप्त नहीं हुई सो ठीक ही है क्योंकि दुःखी मनुष्यों को हर्ष के कारण सुख नहीं पहुँचा सकते।

दैवमेव परं लोके धिक् पौरुषमकारणम् ।

वचन बोलने में अतिशय चतुर श्रीकृष्ण कहने लगे की दैव और पुरुषार्थ में दैव ही परम बलवान है। संसार में इस अकारण पुरुषार्थ को धिक्कार है।

सद्भूतस्यापि दोषस्य परकायस्य भाषणम् ।
पापहेतुरमोधः स्यादसद्भूतस्य किं पुनः ।।

दूसरे के विद्यमान दोष का कथन करना भी पाप का कारण है फिर अविद्यमान दोष के कथन करने की तो बात ही क्या है ? वह तो ऐसे पाप का कारण होता है जिसका फल कभी व्यर्थ नहीं जाता- अवश्य ही भोगना पड़ता है।

वक्ता श्रोता च पापस्य यन्नात फलमष्नुते ।
तदमोधममुत्रास्य वृद्धयर्थमिति बुद्धयताम् ।।

पाप का वक्ता और श्रोता जो इस लोक में उसका फल नहीं प्राप्त कर पाता है। वह मानो परलोक में वृद्धि के लिये ही सुरक्षित रहता है ऐसा समझना चाहिये।

केरियर

धन कमायें विधि से विधि (LAW)

विधि के क्षेत्र में कैरीयर प्रतिष्ठा से जुडा है। और इससे व्यक्ति समाज के संपन्न वर्गों से मेलजोल रख सकता है तथा अतिसमृद्ध जीवन शैली के लिये आवश्यक धन का अर्जन कर सकता है।

न्याय प्रणाली का काम उच्च दर्जा का है तथा इसे लोकशाही का तीसरा स्तंभ भी कहा जाता है।

पाठ्यक्रम- एल.एल.बी पाठ्यक्रम दो प्रकार का है: 3 वर्षीय एवं 5 वर्षीय, 3 वर्षीय पाठ्यक्रम के लिये मूल योग्यता स्तानक डिग्री अथवा किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से इसके समक्ष योग्यता होना आवश्यक है। 5 वर्षीय पाठ्यक्रम के लिये 10+2 की योग्यता आवश्यक है।

रोजगार- वकील सरकारी तथा व्यक्तिगत रूप से भी वकीली कर सकते हैं तथा परीक्षा और अनुभव की तर्ज पर न्यायाशीध भी बन सकते हैं।

सॉलिसीटर जनरल के पद भी आप ग्रहण कर सकते हैं तथा राजनीतिक सलाहकार के रूप में भी कार्य किया जा सकता हैं।

विश्वविद्यालय

1 आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर

2 बाम्बे विश्वविद्यालय, मुंबई

3 जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर

4 गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर

देश के लगभग सभी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालायों से वकालत की पढ़ाई की जा सकती है।

दुनिया भर की बातें

मई 2024

■ 1 मई

- हरिद्वार- रील बना रही छात्रा वैशाली ट्रेन की चपेट में आई मौत हुई की।

- बैंगलुरुः हाईकोर्ट ने एक फैसले में कहा जाओ फांसी लगाना।

- सलमान गोली बारी केस में आरोपी अनुज भायन ने जेल में फांसी लगाई।

■ 2 मई

- गढ़चिरौलीः खूँखार नक्सली जोगन्ना मुठभेड़ में ढेर हुआ।

- हासन के सांसद प्रज्वल खन्ना के खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी हुआ।

- दिल्ली महिला आयोग के 223 कर्मचारी बर्खास्त करने के प्रस्ताव को उपराज्यपाल ने मंजूरी दी।

■ 3 मई

- एटापल्लीः जादू टोने की शंका में दो लोगों को जिंदा जलाया 15 आरोपी गिरफ्तार।

- उपचुनाव में हार के बाद ऋषि सुनक भारी दबाब में आये।

- भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के सचिव अतुल कुमार अंजान का निधन हुआ।

■ 4 मई

- पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवगौड़ा के बेटा एच.डी. खन्ना विधायक सेक्स स्कैंडल मामले में गिरफ्तार हुआ।

- पुरी लोकसभा के काँग्रेस उम्मीदवार सुचरिता मोहंती ने टिकट लौटाया।

- सरकार ने प्याज निर्यात प्रतिबंध वापिस लिया।

■ 5 मई

- जुलाई में होने वाले ओलंपिक से पहलवान बजरंग पूनिया निलंबित हुये। उन पर डोपिंग का मामला जारी है।

- पाकिस्तान में योग का प्रवेश अधिकृत रूप से हुआ।

- बीनाः विधायक निमर्ला सप्रे काँग्रेस छोड़ भाजपा में गई।

■ 6 मई

- झारखंड के मंत्री आलमगीर आलम के निजी सचिव संजीव कुमार के नौकर के घर 30 करोड़ नगद मिले।

- दिल्लीः एक अदालत ने के. कविता की याचिकायें खारिज की।

- पनामा के राष्ट्रपति चुनाव में जोस राउल मुलीनो की जीत पक्की।

■ 7 मई

- सुप्रीम कोर्ट पश्चिम बंगाल शिक्षक भर्ती रद्द करने पर रोक लगाई।

- दस लाख का इनामी आतंकी बासित डार तीन साथियों के साथ मारा गया।

- भारत में चीन के राजदूत जू फेइहांग बने।

■ **8 मई**

- काँग्रेस नेता सैम पित्रोदा के विविदित बयान से बबाल मचने के बाद इंडियन ओवरसीज काँग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया।

- औरंगाबाद, उस्मानाबाद के नाम बदलने के खिलाफ याचिकायें खारिज हुई।

- इस्लामाबादः बुशरा बीबी को अशियाला जेल भेजने के आदेश हाईकोर्ट ने दिये।

■ **9 मई**

- पाक के ग्वादर में अंधाधुंध गोलीबारी में 7 लोगों की मौत हुई।

- सेनेगल की राजधानी डकार में बोइंग 737 फिसलाने से 10 लोग घायल हुये।

- स्टॉक होम में इजरायली पी.एम. नेतन्याहू के विरूद्ध प्रदर्शन हुआ।

■ **10 मई**

- बीजापुर (छत्तीसगढ़) मुठभेड़ में 12 नक्सली मारे गये।

- नरेन्द्र भोलकर हत्याकांड के 2 आरोपियों को उम्रकैद 3 बरी हुये।

- दिल्लीः मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत सुप्रीम कोर्ट ने दी।

■ **11 मई**

- सीतापुरः परिवार के 5 सदस्यों की हत्या के बाद अनुराग सिंह ने आत्म हत्या की।

- दिल्ली में तूफान से 2 मरे 23 घायल हुये।

■ **12 मई**

- इस्लामाबादः पीओके में आटे के लिये झड़पें सुरक्षा बल और आंदोलन कारियों के बीच हुई गोली चली 100 से अधिक घायल हुये।

- इंडोनेशिया के जाया प्रांत में सड़क दुर्घटना में 11 लोग मरे।

- पाक के वजीरस्तान में 2 आंतकी हमले में 7 सुरक्षा कर्मी मृत हुये।

■ **13 मई**

- लोकसभा चुनाव के चौथे चरण 96 सीटों के लिये 62% मतदान हुआ।

- मुंबईः आंधी तूफान में होर्डिंग गिरने से 8 लोग मरे।

- गढ़चिरौलीः 22 लाख के इनामी 3 नक्सली मुठभेड में मारे गये।

■ **14 मई**

- वाराणसीः प्रधान नरेन्द्र मोदी ने लोकसभा का नामांकन भरा।

- अरविंद केजरीवाल के निजी सहायक वैभव कुमार ने स्वाति मालीवाल के साथ बदसलूकी की।

■ **15 मई**

- रांचीः झारखंड मंत्री आलमगीर को ई.डी. ने धनशोधन मामले में गिरफ्तार किया।

- केन्द्र सरकार ने 14 लोगों को सी.ए.ए के तहत भारतीय नागरिकता दी।

- अमेरिका ने चीनी सामान के आयात पर 100 % टेक्स लागू किया।

■ **16 मई**

- फुटबॉल मैच में सबसे ज्यादा गोल करने वाले सुनील छत्री ने सन्यास लेने की घोषणा की।

- छिंदवाड़ाः चर्च विशप सहित 5 लोगों ने चर्च की जमीन बेची।

- कोटाः कार में बंद 3 वर्षीय गौरविका नागर की मौत हुई।

■ **17 मई**

- नेपाल ने एवरेस्ट और एम.डी.एच. मसालों की बिक्री पर रोक लगाई।

- भारत और मंगोलिया का रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर समझौता हुआ।

- झारखंड पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को अंतरिम जमानत नहीं मिली।

■ **18 मई**

- इजरायली सेना ने एयर स्ट्राइक की 40 लोग मरे 90 घायल हुये।

- काबुलः अफगानिस्तान में बाढ़ से 50 लोग मरे।

- अरविंद केजरीवाल के पी.ए. विभवकुमार स्वाति मालीवाल बदसलूकी मामले में गिरफ्तार।

■ **19 मई**

- हैलीकॉप्टर हादसे में ईरान के राष्ट्रपति इब्राहीम रईसी की मौत हुई।

- स्वाति मालीवाल मामले में विभव कुमार को 5 दिन की हिरासत।

- रायपुर : चलती ट्रेन पर खम्बा गिरने से 3 लोग घायल हुये।

■ **20 मई**

- कोलकाता हाईकोर्ट ने भाजपा के टी.एम.सी के विरूद्ध विज्ञापन पर रोक लगाई।

- राजौरीः पीओके की महिला और 5 बांग्लादेशी नागरिकों को सेना ने गिरफ्तार किया। इनके पास बीजा नहीं था।

- लाई चिंगते ताइवान के राष्ट्रपति बने।

■ **21 मई**

- पुणेः पुलिस ने कार दुर्घटना में शामिल 17 वर्षीय लड़के के पिता विशाल अग्रवाल को गिरफ्तार किया।

- लंदनः सिंगापुर विमान की टर्युलेंस के कारण आपात लैंडिग हुई 1 की मौत।

- मुम्बईः विमान की चपेट में आने से 40 राजहंसों की मौत हुई।

■ **22 मई**

- नेपाल के कामी रीता शेरपा ने 30वीं बार एवरेस्ट चोटी पर फतह की।

- भारत में 9 दिन से लापता बांग्लादेशी सांसद अनवारूल अजीम अनार की हत्या कोलकाता में होने के अहं सबूत मिले।

- कोलकाता हाईकोर्ट 2010 से जारी सभी पश्चिम बंगाल के ओबीसी प्रमाण पत्र रद्द किये।

■ **23 मई**

- 16 वर्षीय काम्या कार्तिकेयन ने एवरेस्ट चोटी को फतह किया।

- ठाणे (महाराष्ट्र) एक रसायन फैक्ट्री में भीषण आग लगी 8 मृत 40 घायल।

- मैक्सिको में चुनावी मंच गिरने से 9 मृत 63 घायल हुये।

■ **24 मई**

- मिजोरम में 8.40 करोड़ की हेराइन जब्त हुई।

- विको कम्पनी के चेयरमैन यशवंत

पेंढारकर का निधन हुआ।

- नर्मदा बचाओ आंदोलन की नेता मे धापाटकर मानहानि मामले में दोषी साबित हुई उन्हें 2 साल की सजा सुनाई गई।

■ 25 मई

- राजकोटः गेमिंग जोन में आग लगने से 24 लोगों की मौत हुई।

- बेमेतरा (छत्तीसगढ़) : बारूद फैक्टरी में धमाका 12 लोगों की मौत हुई।

- अनंतनागः राजौरी लोकसभा चुनाव में 40 साल बाद 50% वोटिंग हुई।

■ 26 मई

- पूर्वी दिल्ली के विवेक विहार में ऑक्सीजन सिलेंडर फटने से 7 नवजात शिशुओं की मौत हुई।

- कोलकाताः चक्रवात भीषण तूफान में बदला रेमल की गति 120 किमी. रही।

- खीरीः नहर में 12 डाल्फिन फँसी उन्हें नदी में छोड़ा।

■ 27 मई

- पोर्शकार हिट एंड रन मामले में 3 लाख में सेंपल बदलने वाले 2 डॉक्टर गिरफ्तार हुये। डॉ. श्री हरि हल्लोर, डॉ. अजय तवारे।

- अरविंद केजरीवाल के पी.ए. विभव कुमार को स्वाति मालीवाल के मामले में जमानत नहीं मिली।

- हमास के कैम्प पर 900 किलो बम इजरायल ने गिराये 45 लोग मरे।

■ 28 मई

- एजलः पत्थर की खदान ढहने से 17 लोगों की मौत हुई।

- सच्चा सौदा डेरा के राम रहीम हत्या के एक मामले में बरी हुये।

- गोपेश्वरः 650 श्रद्धालु बिना पंजीयन के बद्रीनाथ नहीं पहुंच पाये उन्हें चेक पोस्ट से वापिस लौटना पड़ा।

■ 29 मई

-छिंदवाड़ाः जिले के बोदल कछार गाँव में युवक ने परिवार के 8 सदस्यों की हत्या कर स्वयं फांसी पर झूला।

- राजद्रोह मामले में छात्र नेता शरजील इमाम को जमानत मिली।

- ईडी ने मादक पदार्थ से जुड़े जगदीश सिंह से 3.5 करोड़ रूपये नगद जब्त किये।

■ 30 मई

- रामपुर (उ.प्र.) जिले की एक विशेष अदालत ने पूर्व मंत्री आजम खान को मकान तोड़ने के मामले में 10 साल की सजा सुनाई।

- जम्मूः एक बस खाई में गिरी 22 लोगों की मौत हुई 69 लोग घायल हुये।

- जबलपुरः बॉयफ्रेंड से रिस्ते पर आपत्ति करने पर लड़की ने पिता और भाई की हत्या कर शव के टुकड़े कर फ्रिज में भरकर मुकुल सिंह और लड़की हरिद्वार पहुंचे।

■ 31 मई

- भारत का जीडीपी ग्रोथ 8.2 % 2024 का पहुँचा।

- एयर इंडिया की उडान 3 घंटे लेट हुई खड़े विमान में यात्री बेहोश हुये।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सातवें चरण का प्रचार समाप्त होते ही कन्याकुमारी में ध्यान लगाकर बैठे।

इसे भी जानिये

विभिन्न माध्यमों में ध्वनी की चाल

	माध्यम	ध्वनी का चाल m/s at O°C
01	वायू	332
02	हायड्रोजन	1269
03	कार्बनडाइ ऑक्साईड	260
04	भाप 100°C	405
05	अल्कोहल	1213
06	जल	1483
07	समुद्र जल	1533
08	पारा	1450
09	काँच	5640
10	एल्युमिनियम	6420
11	लोहा	5130

कविता

गुरुदेव मेरे सिर पर

एलक सिद्धांतसागर जी महाराज

गुरुदेव मेरे सिर पर, बस हाथ रहे तेरा।
व्यसनों से मुक्त रहूँ, आशीष रहे तेरा॥
बहके ना कदम कोई, जीवन पथ उज्ज्वल हो
तज काम क्रोध मद को, मन भी तो निर्मल हो
तन लोभ न हो कुछ भी, आधार रहे तेरा॥1॥
जग की भौतिकता में, सद्बुद्धि रहे गुरुवर।
पश्चिम की आँधी में, हम भूले नहीं निज घर
करूणा केतन गुरुवर, सत् संग रहे तेरा॥2॥
जुआ मदिरा माँस सभी, वेश्या संग त्याग करे।
पर धन पर नारी, पर नहीं चंचल चित्त करे।
पापों से दूर रहूँ, वरदान रहे तेरा॥3॥
संकल्प की शक्ति ही, भूलो से बचाये थी।
गुरुदेव तेरी वाणी, गिरने से बचायेगी।
गुरु चरणों की सेवा, सब कष्ट हटे मेरा॥

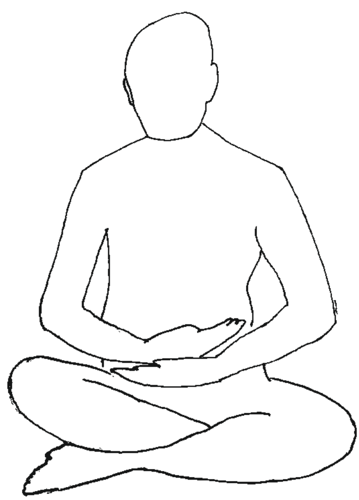

दिशा बोध

सन्तान का सुख

1. बुद्धिमान सन्तति पैदा होने से बढ़कर संसार का दूसरा सुख नहीं।
2. वह मनुष्य धन्य है, जिसके बच्चों का आचरण निष्कलंक हैं। सात जन्म तक उसे कोई बुराई छू नहीं सकती।
3. सन्तान ही मनुष्य की सच्ची सम्पत्ति है, क्योंकि वह अपने संचित पुण्य को अपने कृत्यों द्वारा उसमें पहुँचाता है।
4. निस्सन्देह अमृत से भी अधिक स्वादिष्ट वह साधारण 'रस' है, जिसे अपने बच्चे छोटे-छोटे हाथ डालकर घंघोलते हैं।
5. बच्चों को स्पर्श 'शरीर का सुख' है और कानों का 'सुख' है उनकी बोली को सुनना।
6. वंशी की ध्वनि प्यारी और सितार का स्वर मीठा है; ऐसा वे ही लोग कहते हैं, जिन्होंने बच्चों की तुतलाती हुई बोली नहीं सुनी है।
7. पुत्र के प्रति पिता का कर्त्तव्य यही है, कि वह अपने ज्ञान, अनुभव, सदाचरण और निष्ठा से उसे सभा की प्रथम पंक्ति में बैठने योग्य बना दें।
8. अपने बच्चे को बुद्धि में अपने से बढ़ा हुआ पाने में सभी को आनन्द होता है।
9. माता के हर्ष का कोई ठिकाना नहीं रहता, जब उसके गर्भ से लड़की या लड़का उत्पन्न होता है; लेकिन उससे भी कहीं अधिक आनन्द उस समय होता है, जब लोगों के मुँह से अपने बच्चों की प्रशंसा सुनती है।
10. पिता के प्रति पुत्र या पुत्री का कर्तव्य क्या है ? यही कि संसार उसे देखकर उसके पिता से पूछे -" किस तपस्या के बल से तुम्हें ऐसा सुपुत्र या सुपुत्री मिली है ?"

धरती के देवता आचार्य विद्यासागर

❊ प्रतिष्ठाचार्य पंडित उदयचंद्र शास्त्री, सागर ❊

ये ऐसे संत जिनका नाम लेते ही मस्तक स्वयंमेव झुक जाता है, उनके तप त्याग संयम और ज्ञान की त्रिवेणी से जैन जैनेतर सभी उन्हें संतशिरोमणि कहकर धन्य मानते हैं। चतुर्थ काल सम मुनिचर्या जिनके जीवन की मुख्यधारा थी, जिसे देखकर जानकर सहज ही लोग उन्हें धरती के देवता कहते थे। यह उक्ति सर्वत्र प्रचलित थी, शास्त्रों में वर्णित साधु की जीवनशैली से आमजन परिचित तो नहीं होते पर ऐसे संत का जीवन सबको साक्षात मूलाचार से अवगत करा देता है। ऐसे संत का इस महा कलिकाल में होना सतयुग का दिग्दर्शन करा रहा है। किसी कवि ने लिखा है।

इस युग का सौभाग्य रहा है इस युग में गुरुवर जन्में।
हम सब का सौभाग्य रहा है हम सब गुरुवर के युग में जन्में ।।

धन्य हुई शरद पूर्णिमा- शरद पूर्णिमा तो अनेकों वार आई वर्ष 1946 को उसे धन्य होने का सौभाग्य मिला तिथियां तो वर्ष में 365 आती हैं पर वही तिथि धन्य होती है जिसमें किसी महापुरुष का जन्म हो, चन्द्रमा हर पूर्णिमा को खिलता है पर इस पूर्णिमा पर खिलने के साथ वह प्रमुदित भी हुआ, विद्याधर को पाकर पूर्णिमा को अहसास हुआ कि मैं आज सही खिली हूँ।

लोकोपकारी संत- दीक्षा लेकर संत तो अनेक हुये पर संत शिरोमणि आप इसलिये कहलाये कि आपने जीवदया करते हुये **अनेकानेक गोशालायें खुलवाकर उन निरपराध मूक पशुओं को असमय में कटने से बचाकर उन्हें जीवन दान दिया।** भगवान महावीर के उस उपदेश जिया और जीने दो को सार्थक कर दुनिया को दिखा दिया अहिंसा सर्व जीवों के प्रति होती है इसलिये आप वर्तमान के वर्धमान कहलाये। अहिंसा मात्र शास्त्रों एवं उपदेशों की भाषा बनकर नही रही अपितु आपने क्रियान्वयन कर उसकी व्यापकता सिद्ध कर दी। वे मूक पशु जन्म जन्मांतरों में भी आपके इस उपकार से उपकृत होकर ऋणी रहेंगे।

जीवनदायी भाग्योदय पूर्णायु- आज का मनुष्य अनेक रोग रोगों से पीड़ित है जिसके उपचार को दर-दर भटक कर भी स्वस्थ्य नहीं हो पाता था तथाकथित नीम हकीमों और तांत्रिकों को कुचक्र में फंसकर अनेकों ने अपने जीवन से हाथ धोया है। उनकी इस त्रासिदी से व्यथित होकर गुरुवर ने बुंदेलखंड के हृदयसथल सागर में विशाल अत्याधुनिक किंतु **सस्ती सुलभ चिकित्सा हेतु भाग्योदय तीर्थ को अपनी मंगलमयी प्रेरणा और आशीर्वाद से गरीबों के कल्याणार्थ निर्मित कराया,** आज हर प्रकार की चिकित्सा से संपूर्ण क्षेत्रवासी लाभान्वित होकर अपना जीवन सुरक्षित जी रहे हैं। महा कौसल नगरी

जबलपुर में भी इसी सदभाव के साथ **पुरातन आयुर्वेदिक पद्धति की चिकित्सा का विशाल केन्द्र पूर्णायु निर्मित कराकर सभी को लाभान्वित किया है।**

अनन्य देश भक्त- इंडिया नहीं भारत बोलो की आवाज ने देश के कर्णधारों को भी जागृत कर सचेत किया कि इस देश का वास्तविक नाम भारत है। इंडिया तो अंग्रेजों का थोपा गया षडयंत्र है जिससे इसकी मूल भावना ही बदल जावेगी। आचार्य श्री सदैव कहते रहे कि **इस देश का नाम प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरतचक्रवर्ती के नाम से भारत पड़ा। वह इस युग के प्रथम चक्रवर्ती राजा हुये हैं** तब से ही कर्मभूमि में राज्य व्यवस्था प्रारंभ हुये उसके पूर्व भोगभूमि होने से कल्पवृक्षों से स्वयमेव मनुष्य का जीवन बिना किसी रूकावट के निर्बाध चलता था कहीं कोई कृषि वाणिज्यादि कर्म करने की आवश्यकता नहीं थी। यह भारत विशाल देश था जो अब कई भागों में विभक्त होकर सीमित क्षेत्र का ही देश रह गया। यहां की विशाल सांस्कृतिक धरोहर ने अनेक देशों को समृद्ध किया।

तीर्थोद्धारक संत- आचार्य भगवन ने विशेषकर बुंदेलखंड को अपनी तपोभूमि बनाकर इसे चारों ओर से समृद्ध किया। यहां के पावनतीर्थों की पिछली दशा से उन्हें जो पीड़ा हुई उस पीडा को उन्होंने दूर करने में अपना पूरा समय दिया जिससे सभी तीर्थ आज चहुमुखीविकास की धारा में अग्रणी तीर्थ बनकर उभरे हैं, जहां यात्री आने में संकोच करते थे वे अब बेहिचक बुंदेखंड की यात्रा निर्बाध होकर करते हैं। कुंडलपुर के बड़े बाबा के भव्य पाषाण जिनालय का निर्माण कराकर भी आपकी छवि विश्वपटल में जो अंकित हुई है उससे सभी अचंभित हुये हैं यही कारण है कि वहां का महोत्सव कुंभ महोत्सव कहलाया।

गुरुवर ने जहां इन तीर्थों का उद्धार किया वहीं चैतन्य तीर्थों से भी समाज को अद्भुत हीरे जवाहरात प्रदान कर दिगम्बर मुद्रा के प्रति जनमानस में अनूठी अलख जगाई। 131 दिगम्बर महामुनि, 172 आर्यिका, 61 ऐलक, 161 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका के साथ सहस्त्रों त्याग व्रतियों से जैन जैनेतर सभी समाजजन प्रभावित हुये हैं। यह परंपरा निर्बाध रूप से सच्चे धर्म की ध्वजा सदियों तक फहराती रहेगी। इससे यह युग विद्यासागर युग के नाम से जाना जावेगा मुनि श्री क्षमासागर जी ने जैसे ही आपसे दिगम्बरी दीक्षा ली जैसे ही बुद्धीजीवी वर्ग जो धर्म को ठकोसला कहकर किनारा कर लेता था, उन्हें भी अब धर्म मार्ग सच प्रतीत हो गया, तब से अब तक अनेक एम.बी.बी.एस, इंजीनियर एवं आई ए एस जैसे उच्च शिक्षा प्राप्त की युवक युवतियों ने दीक्षा लेकर अपने को धन्य माना। इससे गुरुवर के संघ के प्रति आस्था का ग्राफ बहुत तेजी से बढ़ने लगा आज वह महामुनि महायोगी हमारे बीच न होते हुये भी हम सबके रग-रग में समाये हैं जिन्हें कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता उनके पावन चरणों में पल-पल सदैव नमन।

युग दृष्टा, अपराजेय साधक आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज भारतीय संस्कृति संवाहक

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज न केवल श्रमण संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र थे बल्कि पूरी भारतीय संस्कृति को उन्होंने अपनी साधना के बल गौरवान्वित किया। अध्यात्म सरोवर के राजहंस सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के महानंद, साधना के सुमेरु, संत शिरोमणि महाकवि आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज दिगम्बर जैन परंपरा के ऐसे महान संत थे, जो सही मायने में साधना, ज्ञान, ध्यान व तपस्यारत होकर आत्मकल्याण के मार्ग पर सतत अग्रसर रहे। वे पंचमकाल में चतुर्थकाल सम संत थे। महाप्रज्ञ आचार्य श्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुख मुद्रा प्रायः सभी का मनमोह लेती थी। आचार्य श्री के कंठ में भी अपने गुरु के समान ही सरस्वती का अनुपम निवास था। आचार्य श्री की पावन वाणी सत्यं शिवं सुन्दरं की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्ति द्वार खोलने में सर्वथा सक्षम थी। उन्होंने अपनी अनवरत साधना से जीवन की कलात्मकता को भारतीय संस्कृति के अनुरूप अभिव्यक्त किया। परंपरागत धार्मिक व सांस्कृतिक धारणाओं में व्याप्त कुरीतियों एवं विघटन को समझकर वे उन्हें हटा देने को व्याकुल रहे। इसीलिये धर्म की वैज्ञानिक, सहज, सरल व्याख्या आचार्य श्री ने उपलब्ध कराई।

कलयुग में भी यह सतयुग, गुरुवर के नाम से जाना जायेगा।
कभी महावीर की श्रेणी में, गुरुवर का नंबर आयेगा।।

विलक्षण आध्यात्मिक यात्रा के पथिक आचार्य श्री विद्यासागर- श्रमण संस्कृति की गौरवशाली परंपरा में परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी मुनिराज अपनी आगमोक्त चर्या और आध्यात्मिक चिंतन के द्वारा निरंतर आत्मसाधना व प्रभावना में संलग्न रहे। आप श्रमण परंपरा के विलक्षण और तपस्वी संत थे। आपने समाज और संस्कृति को भी एक नई दिशा दिखाई थी।

आचार्य श्री का जन्मः आचार्य विद्यासागर जी का जनम 1946 में शरद पूर्णिमा को कर्नाटक के बेलगांव जिले में सदलगा ग्राम में हुआ था। उनके पिता मल्लप्पा व मां श्रीमंती ने उनका नाम विद्याधर रखा था। कन्नड़ भाषा में हाईस्कूल तक अध्ययन करने के बाद विद्याधर ने 1967 में आचार्य देशभूषण जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया।

ऐसे बने विद्याधर से विद्यासागरः कठिन साधना का मार्ग पार करते हुये आचार्य श्री ने महज 22 वर्ष की उम्र में 30 जून 1968 को अजमेर में आचार्य ज्ञानसागर महाराजर से मुनि दीक्षा ली। गुरुवर ने उन्हें विद्याधर से मुनि विद्यासागर बनाया। 22 नवंबर 1972 को अजमेर में ही आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने आचार्य की उपाधि देकर उन्हे मुनि विद्यासागर से आचार्य विद्यासागर बना दिया। दौर शुरु हुआ तो आचार्य श्री ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

डोंगरगढ़ में हुई समाधि- दिगम्बर जैन परम्परा के सर्वमान्य संत शिरोमणि आचार्य भगवन् विद्यासागर महाराज ने 77 वर्ष की आयु में छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ में श्री दिगंबर जैन तीर्थ चंद्रगिरि में 17 और 18 फरवरी की मध्यरात्रि में 2.30 पर समाधि पूर्वक नश्वरदेह को त्याग दिया है। उनकी साधना अद्वितीय थी।

पीएम मोदी ने बताया अपूरणीय क्षति, हुये भावुक: आचार्य विद्यासागर महाराज के ब्रह्मलीन होने की खबर मिलते ही पी.एम नरेन्द्र मोदी ने दुख व्यक्त करते हुये इसे अपूरणीय क्षति बताया है। पीएम ने लिखा कि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज जी का ब्रह्मलीन होना देश के लिये एक अपूरणीय क्षति है। लोगों में आध्यात्मिक जागृति के लिये उनके बहूमूल्य प्रयास सदैव स्मरण किये जायेंगे। वे जीवनपर्यत गरीबी उन्मूलन के साथ-साथ समाज में स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ावा देने में जुटे रहे। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे निरंतर उनका आशीर्वाद मिलता रहा।

माननीय प्रधानमंत्री ने एक आलेख भी आचार्य श्री पर लिखा है 21 फरवरी 2024 के प्रमुख सभी दैनिक समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित हुआ है।

जन-जन की आस्था का केन्द्र- आचार्य श्री मात्र जैनों के ही नहीं जन-जन की आस्था के केन्द्र थे। इनकी प्रेरणा से हजारों गौवंश की रक्षार्थ दयोदय गौशालायें संचालित हो रही हैं, हिंदी भाषा अभियान, इंडिया हटाओ भारत लाओ अभियान, हथकरघा स्वालंबन रोजगार, स्वदेशी शिक्षा, संस्कृत हिंदी, अंग्रेजी का बेजोड़ साहित्य, हाइकू आदि उनकी श्रेष्ठतम साधना उन्हें संत शिरोमणि कहलाने के लिये काफी है। उल्लेखनीय है कि वर्तमान युग के महावीर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 50वां मुनि दीक्षा दिवस सम्पूर्ण देश सम्पूर्ण देश संयम स्वर्ण महामहोत्सव वर्ष के रूप में विविध आयोजनों के साथ मनाया गया था।

आचार्य श्री के विराट बेमिशाल और अद्भुत महनीय अर्चनीय व्यक्तित्व पर एक संक्षिप्त दृष्टि:

दिग्गज राजनेता आचार्य श्री के चरणों में: हमारे पूज्य आचार्य श्री ने अपनी त्याग तपस्या और साधना से पूरे विश्व को बताया कि आज भी सच्चे संतों की कमी नहीं है। आज संतों के सम्मान को बचाने में आचार्य श्री का नाममात्र ही काफी है। यही वजह है के देश की राजनीति के धुरंधर आचार्य श्री चरणों में आकर अपने आपको धन्य महसूस करते थे। उनका दर्शन पाकर वे अपने जीवन को सार्थक मानते थे। वर्ष 1999 में गोम्मटगिरि इंदौर में देश के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी जी बाजपेयी जब पूर्व लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन के साथ पहुंचे थे तो आचार्य श्री के दर्शन पाकर गदगद हो उठे थे। देश के पहले नागरिक राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद तो जब राज्यपाल थे तब भी दर्शनार्थ गये थे और राष्ट्रपति बनने के बाद भी। पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत भी आचार्य श्री के प्रति बहुत ही आस्था रखते थे। देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी 2016 में भोपाल चातुर्मास के समय आचार्य श्री के दर्शन को

पहुँचे। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान तो आचार्य श्री के विराट व्यक्तित्व से बहुत ही प्रभावित रहे यही वजह है कि जब-तब वह आचार्य श्री के चरणों में पहुंचते रहे। उन्होंने आचार्य श्री का प्रवचन भी विधानसभा में कराया जो उनकी आचार्य श्री के प्रति आस्था को दर्शाता है। इसके अलावा छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री रमनसिंह जी, भूपेश बघेल जी, गृहमंत्री अमित शाह जी, पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह जी, उमाभारती जी, अखिलेश यादव जी, कमलनाथ जी अनेक केन्द्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, राज्य मंत्री, सांसद, विधायक आचार्य श्री के चरणों में पहुंचकर आशीर्वाद और मार्गदर्शन लेते रहे। योगगुरु बाबा रामदेव जी, आरएसएस के श्री मोहनभागवत जी आदि अनेक हस्तियां आचार्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण कर चुके हैं।

नई शिक्षा नीति में आचार्य श्री का मार्गदर्शन : नई शिक्षा नीति 2020 का निर्धारण करने वाली समिति के अध्यक्ष डॉ. कस्तूरीरंगन ने आपके निकट जाकर शिक्षा नीति निर्धारण हेतु विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया था।

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओं अभियान को गति दी आचार्य श्री ने: इन दिनों भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं अभियान की खूब चर्चा है। आचार्य श्री का इस अभियान को सफल बनाने में जो अवदान है वह भुलाया नहीं जा सकता है। आचार्य श्री की प्रेरणा से बटियों की शिक्षा को शिखर पर ले जाने के उद्देश्य से **बालिकाओं की शिक्षा के लिये प्रतिभास्थली का निर्माण देश के विभिन्न स्थानों पर किया गया है और यह कार्य निरंतर जारी भी है।** बेटियां प्रतिभास्थली में पढ़कर के अपनी प्रतिभा को निखार रही हैं और संस्कारों से युक्त शिक्षा पा रही हैं। आचार्य श्री का सपना रहा है कि बेटियों की शिक्षा के लिये और लड़कों की शिक्षा के लिये अगल-अलग शिक्षा केन्द्र हों, **उसी उद्देश्य को लेकर आज छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़, महाराष्ट्र के रामटेक, मध्यप्रदेश के जबलपुर, इंदौर और ललितपुर में प्रतिभास्थली संचालित की गई हैं।** इन प्रतिभास्थलियों पर आचार्य श्री का सपना साकार होते देखा जा सकता है। यह समाज ही नहीं देश के लिये मील का पत्थर साबित होंगी।

गौशालाओं की स्थापना से जीवदया का संदेश हुआ मुखर: कृषि प्रधान अहिंसक देश में गौवंश आदि पशुधन को नष्ट कर मांस निर्यात किया जा रहा है, ऐसी स्थिति में आचार्य श्री ने हिंसा के ताण्डव के बीच अहिंसा का शंखनाद किया। **आचार्य श्री की पावन प्रेरणा से देशभर में शताधिक गौशालाएं चल रही हैं,** जिनमें उन बेजुबान पशुओं को आश्रय देकर उनकी रक्षा की जा रही है। आचार्य श्री हमेशा अपने प्रवचनों में कहते हैं कि गौधन की रक्षा हो तभी हमारा देश सुरक्षित रहेगा।

हथकरघा से स्वदेश प्रेम की भावना का उद्घोष: आचार्य श्री हमेशा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की प्रेरणा देते रहे। हथकरघा उनकी इस भावना को साकार रूप कर रहा है। आज अनेक स्थानों पर हथकरघा उद्योग स्थापित हो चुका है। इसमें अनेक त्यागीव्रती भी अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं देने में संलग्न हैं। हथकरघा से जहां स्वदेश प्रेम की भावना को बल मिल रहा है वहीं सैकड़ों लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। जेलों में कैदी भी इस कार्य को बड़ी ही

रूचि पूर्वक कर रहे हैं। गरीबों की आजीविका हथकरघा केन्द्र बन रहे हैं। यह महत्वपूर्ण कार्य बड़ी ही तेजी से आगे बढ़ रहा हैं।

तीर्थों के उद्धारक: आचार्य श्री की प्रेरणा से अनेक तीर्थ क्षेत्रों का निर्माण हुआ है। अनेक क्षेत्रों का कायाकल्प हुआ है। छत्तीसगढ़ के अमरकंटक में सर्वोदय तीर्थक्षेत्र, चंद्रगिरि, डोंगरगढ, भाग्योदय सागर, दयोदय तीर्थ जबलपुर, सिद्धोदय तीर्थ नेमावर आदि तीर्थस्थल हैं इनके अतिरिक्त तीर्थक्षेत्रों पर आचार्य श्री के आशीर्वाद से जीर्णोद्धार के कार्य होने से उन क्षेत्रों का कायाकल्प होते हुये देखा जा सकता है। कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र का कायाकल्प आचार्य श्री की ही देन हैं।

महापुरुष के विशाल कृतित्व से भारतीय साहित्य हुआ समृद्ध: आज तक के इतिहास में किसी भी संस्कृत के विद्वान ने पांच शतक से ज्यादा संस्कृत भाषा में नहीं लिखे हैं किंतु आचार्य श्री ने अपनी लेखनी से संस्कृत भाषा में छह शतक लिख एक नूतन इतिहास की संरचना की है। आपने ज्ञान, ध्यान, तप के यज्ञ में अपने आपको ऐसा आहूत किया कि अल्पकाल में ही प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड भाषा के मर्मज्ञ साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हो गये। आपने प्राचीन जैनाचार्यों के 25 प्राकृत-संस्कृत ग्रंथों का हिंदी भाषा में पद्यानुवाद कर पाठकों को समरसता प्रदान की है। आपके द्वारा रचित हिन्दी भाषा में लघु कविताओं के चार संग्रह ग्रंथ नर्मदा कंकर, तोता क्यों रोता, डूबो मत लगाओं डुबकी, चेतना के गहराव में, ये कृतियां साहित्य जगत् में काव्य सुषमा को विस्तारित कर रही हैं।

कालजयी कृति मूकमाटी: आचार्य श्री की रचना मूकमाटी उत्कृष्ट काव्य कृति है। यह महाकाव्य है, विद्वानों को मानना है कि भवानी प्रसाद मिश्र की सपाट बयानी, अज्ञेय का शब्द विन्यास, निराला की छान्दसिक छटा, पंत का प्रकृति व्यवहार, महादेवी की मसृण गीतात्कता, नागार्जुन का लोक स्पन्दन, केदारनाथ अग्रवाल की बतकही वृत्ति, मुक्तिबोध की फैंटेसी संरचना और धूमिल की तुक संगति आधुनिक काव्य में एक साथ देखनी हो तो वह मूकमाटी में देखी जा सकती है। इस महाकाव्य पर अनेकों स्वतंत्र आलोचनात्मक ग्रंथों के अतिरिक्त 4 डी लिट, 30 से अधिक पीएचडी, 7 एम, फिल के शोध प्रबंध तथा 2 एमएड और 6 एमए के लघु शोध प्रबंध लिखे जा चुके हैं। मध्यप्रदेश के पाठ्यक्रम में इसके कुछ अंश को शामिल किया गया है। इस महाकाव्य पर निरंतर शोधकार्य और लेखन अनवरत रूप से जारी है। इस कृति ने भारतीय साहित्य भंडार को गौरव प्रदान करते हुये जो समृद्धता प्रदान की है वह अकल्पनीय है। आचार्य श्री के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पचास से अधिक पीएचडी हो चुकी हैं जो एक कीर्तमान है।

507 चेतनकृतियों के निर्माता: आचार्य श्री के दिव्य तेजोमय आभामंडल के प्रभाव से उच्च शिक्षित युवा, युवतियों जवानी की दहलीज पर आपके श्री चरणों में सर्वस्व समर्पित कर बैठे।

आचार्य श्री ने 131 मुनि, 172 आर्यिकायें, 60 ऐलक, 141 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका, कुल मिलाकर 507 दीक्षाएं प्रदान की हैं। आचार्य श्री इन चेतन कृतियों ने जो त्याग, तपस्या और साधना की छटा बिखेरी है। आचार्य श्री एक लाख किलोमीटर से ज्यादा पदयात्रा कर अनेक

राज्यों में धर्मप्रभावना का झण्डा बुलंद कर चुके हैं ।

हाइकू का आध्यात्मिक सौंदर्य : आचार्य श्री जापानी भाषा की कविता हाइकू पर रचनाएं बड़ी ही रोचक और ग्रहणीय, प्रेरणादायी हैं। हाइकू जापानी छंद की कविता है। इसमें पहली पंक्ति में 5 अक्षर हैं, दूसरी पंक्ति में 7 अक्षर हैं, तीसरी पंक्ति में 5अक्षर हैं । महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने लगभग 500 से अधिक हाइकू लिखे हैं। आचार्य श्री की हाइकू अन्य रचनाकारों की हाइकू से बिल्कुल पृथक नजर आती हैं , जिसका बहुत बड़ा कारण हैं संयममय जीवन। उनकी अनुभूतियों से निष्पन्न जापानी छंद हाइकू की ये रचनायें उन्हें विश्व के विशाल पटल पर स्थापित करती हैं।

इण्डिया नहीं भारत बोलो: परम पूज्य आचार्य श्री कहना कि भारत को इंडिया नहीं कहना चाहिये भारत कहना चाहिये । इण्डिया का कोई मतलब नहीं है । यह अर्थहीन नाम है । जबकि भारत नाम एक परंपरा का है, यह एक संस्कृति का नाम है। भारतीय देश के लिये अंग्रेजी नाम का इस्तेमाल होना दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत शब्द में एक ताकत है। इस देश के हर व्यक्ति का दिल इस शक्ति से गूंजना चाहिये। आचार्य श्री का कहना है कि भारत का नाम पहले भी था, अभी भी है और आगे भी रहेगा। भारत को इंडिया कहने वाले इसकी संस्कृति से अनभिज्ञ हैं । हम सभी को अपने देश का नाम भारत के नाम से सम्बोधित करना चाहिये । इंडिया हटाओ, भारत बचाओ, आचार्य श्री के इस अभियान को लोगों ने हाथोहाथ लिया है और लाखों लोग भारत का प्रयोग करने लगे हैं।

पंचमकाल का आश्चर्य उनकी कठोर-चर्या : वर्तमान समय में आचार्य श्री का संघ सम्पूर्ण देश का सबसे बड़ा दिगम्बर जैन साधु संघ है, संघ में संघ के नाम का कोई वाहन आदि नजर नहीं आता । टीवी, मोबाईल, लैपटॉप, आदि आधुनिक सुविधा साधु के कमरे में नहीं दिखती। संघ में सभी संत, साधु शिक्षित, संस्कारी, बाल ब्रह्मचारी हैं। धर्म चर्चा में ही अपना समय लगाते हैं। विहार के समय भक्तगण बड़ी संख्या में मार्ग में चौका लगाकर आहारदान देते थे और पुण्य लाभ लेकर साथ-साथ हजारों का जनसैलाव चलता था । आचार्य श्री के संघ में सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि सभी क्रियाओं का समय निर्धारित था। सभी समय से सारी क्रियाएं संपादित करते थे। चाहे कितनी ही तेज गर्मी हो या कितनी ही कड़कड़ाती ठंड, संघ के किसी साधु के कमरे में कूलर, एसी हीटर देखने को नहीं मिलते। न पंखे का उपयोग करते, न ही मच्छर भगवाने वाले किसी ऑयल या कायल का उपयोग करते, धन्य है ऐसी साधना। किसी तरह के तंत्र, मंत्र, ताबीज आदि की क्रियाओं से आचार्य श्री का संघ अछूता है। पूरा संघ एक ही आचार्य के अनुशासन में चलता है। संघ में दीक्षा गहन स्वाध्याय, साधना, त्याग आदि के बाद दी जाती है ताकि श्रमणाचार का पालन निर्दोष कर सकें। आचार्य श्री स्वयं बाल ब्रह्मचारी हैं तथा उनका पूरा संघ भी बाल ब्रह्मचारी है एक को छोड़कर, जो इस पंचमकाल में किसी आश्चर्य से कम नहीं है। सही मायनों में अतिथि तो आचार्य श्री ही थे। किसी को पता नहीं होता कि आचार्य श्री का पग विहार किस ओर होगा। सभी बस अपना-अपना गणित लगाते थे।

आजीवन त्याग- चीनी, नमक, हरी सब्जी, फल, तेल, दही, सूखे मेवे, चटाई, अंग्रेजी औषधि का त्याग था। एक करवट से शयन। सभी प्रकार के भौतिक साधनों का त्याग।

जब तक सृष्टि के अधरों पर, करूणा का पैगाम रहेगा।

तब तक युग की हर धड़कन में, विद्यासागर का नाम रहेगा।

आचार्य श्री को पाकर लगता था कि न जाने कितने जन्मों का पुण्य आज फलित हो रहा है। आचार्य श्री चलते फिरते तीर्थ और विश्वविद्यालय थे। उनके तेज दमकते हुये आभामंडल और मुस्कान को देखकर हजारों लोगों के दुख दूर हो जाते थे। आचार्य श्री के दर्शन जो भी करता था वह धन्य हो जाता था। उनकी दिव्य देशना में जो अमृतवाणी झरती थी उसका पान कर हजारों लोगों की प्यास बुझती थी। आचार्य श्री की हर चर्या अतिशय सी दिखती थी।

उनकी मंगल वाणी खिरते समय जो शांति का अमृत बरसता था, चारों ओर एक अजीव सा सन्नाटा, मात्र आचार्य श्री वाणी अनुगूंज सुनायी देती थी। सचमुच अद्भुत और निरालें संत थे आचार्य श्री।

आचार्य श्री के सपने को साकार करने में हजारों लाखों युवा लगे हुये हैं, हम सब मिलकर अपने गुरुदेव के सपनों को साकार करने में अपनी भूमिका को ईमानदारी से निभायें, तभी हम सबका आचार्य श्री को विनयांजलि देना सार्थक होगा। किसी कवि की यह पंक्तियां आचार्य श्री विराटता को व्यक्त करती हैं-

कुन्द कुन्द के समयसार का सार हमें जो बता रहे थे,
समन्तभद्र का डंका घर-घर द्वार-द्वार बजा रहे थे।
भोले-भाले अनाथ जन के जो थे पावन धाम,
ऐसे विद्यासागर गुरुवर को हमारा शत-शत प्रणाम।।

व्यक्तित्व अत्यंत गंभीर: आचार्य श्री का व्यक्तित्व अत्यंत गंभीर था, रत्नत्रय के धारी मोक्षमार्ग के पथिकल हल थे। वे साधना के हिमालय थे। आचार्य श्री साधना की एक पाठशाला थे। वे सत्य की साधना के साथ प्रयोग करते रहे।

चिकित्सा के क्षेत्र में योगदान: आचार्य श्री ने भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति के रूप में आयुर्वेद के संरक्षण और उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग पर विशेष बल दिया। उनके आशीर्वाद से जबलपुर मध्यप्रदेश में पूर्णायु आयुर्वेद चिकित्सा और अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना हुई। इस केन्द्र में अहिंसक शुद्ध और सात्विक विधि से निर्मित औषधियों से बड़े से बड़े रोगों का समूल निदान किया जाता है। सागर में भाग्योदय की स्थापना आचार्य श्री के आशीर्वाद से ही हुई आज हजारों लोगों को यहाँ से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो रहा है।

भारतीय संस्कृति के उत्थान हेतु आचार्य श्री के प्रमुख संदेश: भारत में भारतीय शिक्षा पद्धति लागू हो। छात्र- छात्राओं की शिक्षा पृथक-पृथक हो। चिकित्सा व्यवसाय नहीं सेवा है। नौकरी नहीं व्यवसाय करो। बैंकों के भ्रमजाल से बचो और बचाओ। हथकरघा स्वावलंबी बनने का सोपान। गौशालाएं जीवित का कारखाना। अंग्रेजी नहीं भारतीय भाषा में हो व्यवहार।

विदेशी गुलामी का प्रतीक इंडिया नहीं, हमें गौरव का प्रतीक भारत नाम देश को चाहिये। चिकित्सा व्यवसाय नहीं सेवा है। स्वरोजगार को संवर्धित करो। मांस निर्यात देश पर कलंक। शत प्रतिशत मतदान हो। भारतीय प्रतिभाओं का निर्यात रोका जाये।

अनियत विहारी बिना बतायें देह से विदेह की यात्रा परः आचार्य विद्यासागर जी महाराज कभी किसी को बता के विहार नहीं करते थे इसलिये उनके आगे अनियत विहारी संत लिखा जाता था, समाधिमरण में उन्होंने इसी प्रक्रिया को अपनाया और बिना बताये ही देह से विदेह की यात्रा पर निकल गये।

बेमिशाल, अद्भुत विराट व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व के धनी आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज जैसे संत शताब्दियों में होते हैं। उनके जाने से जो शून्यता हुई है उसकी भरपायी संभव नहीं है। वे स्वयं अपने आप में एक दर्शन थे।

श्रमण संस्कृति का सूर्य! ऐसे युगदृष्टा शताब्यिों सहसाब्दियों में कभी कभार जन्म लेते हैं।

परम पूज्य जैन दिगम्बर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के विचार प्रकाश स्तंभ बनकर सदैव मार्गदर्शन करते रहेंगे। समाधी नमन !

साधना की जगमगाती देहरी से, एक दीपक फिर किनारा कर गया।
मंजिलों की दूरियां पूछें कहाँ से, मील का पत्थर किनारा कर गया।

कविता

विद्यासागर गुरुवर महान

विद्यासागर गुरुवर महान, नमन करूँ चरणा मां
म्हारी अँखियाँ माँ रहे थारो ध्यान, नमन करूँ चरणा मां
थारी शिक्षा जीवन मां उतारा करूँ
ज्ञान ज्योति से पाप अंधेरा हरूँ
हर पल रहें ऽ गुरु थारो ध्यान
नमन करूँ चरणा मां
म्हारी श्रद्धा विनंती ठुकराओ मति
थारे चरणानी संगति छुड़ाओं मति
दीजे म्हारो गुरु तत्त्व ज्ञान
नमन करूँ चरणा मां
म्हारा मिथ्यात्व तमस-मिटाई दीजो
म्हारा भवना भ्रमणा गुरु अब हरी लीजो
म्हारा दी जो समाधि कल्याण
नमन करूँ चरणा मां

कहानी

आशीर्वाद

लेखक: 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

गौरझामर के संत निवास में भक्तों की भीड़ लगी हुई थी। दर्शनार्थियों की कतार लम्बी थी। अपने नम्बर लगने की प्रतीक्षारत दर्शनार्थीयों कुछ सापेक्ष थे कुछ निरपेक्ष । कुछ गुरुका मात्र मुखमंडल देखकर खुशी मना रहे थे। कुछ दर्शनोपरान्त अपने गुरु की महिमा गाते नजर आ रहे थे वे आपस में चर्चा करते भैया मैंने तो पहली बार आचार्य विद्यासागर जी महाराज के दर्शन किये हैं मैं धन्य हो गया मेरे तो जनम-जमन के पाप कट गये होंगे।

राजेश- मैं तो भाई निराश हो गया कितनी देर कतार में लगे रहें समझ में नहीं आता यहाँ लोग ऐसे लगे जैसे राशन की दुकान लगी है। मेरे वश की बात नहीं है कि कतार में लग सकूँ क्योंकि ब्लड कैंसर का पेशेंट हूँ। मैं तो कोई जुगाड़ करता हूँ क्योंकि मेरी पत्नी का ननिहाल तो गौरझामर का ही है कोई न कोई मोनिका के पहचान का तो मिल ही जायेगा। लगाओं कोई जुगाड़ मोनिका तू खड़ी-खड़ी देख क्या रही है मोनिका- पहली बात तो यह है कि जबसे मेरी शादी हुई तब से मैं गौरझामर बहुत कम आयी हूँ क्योंकि कोई भी ऐसा अवसर नहीं आया जिससे मुझे गौरझामर आना पड़ा हो और शादी के पहले जब मैं मामा के घर आती थी तो सिर्फ अपने मामा के घर के भीतर ही कैद रहती थी क्योंकि मुझे मामा के परिवार से ही फुरसत नहीं मिलती थी और मेरी किसी से ज्यादा पहचान करने में उस समय कोई रूचि नहीं थी पर आज मेरे लिये यह आवश्यकता महसूस हो गई कि मैंने गौरझामर के किसी भी व्यक्ति से पहचान बनायी होती तो वह मेरा काम आज जरूर आई होती। मेरे दादाजी मेरे पापा से हमेशा एक ही बात कहा करते थे कि हमें सबसे व्यवहार बनना चाहिये न जाने हम पर आई हुई विपत्ति में किसका व्यवहार काम आ जाये पर मेरे पापा ने भी उनकी बात को गंभीरता से नहीं लिया और वे बढ़ते रहे अपने को कहाँ इतनी फुर्सत है कि हम किसी से व्यवहार बनायें।

राजेश- मोनिका तुम्हारे दादाजी में जो व्यावहारिकता योग्यता और ज्ञान था उनकी जो साधना थी उनके सामने तुम्हारे पापा जीरो हैं।

यह बात तुम्हें बुरी लग जायेगी क्योंकि कोई भी अपने पिता की बुराई नहीं सुनना चाहता पर एक बात बताओ मुझे ब्लड कैंसर हो गया सब कोई मुझे देखने आया यह तेरे पापा क्यों नहीं आये क्योंकि वह सोचतें रहे देखने से क्या होता है सब तो देख आये क्या मेरा जाना जरूरी है तभी से मोनिका मैंने अपनी ससुराल से लगाव कम कर दिया खैर छोड़ों इन बातों को इन बातों क्या रक्खा है अभी तो तू ऐसा कोई व्यक्ति देख ले जो आचार्य श्री के दर्शन करा दे क्योंकि मुझे मालूम हो नरसिंहपुर के तुलसीराम के लड़के नितेन्द्र को भी कैंसर फेफड़े में ही गया था उन्हें आचार्य श्री का हृदय से आशीवाद मिला और उनका कैंसर जड़मूल से समाप्त हो गया उनसे जब मेरी मुलाकात हुई तो उन्होंने यह बताया कि आचार्य श्री जबलपुर के तिलवारा घाट में थे। उन्होंने अपने उपचार समय में आचार्य श्री के दर्शन करने का मन बनाया था और वे एक दिन मेडिकल कॉलेज से सीधे तिलवारा घाट पहुँच गये वहाँ पर उनके लिये मुनि श्री प्रसाद सागर जी ने आचार्य श्री का सान्निध्य करा दिया। नितेन्द्र भैया जी ने अपनी आप बीती जब मुझे सुनाई तो मोनिका मेरा भी विश्वास जग गया है कि आचार्य श्री के आशीर्वाद से मेरा भी रोग समाप्त हो जायेगा हाँ यह बात एक अलग है कि नितेन्द्र भैया जी ने एलक जी का बहुत बड़ा संकल्प ग्रहण किया कि यदि मुझे इस बीमारी से मुक्ति मिल गई और मैं निरोग हो गया तो गुरु चरण सान्निध्य में मुनि दीक्षा लेकर जीवन समर्पित कर दूँगा। मुझे लगता है कि उनके इस संकल्प और विशुद्धि के परिणाम स्वरूप ही वे निरोगता को प्राप्त हो गये।

संत निवास के सामने लगे नीम के झाड़ के नीचे राजेश विश्रांति ले रहा था उसने सामने से देखा कि उसकी नजर आ रहे नितेन्द्र भैया जी पर पड़ गई और वह मोनिका से बोला जिन नितेन्द्र भेया की हम चर्चा कर रहे थे वे सामने से चले आ रहे हैं लगता है इनकी उम्र बहुत लम्बी है और एक दिन ये मुनि जरूर बनेंगे। राजेश ने एक आवाजा दे डाली कहा- भैया जी। भैयाजी ने राजेश की आवाज को सुन लिया और राजेश के पास आ गये।

राजेश ने पूछा भैया जी आपकी तबियत कैसी है। नितेन्द्र भैया जी ने कहा- मैं घर से ही श्रीफल लेकर आया हूँ और आज मुझे अपने संकल्प पथ पर चलना प्रारंभ करना है राजेश भैया आप क्या अकेले ही आये हैं राजेश ने कहा आपकी ये भाभी भी साथ में आई हैं।

नितेन्द्र भैया जी ने कहा आपने तो आचार्य श्री के दर्शन कर लिये होंगे राजेश ने बड़ी लम्बी सांस लेकर कहा नहीं दर्शन की बहुत लम्बी लाईन लगी हैं मैं तो लाईन से बाहर आकर यही बैठ गया हूँ।

नितेन्द्र ने पूछा- राजेश भाई साहब आपके कोई पहचान के महाराज जी नहीं हैं क्या ? यदि कोई आपके पहचान के महाराज जी हों तो उनका नाम लेकर बोल दो कि हमें अमुक महाराज जी से मिलना है। उन महाराज जी तक आपकी खबर जायेगी और वे आपको ऊपर बुलवा लेंगे और वे अपनी आचार्य श्री से चर्चा भी करवा देंगे ओर आशीर्वाद भी दिलवा देंगे और आचार्य श्री के आशीर्वाद से आप पूर्ण स्वस्थ हो जायेंगे। ऐसा मुझे गुरु जी पर पूरा विश्वास है।

राजेश ने थोड़ा दिमाग लगाया और मोनिका से पूछा मोनिका क्या यह सच है कि

सिद्धांतसागर महाराज आचार्य श्री के संघ में विराजमान हैं। मोनिका बोली ऐसा मैंने सुना तो है पर पक्का नहीं है जब मोनिका और राजेश की चर्चा चल रही थी तभी धर्मेन्द्र बजाज मोनिका को दिख गया मोनिका ने आवाज लगाई धमेन्द्र भैया धर्मेन्द्र भैया । धर्मेन्द्र मोनिका के पास आ गया और बोला अरे मोनिका तुम अकेली आई हो नहीं भैया तुम्हारे जीजा जी भी साथ में आये है तो आचार्य श्री के दर्शन हो गये कि नहीं हुये मोनिका बोली कहाँ दर्शन हुये तेरे जीजा जी की खड़े होने की हिम्मत नहीं है और कतार लम्बी है कौन दर्शन करायेगा क्योंकि धर्मेन्द्र भैया तेरे जीजा जी का ब्लड कैंसर हो गया है हम ये चाह रहे हैं कि अगर आचार्य श्री का इनको आशीर्वाद इनको मिल जाये तो हो सकता है आशीर्वाद के चमत्कार से ये स्वस्थ हो जायें धर्मेन्द्र बोलो अरे दीदी हमारे पास चार उदाहरण ऐसे हैं कि आचार्य श्री के आशीर्वाद से चार लोगों की बीमारियाँ बिल्कुल ठीक हो गई। आप कुछ मत करो मैं ऐलक सिद्धांतसागर जी के पास आपको पहुँचा सकता हूँ मोनिका बोली वह तो मेरे चाचा हैं धर्मेन्द्र बोला मुझे सब मालूम हैं मुझे कुछ मत बताओ आज ही मेरे घर पर ऐलक जी के आहार हुये हैं धमेन्द्र सीधा मधुर भैया जी के पास गया। मधुर भैया को धर्मेन्द्र ने सारी कहानी कह सुनाई । मधुर ने कहा ले आओ सिद्धांतसागर जी के पास भिजवायें राजेश और मोनिका दोनो सीधे सिद्धांतसागर जी के कक्ष में पहुंच गये। सिद्धांतसागर जी के पास भी जिनेश मलैया बैठे हुये थे किसी कार्यवश मुनि श्री संभवसागर जी भी उसी कक्ष में पहुँच गये ऐलक जी ने मुनि संभव सागर जी ने कहा महाराज श्री मैं अपने किसी भी रिश्तेदार को आचार्य श्री के पास नहीं ले जाता हूँ। और ये सिंघई राजेश जैन बरमान के हैं और गृहस्थ अवस्था की भतीजी के पति हैं इनको ब्लड कैंसर हो चुका है आपको इनके लिये आचार्य श्री से आशीर्वाद दिलाने का कार्य सम्पन्न करना है ऐसा मेरा विनम्र अनुरोध है मुनि श्री संभवसागर जी के ऐलक जी के अनुरोध को तत्काल स्वीकार कर लिया और मैं राजेश सिंघई को लेकर आचार्य श्री के कक्ष में पहुँच गया। मुनि श्री संभवसागर जी ने आचार्य श्री के समक्ष राजेश सिंघई बरमान की स्वास्थ परिस्थिति को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया आचार्य श्री ने आशीर्वाद तो दिया ही साथ ही मार्गदर्शन दिया रात्रि में चारों प्रकार के आहार का त्याग कर दो राजेश ने तुरंत आचार्य श्री की प्रेरणा को स्वीकार कर लिया और नौ बार णमोकार मंत्र पढकर के रात्रि में चारों के प्रकार के आहार का संहर्ष त्याग कर दिया। राजेश को आचार्य श्री का करूणामय अशीर्वाद प्राप्त हो गया। राजेश के मन में भी अनन्तश्रद्धा जागृत हो गई कि अब में शीघ्र स्वस्थ हो जाऊँगा आत्म विश्वास और योग्य उपचार के प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार होना प्रारंभ हो गया देखते ही देखते एक ऐसी परिस्थिति पैदा हुई कि राजेश नागपुर के अपने इलाज के बाद और जांच रिपोर्टों को प्राप्त करने के उपरांत 15 जुन को ऐलक सिद्धांतसागर जी के पास बाहीतार्थ पर पहुँचे ऐलक सिद्धांत सागर जी उस समय सामायिक रत थे उनकी सामायिक निवृत होने के बाद राजेश सविनय उनके चरणों में बैठा और कहने

लगा महाराज जी मेरी रिपोर्ट नेगेटिव आ चुकी है मेरे लिये बहुत खुशी का विषय रहा कि आचार्य श्री का आशीर्वाद पूर्ण रूपेण फल गया और मैं बहुत बड़ी बीमारी से बाहर निकल गया। ऐलक जी ने कहा- आपको ज्ञात नहीं है मैं भी मृगी जैसी बीमारी से कभी त्रस्त था और आचार्य श्री के आशीर्वाद और उनके द्वारा बताये गये योग और प्राणायाम के द्वारा आज तक मुझे उस बीमारी का पुनः आवर्तन नहीं हुआ है सन् 1978 से लेकर आज 2015 तक मैंने उस बीमारी को पलटते नहीं देखा है हम यह कह सकते हैं कि आचार्य श्री के आशीर्वाद में बहुत चमत्कार है उस चमत्कार का एक प्रमाण तो तुम ही हो कि जो तुम्हें कैंसर जैसी बीमारी से मुक्ति मिली। दूसरा प्रमाण ढूढ़ने जब जायेंगे हम तब उनके आशीर्वाद से सैकड़ों लोग बड़ी-बड़ी बीमारियों से छुटकारा पाते हुये नजर आ रहे हैं। तभी राजेश बोला महाराज जी हम आपको एक बात नहीं बता पायें कि नरसिंपुर के तारणपंथी तुलसीराम जी के पुत्र नितेन्द्र जी भी फेफड़े के कैंसर से छुटाकारा पाने में सफल हो गये हैं और उन्हें भी इस रोग से मुक्ति तभी मिली जब वे आचार्य श्री आशीर्वाद को प्राप्त करने में सफल हुये सचमुच में आचार्य श्री विद्यासागर जी ऋद्धियों से सम्पन्न हैं और उनके तपोमय आशीर्वाद से सम्पूर्ण विपत्तियाँ समाप्त होती हैं आपके सहयोग से मुझे अमूल्य मिला आशीर्वाद। ■

कहाँ जाना है, कहाँ जा रहे हो

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

डोंरगगढ़- संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ससंघ चन्द्रगिरि डोंगरगढ़ में विराजमान थे। प्रवचन में आचार्य श्री ने कहा कि प्रातः मंद-मंद हवा चल रही थी और भँवरा उसी के बहाव में जा रहा था कि कहीं उसको फूल मिल जाये तो उसकी खुराक पूरी हो जाये। वह बहुत दूर तक चला जाता है परन्तु उसे कहीं भी फूल दिखाई नहीं देता तब वह सोचता है कि यहाँ से यदि मैं लौटता हूँ तो मेरा यहाँ तक आना व्यर्थ हो जायेगा और यदि आगे जाता हूँ और फूल नहीं मिला तो आगे जाना व्यर्थ हो जायेगा। वह इसी उलझन में फँस गया कि आगे जाऊँ या पीछे? इसी प्रकार कुछ लोग बिना लक्ष्य के ही इधर-उधर घुम घूमकर अपना समय बर्बाद कर रहे हैं और जिन्दगी भर इसी उलझन में फंसे रहते हैं कि किस मार्ग में जाना है और किस मार्ग में नहीं जाना है। हमारे आचार्यों ने हम पर उपकार करके शास्त्रों के माध्यम से बताया कि सदमार्ग में चलकर हम अपना उद्धार किस प्रकार से कर सकते हैं और बिना किसी उलझन में फँसे हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं। कुछ माता पिता अपने बच्चे को पढ़ा लिखाकर उसके गले में शादी की माला बांध देते हैं ओर वह दोनों दंपत्ति जीवन पर्यन्त उसी में उलझे रहते हैं। चाहे कितनी भी प्रतिकूलता हो कैसी भी विपत्ति आ जाये सब मिलकर सहन कर लेते हैं। कुछ लोगों के कहने में आता है कि महाराज हम तो 40 वर्षों से झेल रहें हैं। एक बार एक वृद्ध दंपत्ति हमारे पास आये और कह रहे थे कि महाराज आपके आशीर्वाद से सब बढ़िया चल रहा हैं बेटा-बेटी सब बढ़िया हैं, सब कुशल-मंगल है बस हमारी बहु हमारी नहीं सुनती है। ऐसा बहुत से घरों में आज कल हो रहा है ऐसा सुनने में आता है। यह आप लोगों को सोचना चाहिये कि ऐसा क्यों हो रहा है। और इस उलझन से कैसे निकला जा सकता है। कहाँ जाना है, कहाँ जा रहे हो। बच्चे, नव जवान और वृद्ध सभी वर्ग का यही हाल है किसी को पता ही नहीं कि सही मार्ग क्या है। किस मार्ग में चलकर जीवन को सार्थक कर सकते हैं।

हमारे गौरव

अमर शहीद हरिश्चंद्र दगडोबा जैन

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हैदराबाद मुक्ति संग्राम का भी बड़ा महत्व है। हैदराबाद को निजामो से मुक्ति दिलाने के लिये भी देशभक्तों ने जान की बाजी लगा दी थी। इसी संग्राम के अमर शहीद है श्री हरिश्चंद्र दगडोबा जैन महाराष्ट्र प्रांत के परभणी जिले में मानवत कस्बे में हरीशचंद्र जी सपरिवार रहे थे। 1937 में हरिश्चंद्र जी के भाई को रझाकारों ने छल से मार दिया था। इतने पर भी हरिश्चंद्र हतोत्साहित नहीं हुये। वे समय-समय पर राज्याधिकारी से लोहा लेते रहे। हैदराबाद मुक्ति संग्राम के वक्त वे धर्माबाद (नांदेड) में बस गये थे। वहाँ उन्होंने स्वामी रामानंद तीर्थ जैसे प्रभावशाली नेताओं के नेतृत्व में काम किया।

स्वामी जी के प्रमुख साथी श्री गोविन्दराव पानसरे के सहकारी बनकर हरिश्चंद्र जी काम करते रहे। 1946 में निजाम सरकार ने गोविंदराव तथा हरीश्चंद्र जी को हिरासत में लिया। जैसे-तैसे वहां से छूटकर सभी जा रहे थे तभी 7-8 रझाकारों ने कुंडवा डी ग्राम के नजदीक उन्हें घेर लिया।

घटनास्थल पर ही गोविंदराव धराशाही हो गये हरीश्चंद्र जी भी मार से काफी घायल हो चुके थे। फलस्वरूप दो-तीन दिन बाद ही वो शहीद हो गये। हरीश्चंद्र जी के पुत्र मधुकरराव भी स्वतंत्रता सेनानी थे।

कविता

तार दे गुरु तार दे

तार दे गुरु तार दे मोह तार दे
भव सागर दुःख से भरा है, दे सहारा तार दे
तूफान है मिथ्यात्व का तृष्णा की उठती है लहर
छाई है मम आपदा अज्ञान का गहरा कहर
बस शरण खेवटिया जैसे दे शिक्षा गुरु तार दे
नर नरक तिर्यंच गति में देव भव में फिर चुका
हर जगह ठोकर ही खाई और धोखा खा चुका
विद्यासागर गुरु बचा लो अपने हाथों, तार दे
तत्त्व का उपदेश देकर साम्य का वरदान दे
रत्नत्रय की ज्योति दे दे धर्म की पहचान दे
अपने पर की समझ देकर एक पामर तार दे
शरण हो सच्ची गुरु तुम भूलूँ नहीं भव भव कभी
तेरे चरणों में समर्पित आज तन मन धन सभी
छोड़कर तुम को गुरु वह कौन है जो तार दे

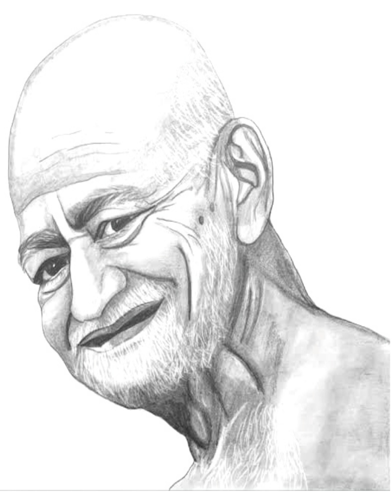

हास्य तरंग

1. योगाचार्य- विमला देवी से पूंछते तुम्हारे पति को शीर्षासन करने की सलाह दी थी, उन्हें कुछ लाभ हुआ ? विमला देवी उन्हें क्या लाभ हुआ यह तो नहीं मालम किन्तु मुझे अवश्य हुआ है । योगाचार्य कैसे - जब मेरे पति शीर्षासन करते हैं तो उनके जेब के रूपये गिर जाते हैं उन्हें में उठा लेती हूँ।

2. नेताजी चुनावी भाषण के दौरान कह रहे थे मैं ग्यारंटी के साथ कह सकता हूँ भिन्न भिन्न जातियाँ और भिन्न भिन्न भाषायें होते हुये भी भारत देश एक है । पत्रकार ने जानना चाहा कैसे ? नेता जी ने बताया जब से केरल मे भाषण दे रहा था तो वहाँ लोग हंस रहे थे, आसाम में लोग हंस रहे थे और बनारस में भाषण दे रहा था तो भी लोग हंस रहे थे।

3. सेठी जी अपने दामाद को मोबाईल पर जोर-जोर से डांट रहे थे, तभी उनके दोस्त बड़कुल जी ने पूछा क्या हो गया है जो इतना गुस्सा कर रहे हो ? सेठी जी मैं ने नर्सिंग होम से दामाद को मैसेज किया था तुम पिता बन गये हो बधाई, इसने इस मेसेज को कई दोस्तों को फारवर्ड कर दिया।

4. एक बच्चा आम के पेड़ पर चढ़ा आम तोड़ रहा था। माली ने उसे देखकर कहा अभी तेरे घर जाकर पिताजी से शिकायत करता हूँ । बच्चे ने उसे चिढ़ाते हुये कहा काका- वह घर पर नहीं मिलेंगे, यह बाजू के पेड़ पर आम तोड़ रहे हैं।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

केला बड़ा

सामग्रीः 4 कच्चे केले (उबाले हुये)

तड़के के लिये तेल 1 चमचा, जीरा 1 चमचा, उड़द की दाल 1 चमचा, हिंग 1/2 चमचा, हल्दी 1/2 चमचा, कड़ी पत्ता, नींबू 1, चिनी 1 चमचा, गरम मसाला 1/2 चमचा, पानी में भिगाया हुआ 1 कटोरी चने का आटा, हरी मिर्च का पेस्ट।

विधिः उबाले हुये केलो के छीलके निकालकर उसे मसल लें । फिर उस पर तड़का डालकर स्वादानुसार चिनी, गरम मसाला, नींबू, नमक, हरी मिर्च की पेस्ट डालकर उसे बराबर मिक्स कर लें। उस मिश्रण से एक जैसे गोले बनाएँ। कढ़ाई में तेल गरम करके उसमें, चने के घोल में एक एक गोला डुबाकर तल लें । हरी या मीठी इमली के साथ सर्व करें ।

बाल कहानी

लापरवाही

महाराष्ट्र के जिला बुलढाना के पास मेहकर तहसील के रहने वाले साधारण किसान गजानन अपनी मोटर साइकिल से यात्रा कर रहा था अपने साले के लड़के की शादी में जा रहा था उसके पीछे उसकी लाड़ली भक्ति भी बैठी थी। वह रोड के किनारे लगे वृक्ष की सुंदरता निहार रही थी वृक्ष में लगे फूल उसे बहुत सुहावने लग रहे थे। इसी बीच भक्ति ने लाल लाल टेसू के फूलों को देखा। भक्ति का मन हुआ इन लाल लाल फूल का एक गुलदस्ता बनाकर दूल्हे राजा के हाथों में देंगे तो वह कितने खुश हो जायेंगे सब लोग मुझे बहुत सराहेंगे।

यह सोच का भक्ति ने टेसू की डाली को पकड़ ही लिया परंतु वह यह भूल गई की उसकी यह हरकत उसके पास मौत को बुला सकती है इसी बीच गजानन भक्ति पर झल्लाया। ये लड़की तूं क्या कर कही है भक्ति ने कहा पापाजी कुछ नहीं मैं अच्छे अच्छे सुंदर से फूल तोड़ रही हूँ।

गजानन ने कहा तूं समझ यह तेरी नादानी तुझे और मुझे मौत के गर्त में ले जा सकती है भक्ति अपने पापा जी की बात सुनकर जोर से हँसी और बोली पापाजी आप भी क्या बात करते है कहीं फूल तोडने में भी मौत आती है और जब मेरे पापा बाइक चला रहे थे तो मजाल है कि उसमें कोई चूक हो जाये।

जब यह सब बात पिता पुत्री में चल रही थी कि तभी गजानन का संतुलन बिगडा और बाईक लहरा गई सामने से आ रहे ट्रक की चपेट में बाईक आ गई और गजानन सड़क दुघटना में स्वर्ग सिधार गये।

भक्ति को गंभीर हालात में उपचार हेतु औरंगाबाद ले जाया गया। भक्ति के इलाज में 15 लाख रूपये लगना थे हिवरा गाँव के दानवीरों ने 11 लाख जमा किये इलाज भी हुआ परंतु भक्ति भी चल बसी एक लापरवाही ने दो जानें ली।

संस्कार गीत

वस्त्र परिग्रह चिन्ह

सत्य दिगम्बर संस्कृति अपनी
मूल सनातन धर्म है।
नैसर्गिक निर्दोष सदा ही
नष्ट करे सब कर्म हैं।
प्रकृति रूप निर्दोष साधना
सदा वासना मुक्त है
नहीं परिग्रह साथ में कोई
दया क्षमा से युक्त है
जियो और जीने दो इसका
पक्ष अनूठा मर्म है
गंगा जैसा नित प्रवाह है
आगम का आधार है
महावीर की चर्या
सम यह जीवन का व्यवहार है।
पाप कर्म का मूल जलाने अग्नि जैसी गर्म है।
वस्त्रवाद अरु वस्त्रवाद तो
आरंभी बहु पाप है
नहीं वस्त्र मुक्ति होती शिवपथ में अभिशाप है
सर्व पाप अनुबंध रूप यह
वस्त्र परिग्रह चिह्न है।

बाल कविता

खेलो खेलो बच्चो

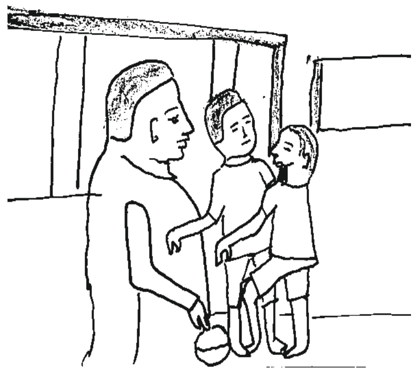

खेलो खेलो बच्चों मेरे
खेल मैदानी खेलो
मोबाईल से दूरी बनाओ
हिंसक खेल न खेलो
गोली चलाये जंग बढायें
भाव से पक्षी मारे
फंसे जाल में इन गेमों के
युवा वर्ग हम यों सारे
पबजी न खेलो
लूडो न खेलो
होर कब्बड़ी खेलो
हाँकी खेलो, खोखो खेलो
शेर बकरिया खेलो
मोबाईल के इन खेलों से
सेहत अपनी बिगड़े
चित्त क्रूरता से भर जाये
तन मन नाहक बिगड़े
बुद्धि काया जिन से बढ़ती
उन खेलों को खेलो

वर्ग पहेली 297

1	2	■	3	4	5	■	6	
7		■	8			■		■
■	■	9		■	■	10		11
12	13		■	14			■	
15			■		■	■	16	
■	■	■	17		18	■		■
19	20	■		■	21	22	■	23
■	24	25		26	■	27	28	
29			■	30				■

बाये से दाये

1. लद्दाख की राजधानी -2
3. भ. महावीर के गणधर इंद्र भूमि का वंश -3
7. खली, नीच पुरुष -2
8. पथ, मार्ग मग -3
9. वेदनीय कर्म का एक भेद, सुख -2
10. सीधा, ऋजु -3
12. सौभाग्य, पुण्य -3
14. कार्य, काम -3
15. लचीला पदार्थ -3
16. साता -2
17. पति प्रिय पुरुष -3
19. लक्ष, सौ हजार -2
21. सुगंधित घास -2
24. उत्तरप्रदेश की राजधानी -4
27. अनाज धान्य -3
29. मेमना -3
30. नरश्रेष्ठ, नृपति राजा -4

ऊपर से नीचे

1. निबंध, आर्टिकल फीचर -2
2. समाधान, कृषि यंत्र -2
3. बछडे की मा, वह पशु जो हिन्दू की माँ -3
4. नम, गीला -2
5. पथ राह रास्ता -2
6. एक चक्रवर्ती जिसके साठ हजार पुत्र हो -3
10. समान, बराबर -2
11. भारत का केन्द्रशासित प्रदेश, चीन सीमा से रहा प्रदेश -3
12. अप्सरा, देवी, सुरसुन्दरी -4
13. जन्म, जनम, संसार -2
14. स्थिर, अचर -3
17. भवन मकान सभागृह -3
18. नाखून -2
20. आसमान, आकाश -3
22. मंदिरा, दारू -3
23. चित्त अतंःकरण -3
25. चोखा शुद्ध -2, 26. गरम धागा -2
28. वाण, शिर -2

वर्ग पहेली 296 का हल

1 म	2 द	न	3 की	र्ति	■	4 स	म	5 ता
6 क	ल	■	म	■	7 रा	जा	■	गा
र	■	8 र	त	9 न	■	■	10 सः	■
11 ध्व	12 ज	■	■	स	13 र	ल	■	14 व
15 ज	हा	16 ज	■	■	ज	■	17 श्रु	त
■	18 न	ल	■	19 अ	■	20 य	त	न
21 आ	■	22 या	ता	या	23 त	■	पं	■
24 ग	25 ग	न	■	26 च	र	■	27 च	28 ता
29 म	त	■	30 स	क	ल	■	31 मी	ल

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....